भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नमस्कार महामन्त्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

वर्ष 59 अंक 8
अगस्त, 2002 श्रावण 2059

अलंकारों के सौंदर्य शिल्प!
देश के सुविख्यात स्वर्ण आभूषण प्रतिष्ठान
" रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स"
जलगाँव के यहाँ।
सोने - चांदी के यह सुंदर अलंकार शिल्प!
अलंकारों के सैंकडो विविधतम नये नमूने, एक से बढकर एक आकर्षक कलात्मक कारीगरी से सजे अनगिनत डिजाईन्स।
कुंदन-जडाव, मीनाकाम, ऑक्साईड पॉलीश, छिलाई व कास्टींग काम की उच्चतम श्रेणी।
हीरों के आभूषणों की नई विशाल मालिका।
चांदी में बने नये मनमोहक वैभवशाली बर्तन हाजिर स्टॉक में उपलब्ध हैं।
गहनों की 'वापसी विश्वसनीयता' स्पष्ट रूपसे बिल पर और अलंकारों पर भी।
व्यापारियों के लिए सोने गहने एवं चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सेवा शुरू है।
रतनलाल सी.बाफना,ज्वेलर्स
पारस महल
चांदी बर्तन शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'
सुभाष चौक जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३,
२२२६२९, २२२६३०
नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)
चेतावनी : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नहीं!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  प्रकाशचन्द डागा
  मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997

- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

- **सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

- **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
  3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981

- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
  डाक पंजीयन सं. RJ2803/02

- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

आहच्च चंडालियं कट्टु,
निण्हविज्ज कयाइ वि।
कडं कडेत्ति भासेज्जा,
अकडं नो कडेत्ति य ॥
—उत्तराध्ययन सूत्र 1.11

कर चण्डालोचितकर्म भिक्षु,
सहसा न छिपाये उसे कभी ।
यदि बुरा किया तो कहे बुरा,
और नहीं किया तो कहे नहीं॥11॥

अगस्त 2002
वीर निर्वाण सं. 2528
श्रावण, 2059

वर्ष : 59 **अंक** : 8

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट: यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

अवलम्बन एक वीतरागवाणी का	: मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	7
महापर्व सम्वत्सरी का माहात्म्य	: शा.प्र. महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.	15
क्षमा	: श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा	23
प्रतिक्रमण : संकल्पना, परिपाटी एवं व्यवहार	: श्री रणजीतसिंह कूमट	27
क्या हमारी धर्म-साधना नियमित है?	: श्री चाँदमल बाबेल	42
जीवन को व्रतधारी बनाएँ	: श्री सोभागमल जैन	44
महामन्त्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य (9)	: श्री जशकरण डागा	49

विचार/आगम परिचय/पत्र

अमृत वचन	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	6
जीवन में बदलाव	: श्री आनन्दराज घीसुलाल तलेसरा	34
पर्युषण	: श्री पी.एम. चोरड़िया	35
स्वाध्याय से स्वानुभूति प्रकाश	: श्री लक्ष्मीचन्द जैन	41
भिक्षा विषयक प्रश्नोत्तर	: श्री उपेन्द्रमुनि शास्त्री	46
अनमोल वचन	: श्री त्रिलोकचन्द जैन	50
उत्तराध्ययनसूत्रः छत्तीसवाँ अध्ययन(3)	: प्रो. चाँदमल कर्णावट	51

कथा/कविता/प्रसंग

भक्ति का फल	: सौ. कमला सिंघवी	14
वे और हम	: श्री दिलीप धींग	26
अधिक बोझ लादना : एक अतिचार	: श्री लालचन्द्र जैन	39
रत्नत्रय	: श्री प्रकाशचन्द्र जैन 'दास'	40
ये अनमोल घड़ियाँ	: प्रो. चाँदमल कर्णावट	45
मैं नहीं मेरा नहीं	: श्री जवाहरलाल बाघमार	75

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
जैनागम-विशेषांक पर अभिमत	: संकलित	52
साहित्य-समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	53
समाचार-संकलन	: संकलित	55
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	68
बधाई	: संकलित	68
श्रद्धांजलि	: संकलित	69
साभार-प्राप्ति-स्वीकार	: संकलित	73

सम्पादकीय

जैन धर्म और विश्वकल्याण

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन धर्म के संबंध में यह कहा जाता है कि यह आत्म-कल्याण का प्रतिपादक धर्म है। दूसरी बात इसके विषय में यह कही जाती है कि यह निवृत्तिमूलक धर्म है, इसमें प्रवृत्ति को महत्त्व नहीं है। इन दोनों तथ्यों पर जैन धर्मावलम्बियों ने इतना बल दिया कि यह धर्म एक संकुचित दायरे में सिमट कर रह गया। विश्वस्तर पर मानव जाति एवं प्राणिजगत् के कल्याण में इस धर्म का जो योगदान संभव था, वह उजागर नहीं हो सका। इसके पीछे एक कारण यह मान्यता भी रही कि दूसरों को सुधारने के पहले अपने आपको सुधार लो, आत्म-कल्याण ही सच्चा कल्याण है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जैन धर्म के आगमों में आत्म-कल्याण के सूत्र यत्र–तत्र उपलब्ध हैं। अपने आपको निर्मल बनाने की प्रेरणा पदे–पदे मिलती है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि आत्म–जेता ही परम विजेता है। सहस्रों सहस्र युद्धों में विजय प्राप्त करने वाले की अपेक्षा अपने को जीत लेने वाला श्रेष्ठ है। सारी साधना अपने राग–द्वेष एवं क्रोधादि कषायों पर विजय प्राप्त करने पर केन्द्रित है। सामायिक, प्रतिक्रमण, ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र– सबसे आत्मकल्याण या मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। किन्तु भगवान महावीर एवं तीर्थंकरों की वाणी में प्राणिमात्र के कल्याण की भावना भी सर्वत्र झलकती है। प्राणिमात्र के प्रति कल्याण की भावना के कारण ही नमोत्थुणं में तीर्थंकर के लिए लोकनाथ(लोगनाहाणं), लोकहितकर्त्ता (लोगहियाणं), लोकप्रदीप (लोगपईवाणं), लोकप्रद्योतक (लोगपज्जोयगराणं), अभयदाता(अभयदयाणं), ज्ञानचक्षुदाता(चक्खुदयाणं), मार्गदर्शक(मग्गदयाणं), शरणदाता(सरणदयाणं), बोधिदाता (बोहिदयाणं) आदि विशेषण दिए गए हैं। इन विशेषणों से उनकी विश्वकल्याणकारिता सिद्ध होती है।

तीर्थंकर महावीर विश्वकल्याण की भावना से ओतप्रोत थे। उनके द्वारा निरूपित अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह व्रत न केवल आत्म-कल्याण में सहायक हैं, अपितु इनसे विश्वकल्याण भी संभावित है। आवश्यक है इन व्रतों के व्यापक महत्त्व को समझने एवं प्रतिपादित करने की।

उदाहरण के लिए अहिंसा को ही लें। भगवान महावीर ने हिंसा को अहित एवं अबोधि का कारण बताया और उसे कर्म–बन्धन का कारण बताया तो दूसरी ओर सभी प्राणियों के प्रति आत्मतुल्य भाव (आयतुले पयासु) उत्पन्न कर उनके प्रति संवेदनशीलता विकसित करने एवं उनके जीवन का महत्त्व समझने की भी प्रेरणा की है। आचारांग सूत्र में कहा है– **'सव्वे पाणा पियाउया सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवधा पियजीविणो, सव्वेसिं जीवितं पियं।'** इस एक वाक्य में प्राणिमात्र की प्रकृति का बोध होता है कि सभी जीवों को आयु प्रिय है, सबको सुख अनुकूल एवं दुःख प्रतिकूल लगता है, सभी जीवों को वध अप्रिय एवं जीवन प्रिय है। जीवों की इस प्रकृति के बोध से मनुष्य की संवेदनशीलता गहरी हो सकती है, सभी जीव मानव के सदृश जीने की अभिलाषा वाले हैं, अतः उनको भी हमारी भांति जीने का अधिकार है और

सुखपूर्वक जीने का अधिकार है। विश्वस्तर पर इस तथ्य को प्रचारित किया जाए तो अज्ञानवश जो बृहत्स्तर पर हिंसा की जा रही है, उसे रोका जा सकता है तथा न केवल मानवजाति की रक्षा, अपितु समस्त प्राणियों की रक्षा के भाव को लोगों के दिलों में संस्थापित किया जा सकता है।

जैन धर्मावलम्बियों ने अहिंसा को कर्म–बन्धन का कारण बताने पर जितना बल दिया है, उसका सहस्रांश भी बल अहिंसा को प्राणिमात्र के कल्याण का मन्त्र बताने पर नहीं दिया। इस मन्त्र को आज विश्वस्तर पर प्रचारित करने की आवश्यकता है कि अहिंसा से जहां मैत्री, प्रेम एवं निर्भयता का वातावरण बनता है, वहाँ हिंसा से भय, शत्रुता, आतंक एवं प्रलय को निमन्त्रण मिलता है। अहिंसा आत्म-कल्याण में सहायक है, इसमें कहीं कोई शंका नहीं, किन्तु यह विश्वमैत्री एवं प्राणिजगत् के सहअस्तित्व के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है, इसे भी समझने की आवश्यकता है। आज पर्यावरण–प्रदूषण का बहुत बड़ा संकट है, इस संकट पर भी विजय प्राप्त करने में अहिंसा कारगर सिद्ध हो सकती हैं। जल, वायु एवं पृथ्वी में जीवन है, जैन धर्म का यह सिद्धान्त समझ लिया जाए तो इनके प्रदूषण एवं दुरुपयोग से एक हद तक बचा जा सकता है। कई बार हिंसा निष्प्रयोजन भी की जाती है– इसे अनर्थदण्ड कहा जाता है। इस अनर्थदण्ड से भी बचने का यदि मानव संकल्प ग्रहण कर ले तो विश्व की अनेक समस्याएँ टाली जा सकती हैं। विकसित मनुष्य हिंसा का नहीं, अहिंसा का ही समर्थन कर सकता है। कहा भी है– 'एवं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचण।' ज्ञानी होने का सार यही है कि वह किसी की भी हिंसा नहीं करता। यहां हिंसा का तात्पर्य मात्र दूसरे प्राणियों का वध करना नहीं है, अपितु उन्हें परिताप देना, अशान्त बनाना, गुलाम बनाना, शोषण करना आदि भी हिंसा है। आज मानवजाति के वास्तविक विकास एवं विश्व के सम्पूर्ण कल्याण के लिए हिंसा के इन रूपों को भी छोड़ने की आवश्यकता है। अहिंसा भयभीतों को अभय एवं शरण प्रदान करती है, इसलिए यह भगवती है। प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा है– **अहिंसा, तस-थावर सव्वभूयखेमंकरी**–अहिंसा त्रस (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय) एवं स्थावर (पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक एवं वनस्पतिकायिक) सभी प्राणियों का क्षेम/ कल्याण करने वाली है। इस प्रकार अहिंसा जहां आत्म-कल्याण में सहायक है वहाँ विश्वकल्याण में भी उपादेय है।

सत्य, अचौर्य एवं ब्रह्मचर्य व्रत भी इसी प्रकार उभयविध कल्याणकारी हैं। सत्य जहाँ स्वयं को प्रामाणिक एवं विश्वसनीय बनाता है वहां सत्यवादी जगत् का भी हित ही करता है। असत्य जहाँ छलावे एवं धोखे का मार्ग है वहाँ सत्य विश्वास एवं मित्रता का मार्ग प्रशस्त करता है। झूठे का कोई टिकाऊ मित्र नहीं होता, किन्तु हितकारी सत्य का आचरण करने वाले को सम्पूर्ण लोक चाहता है। अचौर्यव्रत का पालन करने वाले को सम्पूर्ण लोक चाहता है। अचौर्यव्रत का पालन करने पर बल दिया जाए एवं उसे विश्वकल्याण के पथ के रूप में प्रस्तुत किया जाए तो संसार से भ्रष्टाचार का निवारण किया जा सकता है। ब्रह्मचर्य एक ऐसा व्रत है जो एड्स जैसे रोगों पर नियन्त्रण पाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। इससे दाम्पत्य जीवन भी विश्वसनीय बनता है, जिसका परिणाम है– पारिवारिक जीवन में शान्ति एवं सद्भाव का वातावरण। दूसरे शब्दों में व्यक्ति यदि अपनी इच्छाओं पर संयम करना प्रारम्भ कर

दे तो संसार की बहुत सी समस्याएँ स्वतः समाप्त हो सकती हैं।

विश्वकल्याण में अपरिग्रह व्रत की महत्त्वपूर्ण भूमिका संभव है। यह मनुष्य की इच्छाओं पर संयम रखने का पाठ सिखाता है तथा विश्व की वस्तुओं के प्रति ममता एवं आसक्ति को तोड़ने की शिक्षा देता है। आज अधिकतर समस्याएँ परिग्रह की भावना के कारण उत्पन्न एवं विकसित हुई हैं। अकेला अमेरिका विश्व की 70 प्रतिशत से अधिक सुविधाओं का उपभोग कर रहा है, तथापि वह संतुष्ट नहीं है। मनुष्य की ये बढ़ती हुई इच्छाएँ दूसरे मनुष्य के मूल्य को कम आंक कर वस्तु–संग्रह में ही सुख ढूंढती रहती हैं। भगवान महावीर ने कहा है कि इच्छाओं का अन्त होना कठिन है। वे आकाश के समान अनन्त हैं– 'इच्छा हु आगाससमा अणंतिया'। एक व्यक्ति को तीनों लोकों का साम्राज्य भी सौंप दिया जाए तो भी वह संतुष्ट होने वाला नहीं है। असीमित परिग्रह को रोकने के लिए साम्यवाद आया, किन्तु इच्छाओं पर नियन्त्रण का पाठ नहीं पढ़ाया गया, दूसरों की सुख–सुविधाओं को महत्त्व देने की शिक्षा नहीं दी गई। अतः साम्यवाद सफल नहीं हो पाया। अपरिग्रह का सूत्र मानव को संतुष्टि एवं विकास–दोनों का मार्ग प्रशस्त करता है। परिग्रह ही बन्धन का मूल कारण है।

आज उपभोक्तावादी संस्कृति में विज्ञापन आदि के माध्यम से नई नई इच्छाओं को जन्म दिया जाता है, फिर मनुष्य इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए व्याकुल हो उठता है। जब तक इच्छाओं पर संयम नहीं होगा, विश्व शान्ति एवं समृद्धि का आनन्द नहीं ले सकेगा। बढ़ती इच्छाओं के कारण प्राकृतिक सम्पदाओं का आवश्यकता से अधिक दोहन किया जा रहा है, जो भावी मानव पीढ़ी के लिए संकट उपस्थित कर सकता है।

भगवान महावीर ने भोगोपभोग की सामग्री पर आत्मनियन्त्रण रखने के साथ परिग्रह की भी मर्यादा रखने की बात कही। विश्व में आवश्यक सुविधाएँ हों, किन्तु उन पर अधिकार जताने,उन्हें अपने अधीन रखने की प्रवृत्ति पर यदि अंकुश लग जाए तो विश्व विकास एवं कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है।

अनेकान्तवाद का सिद्धान्त मूलतः वस्तु के विश्लेषण से संबद्ध है, किन्तु यह मानव में एक दृष्टि का विकास करता है। अनेकान्तवाद का संदेश है कि मनुष्य सम्यक् रीति से सोचना एवं जानना सीखे। आग्रहबुद्धि को त्यागे एवं विभिन्न दृष्टिकोणों से समस्याओं का समाधान निकाले। इस सिद्धान्त को अपनाकर दो देशों, दो समाजों एवं दो व्यक्तियों में तनाव दूर किया जा सकता है।

इस प्रकार जैन धर्म आत्मकल्याणकारी नहीं, अपितु विश्व– कल्याणकारी भी है। इसे मात्र निवृत्तिपरक मानना भी उचित नहीं है। इसमें असंयम से निवृत्ति एवं संयम में प्रवृत्ति का विधान है। मनुष्य अयोगी अवस्था में आए बिना प्रवृत्ति रहित नहीं हो सकता–इसलिए प्रवृत्ति तो करनी ही है, किन्तु वह प्रवृत्ति विवेकयुक्त हो, संयममय हो–यही ध्यान रखना है।

तात्पर्य यह है कि जैन धर्म के सिद्धान्तों को यदि विश्व समुदाय के समक्ष मानवजाति एवं विश्वकल्याण के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाए तो जिनशासन की तो प्रभावना होगी ही, साथ ही यह धर्म एक सीमित दायरे से निकलकर सबके लिए कल्याणकारी सिद्ध हो सकेगा।

अमृत - वचन

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

* जब तक मनुष्य इच्छाओं को सीमित नहीं कर लेता तब तक वह शान्ति नहीं पा सकता और जब तक चित्त में शान्ति नहीं, तब तक सुख की संभावना ही कैसे की जा सकती है?
* परिमाण कर लेने से तृष्णा कम हो जाती है और व्याकुलता मिट जाती है। जीवन में हल्कापन आ जाता है और एक प्रकार की तृप्ति का अनुभव होने लगता है।
* संतोष हृदय में नहीं जागा तो सारे विश्व की भूमि, सम्पत्ति और अन्य सुख सामग्री के मिल जाने पर भी मनुष्य शांन्ति प्राप्त कर नहीं सकता।
* पेट की भूख तो पाव दो पाव आटे से मिट जाती है, मगर मन की भूख तीन लोक के राज़्य से भी नहीं मिटती।
* एक अकिंचन निस्पृह योगी को जो अद्‌भुत आनन्द प्राप्त होता है वह कुबेर की सम्पदा पा लेने वाले धनाढ्य को नसीब नहीं हो सकता।
* अमर्यादित धन-संचय की वृत्ति के पीछे गृहस्थी की आवश्यकता नहीं, किन्तु लोलुपता और धनवान् कहलाने की अहंकार–वृत्ति ही प्रधान होती है।
* किसी महापण्डित का मस्तिष्क यदि समाज और देश की उन्नति में नहीं लगता तो उसका पाण्डित्य किस काम का?
* जो पूंजी पाकर स्वयं उसका सदुपयोग नहीं करता और दूसरों की सहायता नहीं करता प्रत्युत दुर्व्यसनों का पोषण करता है, वह इस लोक में निन्दित बनता है और अपरलोक को पापमय बना कर दुःखी होता है।
* जो पुण्य को बढ़ायेंगे वे कभी किसी से भय नहीं खाएंगे। वे इहलोक और परलोक में निर्भय रहेंगे। कुछ करने का फल ही आज हमें इस रूप में प्राप्त है।
* जीवन, धन और वैभव जाने वाली वस्तुएँ हैं, किन्तु इन जाने वाली वस्तुओं से कुछ लाभ उठा लिया जाय, अपने भविष्य को कल्याणमय बना लिया जाय, इसी में मनुष्य की बुद्धिमत्ता है, विवेकशीलता है।
* स्वेच्छापूर्वक अंगीकार किया हुआ व्रत का बन्धन साहस और शक्ति प्रदान करता है। प्रतिकूल परिस्थिति में इसके द्वारा अपनी मर्यादा से विचलित न होने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

अवलम्बन एक वीतरागवाणी का

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

जीवन उलझनों भरा है। वीतरागवाणी ही एक ऐसा आलम्बन है जो उलझनों का निवारण करने में समर्थ है। संसार में भटकाव दूर करने हेतु वीतरागवाणी अमोघ उपाय है। यह एक राजमार्ग है, जिसमें न कोई अटकाव है और न भटकाव। जो भी इसका आलम्बन लेता है वह सब समस्याओं का समाधान प्राप्त कर लेता है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी गौतममुनि जी म.सा. ने 9 जुलाई 2002 को वर्द्धमानभवन, पावटा जोधपुर में फरमाये अपने प्रवचन में वीतरागवाणी का अवलम्बन लेने की प्रेरणा की है। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतनजी मेहता ने किया है। **—सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने पावापुरी के पावन प्रांगण में अपनी अमूल्य—अमोघ देशना के माध्यम से आत्म-जागृति का पावन संदेश दिया। आज वर्तमान में हमें सबसे बड़ा सम्बल, सहारा और अवलम्बन है तो इस वीतराग वाणी का है। वीतराग वाणी से हमें समस्याओं का समाधान मिलता है। भीतर में सोई हुई शक्ति के जागरण की प्रेरणा मिलती है। वीतराग वाणी से हमें ज्ञान प्राप्त होता है। वीतराग वाणी से हमें भीतर में रहे अखूट सुख के स्रोत की जानकारी प्राप्त होती है। आप और हम भाग्यशाली हैं जिन्हें ज़िनवाणी सुनने—सुनाने को मिल रही है।

गुरु का समागम और वीतराग वाणी का श्रवण दुर्लभ है। आप मानकर चलें—कहलाने में युगलिक जीव भी मानव कहलाते हैं। उनका शरीर स्वस्थ होता है, उन्हें भी दीर्घ अवस्था प्राप्त है। वे उपशान्त कषायी होते है, उपशांत वेदनीय भी होते हैं, पर उनको गुरु का सान्निध्य नहीं मिलता। ज़िनवाणी जीवन की सार्थकता में सहयोग की भूमिका बनाती है, समाधि के भाव जगाती है और सत्य भी यही है कि जहाँ समाधि है वहीं सच्चा जीवन है। जहाँ असमाधि है वहां संघर्ष है, अशांति है। ऐसे स्थान पर जीवन जीया नहीं जाता, जीवन ढ़ोया जाता है।

हमें वीतराग वाणी के माध्यम से सुख का राजमार्ग मिला है। वीतराग वाणी कहती है सुख वासना में नहीं, उपासना में है। सुख साधनों में नहीं, साधना में है। इस सत्य का साक्षात्कार वीतराग वाणी के अवलम्बन से संभव है।

जिनवाणी हमारे अन्तर्मानस में शुद्ध जैनत्व का गौरव जगाती है। आज कहां है जैनत्व का स्वाभिमान? कहां है गौरव? एक समय था प्रातःकाल उठते ही देव—गुरु के दर्शन करते। स्वयं ही नहीं, बच्चों को लेकर जाते। घर

के मुखिया बच्चों को आगे बढ़ाते। बच्चों को धर्म से जोड़ने में वे तत्पर रहते। जैन धर्म के सिद्धान्तों से परिचय करवाते। बच्चों के संस्कार-निर्माण के लिए समय देते।

आज स्थिति बदलती जा रही है। लोगों की मानसिकता बदल रही है, धारणा में परिवर्तन आ रहा है। स्वाध्याय का स्थान पराध्याय ले रहा है। देरी से सोना और लेट उठना अधिकांश लोगों की चर्या में समाहित हो रहा है। उठने के साथ ही पराध्याय रूप अखबार चाहिये। कभी टाइम नहीं तो लेटरिन में अखबार पढ़ने का काम करने वाले भी हैं। पराध्याय के प्रति यह कैसी प्रवृत्ति है। दिनचर्या का प्रारंभ ही यदि उन समाचारों के साथ होगा जो हमारी मानसिकता को विकृत कर विकथा से जोड़ें, उद्वेग और आवेग के भाव को जगायें, मानस को उतार चढाव के दौर से गुजरने को मजबूर करें तो भला दिन भर यदि कोई उद्विग्न, तनावग्रस्त एवं अस्त व्यस्त रहे तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

एक समय था जब श्रावक जैन सिद्धान्तों का जानकार होता था। आगमों में श्रावक की गौरवशाली परम्परा का परिचय मिलता है। कभी साधु का कोई दोष जग जाता और वह प्रायश्चित्त करना चाहता तो आसपास गीतार्थ संत या आचार्य नहीं होने पर वह संत आत्मा की निर्दोषता के साथ श्रावक के पास जाकर आलोचना करके प्रायश्चित्त लेता था। श्रावक के समक्ष आलोचना करना और प्रायश्चित्त लेना अपने आपमें स्पष्ट करता है कि वह श्रावक कितना ज्ञाता होता था। यदि सिद्धान्तों से परिचय नहीं होता तो प्रायश्चित्त कैसे देता?

आज हम श्रावकों पर दृष्टि डालें तो शायद अंगुलियों पर गिनने लायक श्रावक पायेंगे। हम गांवों में जाते हैं, शहरों में भी जाते हैं, वहाँ देखते हैं कि जानकार श्रावक विरले मिलते हैं। श्रावकों को न सिद्धान्त की जानकारी है और न ही उनमें जैनत्व का गौरव। आप बड़ी संख्या में यहां बैठे हैं। मैं अभी पूछूँ–शास्त्र कितने हैं? ठीक है भाग्य योग से आप संख्या बता दें, पर यदि शास्त्रों के नाम पूछूँ तो.....? प्रतिक्रमण जानने वाले कदाचित् नाम बता सकते हैं, पर दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, उपासकदशांग, आचारांग में क्या विषय है पूछ लिया जाय तो......? मैं नहीं चाहता किसी को खड़ा करके उसे उपहास का पात्र बनाऊँ। आप स्वयं अपना मूल्यांकन करें आपको कितनी जानकारी है। एक मुस्लिम को कुरान की आयतें याद हैं। ईसाई को बाइबल की एक–एक बात ध्यान में है। जलगांव में हमारा चातुर्मास था, वहां एक अध्यापक आता था। उसे बाइबिल की जानकारी थी। उससे बातचीत हुई तो कहने लगा–महाराज! मैं क्या जानता हूँ, मेरे मित्र तो मेरे से भी अधिक जानते हैं।

मुझसे किसी ने पूछा– अपना जैन धर्म इतना सीमित क्यों? मैंने कहा– भाई, आप लोगों की कमजोरी के कारण जैन धर्म सीमित है। वह कैसे? यदि आप किसी ट्रेन में सफर करते हैं तो सहयात्री पूछता है– तुम कौन? मैं जैन हूँ। अगर जैन हूँ, कह दिया और कहीं सामने वाले ने अगला प्रश्न कर दिया कि जैन किसको कहना तो....? मुझे अफसोस होता है जैन होकर जैन किसको कहना, नहीं बता सकते तो आपको जैनत्व का क्या गौरव? आज कई ऐसे हैं जो जैन शब्द का अर्थ नहीं बता सकत। यदि आगम ज्ञान होता, सिद्धान्तों से परिचित होते तो अन्य जैनेतर बन्धुओं से धार्मिक चर्चा कर उन्हें आप प्रभावित कर सकते, जिनधर्मानुरागी बना सकते, फिर स्वतः जैन धर्म की व्यापकता हमें मिल जाती।

पाली में एक शर्मा जी हैं। वे जैन नहीं, ब्राह्मण हैं, पर प्रतिक्रमण में उनको अवसर मिलता है। उनका जैन धर्म के प्रति अनुराग है। वे प्रतिक्रमण तो करवाते ही हैं, लोगों से कहते रहते हैं कि जैन धर्म उत्कृष्ट धर्म है। जैन धर्म के सिद्धान्त एक से बढ़कर एक हैं।

मैंने सुना है– पंजाब में जब आतंकवाद चरम सीमा पर था उस समय संत लौंगोवाल ने कहा कि हमें यदि पंजाब में अमन चैन का वातावरण निर्मित करना है तो हमें जैन धर्म की अहिंसा का प्रयोग करना होगा। संत लौंगोवाल की बात सुनकर मेरे मन में गौरव जगा। क्योंकि जैन सिद्धान्त कितना प्रासंगिक, जहां हर स्तर पर सटीक समाधान मिलते हैं। आप गौरवशाली जैन कुल में जन्मे हैं पर अफसोस है कि जैन सिद्धान्तों से आप परिचित नहीं हैं। आपका गौरव कहां गया? कहां है आपका जैनत्व के नाम पर स्वाभिमान ?

आनन्द श्रावक पहली बार भगवान के पास गया। प्रभु की वाणी सुनकर निवेदन किया–भगवन्! मैं महाव्रत स्वीकार नहीं कर सकता, पर आप मुझे श्रावक के बारह व्रत स्वीकार करवा दें। बारह व्रती बनकर आनन्द श्रावक घर जाकर पत्नी शिवा से कहता है– मैंने भगवान से बारह व्रत स्वीकार किए हैं, तुमको भी स्वीकार करने हों तो प्रभु के श्रीचरणों में जाओ। वह घर आकर पत्नी को प्रेरित करता है। श्रावक स्वयं धर्म से जुड़ता है, दूसरों को धर्म से जोड़ने का प्रयास करता है।

आज आप सम्पर्क में आने वालों से क्रिकेट की चर्चा करेंगे, फुटबॉल की चर्चा करेंगे और कभी समाज की चर्चा का प्रसंग आया तो एक दूसरा एक दूसरे की टांग खिंचाई करता मिलेगा, लेकिन सिद्धांतों का परिचय प्राप्त कर दूसरों को धर्म से जोड़ने वाले विरले मिलेंगे। किसी को प्रेरणा कर दें लेकिन अधिकांश लोगों को गौरव है नहीं । वे दूसरों को क्या जोड़ें अपने परिवार के सदस्यों को समझा दें तो बड़ी बात है। इतिहास साक्षी है आर्यरक्षित चौदह विद्याओं में पारंगत होकर घर आया । आर्यरक्षित विद्वान होकर नगर में आ

रहा है राजा ने सुना तो उसे लगा कि मेरे नगर का युवक अनेक विद्याओं में निष्णात बनकर आ रहा है तो यह मेरे नगर का सौभाग्य है। राजा ने युवक के सम्मान के लिए स्वयं अगवानी में जाने का निश्चय किया। राजा स्वयं आदर दे रहा है तो प्रजा भी सहज तैयार हो जाती है। नगर के सारे नागरिक स्वागत– सत्कार के लिए उमड़ पड़े।

आर्यरक्षित भीड़ भरे माहौल में अपने परिचितों को, मित्रों को, रिश्तेदारों को और राजा तक को देखता है। उसकी निगाहें चारों ओर निहारती हैं कि नगर के सब लोग यहां उपस्थित हैं, किन्तु मेरी मातुश्री कहीं दिखाई नहीं दे रही । क्या बात है? वह कहाँ है? क्यों नहीं आई?

आदमी दुःख में तो माँ को याद करता है, पर सुख की घड़ियों में मां को विरले याद करते हैं। आर्यरक्षित को कोई दुःख नहीं था। वह तो स्वयं राजा से सम्मान पा रहा था। नगरवासी उसके सत्कार में तत्पर थे। ऐसे समय में आर्यरक्षित अपनी माताश्री को याद करता है। मातृभक्त ही ऐसे समय में माँ को याद करता है। आज स्थिति विपरीत सी नजर आती है। यदि आचार्य श्री की भाषा में कहूँ तो– आज उपकारी का उपकार मानने वाले विरले हैं। फादर का कोई आदर नहीं और मदर की कोई कदर नहीं। हम गांव–गांव और नगर–नगर में विचरण करते समय देखते हैं। हम घर–घर गोचरी जाते हैं वहां देखने–सुनने को मिलता है (यद्यपि संत देखी सुनी बात को इधर उधर कहते नहीं हैं)। कभी–कभी तो लोग आकर भी कहते हैं, क्योंकि लोग जानते हैं कि महाराज को नहीं कहने वाली बात भी कह दें तो हरज नहीं। जैसे कुए में डाला पत्थर वापस नहीं आता ऐसे ही महाराज को कही बात वापस इधर–उधर नहीं हो सकती। इसी धारणा से लोग अपनी व्यथा–कथा यथा पुत्रों की ओर से होने वाले दुर्व्यवहार आदि का जिक्र निःसंकोच कर जाते हैं।

एक घर पर संत गोचरी गए। बाहर बैठा बुजुर्ग पिता चाय के लिए आवाज दे रहा था। संत को देख युवा लड़के ने बहराने के लिए बहुत सी चीजों का आग्रह किया। ऐसे में संत ने कहा– बाहर बैठे बुजुर्ग पिता तो चाय–चाय कर रहे हैं, तो वह कहने लगा "म.सा. अबार चाय पिलाई, पर याणी तो नीत ही नहीं धापे।" यह तो एक झलक है तिरस्कृत जीवन की– न जाने इस तरह की उपेक्षा के शिकार कितने ही माता–पिता और होंगे। आज भूल रहा है मानव माता–पिता के उपकार को। आप प्रत्यक्ष में देखते हैं एक बच्चा न बोलना जानता है, न चलना। उस अबोध अवस्था में उसे गन्दगी और अच्छी चीज में भेद करने का ज्ञान भी नहीं होता। माँ नहला–धुलाकर छाती के चिपका कर वात्सल्य देती है, उस मां को आदमी भूल जाय यह कैसी विडम्बना है?

ठाणांग सूत्र में तीन प्रकार के उपकारी बताए हैं– माता–पिता, गुरु और आजीविका के साधन बताने वाले स्वामी। एक लड़का यदि माता–पिता को बंगला देता है, उनकी सारी व्यवस्था करता है, स्नान करवाता है, तेल मालिश करता है, पगचम्पी करता है, चिकित्सा के साधन उपलब्ध कराता है, फल, मेवा–मिष्ठान्न खिलाता है तो क्या वह माता–पिता के ऋण से उऋण हो सकता है? भगवान ने कहा– नहीं। वह पुत्र यदि माता–पिता का धर्म के कार्य में सहयोग करे तो वह फिर उऋण हो सकता है। जरूरत है–माता–पिता के विश्वास को जीतने की। आज स्थिति अलग है। जब तक शादी नहीं हुई तब तक तो फिर भी माता–पिता की आज्ञा–अनुशासन रह सकता है और ज्यों ही शादी हो गई तो फिर उसके पर निकल आते हैं।

हम भूल रहे हैं पिता के वात्सल्य को और मां की ममता को। मां की ममता देखो। बच्चा है उसके आराम का माँ पूरा ध्यान रखती है। खुद गीले में सो जायेगी, बच्चे को सूखे में सुलायेगी। खुद कष्ट उठा लेगी, बच्चे को सुख–सुविधा देने का प्रयास करेगी। खुद भूखी रह जायेगी , बच्चों को भूख से बिलखते नहीं रखेगी। इसीलिये तो कहा जाता है– समुद्र का पानी सूख सकता है, मां की ममता नहीं सूखती। कभी बच्चे को हॉस्टल भर्ती कराना हो तो मां बिलखती है, सौ–सौ आंसू बहाती है। लड़का स्कूल गया। रोज दो बजे आ जाता है आज ढ़ाई बज गई, आया क्यों नहीं? बच्चे के आने में घंटे–आधे घंटे की देरी में मां रसोई और दरवाजे के बीच में दस–बीस चक्कर लगा देगी। फोन लगायेगी। खुद सामने जायेगी या किसी को भेजेगी। पता करो, क्या बात हुई, बच्चा आया क्यों नहीं। मां के मन में कई आशंकाएँ उत्पन्न होती हैं। कहीं एक्सीडेन्ट तो नहीं हो गया। किसी ने अपहरण तो नहीं कर लिया। न जाने कितने–कितने विचार माँ के मन में चलते हैं। कारण क्या? कारण है माँ की ममता। मां स्वयं गुस्से में मार लगा देती है, किन्तु बेटे को कोई दूसरा मारे तो मारने नहीं देती। मां की ममता मनुष्यों में ही होती है, ऐसी बात नहीं। आप तिर्यंच को देख लीजिये। सिंह कभी हिरणी के बच्चे को झपटा मारे तो हिरणी सिंह से लड़ने तैयार हो जायेगी, पर अपने बच्चे को बचाने का प्रयास करेगी। कभी बच्चा बीमार हो जाय तो मां का चेहरा उतर जाता है। मां दवा के प्रबन्ध के साथ न जाने कितने–कितने देवी–देवताओं की मनौती करती है, मेरे कहने की जरूरत नहीं, आप स्वयं जानते हैं। मां को अपने स्वास्थ्य की परवाह नहीं, वह बच्चे के स्वास्थ्य के लिए जितना कर सकती है, करती है।

आज आदमी माता–पिता के उपकारों को भूल रहा है। आज कई माता–पिता सन्तों से आकर कहते हैं–महाराज! आप थोड़ा समझावें, बाधे दें। ऐसा कहने वाले माता–पिता के मन में कितनी पीड़ा है आप समझ सकते हैं।

आर्यरक्षित की नजर मां को ढूंढ रही थी। मां थी ही नहीं तो दिखाई कहां से दे। वह तुरन्त औपचारिकताएँ पूरी करके घर पहुंचा। देखा, मां सामायिक लेकर बैठी है। धर्म के प्रति दृढ़ आस्था रखने वाले बाहर के आडम्बरों से प्रभावित नहीं होते। आज आपकी धर्म पर कितनी श्रद्धा है? सामायिक पर कितना विश्वास है? सामायिक लेकर बैठे हैं। यदि बाहर बैंड बाजा भी बज जावे तो उठकर देखने को उत्सुक हो जायेंगे। घर पर यदि शादी समारोह है, अभी बहुत दिन शेष हैं, उस स्थिति में सब काम होते हैं। न स्नान छूटता है, न आराम। छूटती है तो वह सामायिक। आप स्नान करना नहीं छोड़ते, बाल संवारना नहीं छोड़ते, अखबार पढ़ना नहीं छोड़ते, घर में कोई काम हो तो सामायिक सबसे पहले छूटती है। सामायिक के प्रति यह ढिलाई क्यों?

आर्यरक्षित आ रहा है। स्वागत सत्कार में पूरा नगर ही नहीं, राजा तक सम्मिलित है, यह जानते हुए भी माता सामायिक में बैठी है। बेटे के प्रति तिरस्कार नहीं अवमानना की भावना भी नहीं। पर वह जानती है जो समय धर्म में निकले, वह शुभ है। पाप के कार्य में तो समय जा ही रहा है।

माता की सामायिक पूरी हुई तो आर्यरक्षित ने प्रणाम किया। आज कितने बच्चे हैं जो मां–बाप को प्रणाम करते हैं? पाली में मैंने एक बच्चे से पूछा– क्या तुम माता–पिता को प्रणाम करते हो? बच्चे ने कहा– नहीं। मैंने पूछा–क्यों नहीं करते? तो कहा शर्म आती है। मैंने कहा– तुम जब छोटे थे तब मम्मी की गोद में गंदगी कर देते, पेशाब कर देते क्या उस समय भी तुम्हें शर्म आई और आज प्रणाम करते शर्म आती है? बच्चे माता–पिता और परिवारजनों को प्रणाम नहीं करते, इसका बड़ा कारण है घर का प्रचलन नहीं। जहां प्रणाम का प्रचलन नहीं वहां कभी गुरु के कहने से बच्चे प्रणाम करें तो मम्मी को हंसी आती है और मजाक करने लग जाती है। जब मम्मी स्वयं अच्छी प्रवृत्ति की शुरूआत कर हंस देती है तो अन्य भाई बहिन यदि मखौल करने लग जायें तो क्या बड़ी बात है।

विडम्बना है कभी लड़का महाराज के कहने पर सामायिक करने लगता है तो अडौसी–पड़ौसी कह देते हैं– आजकल तो वैराग्य आय ग्यो दीखे। मां–बाप भी ताज्जुब करने लगते हैं। दोस्त मजाक–मजाक में कह जाते हैं अब शायद दीक्षा रा भाव बण गया दीखे। अड़ौसी–पड़ौसी, मित्र और परिवारजन उसके धर्मात्मा होने की बात करते हैं तो बिचारा दूसरे दिन इस डर से कि लोग फिर कहेंगे, वह सामायिक जैसी आवश्यक प्रवृत्ति से कतराने लगता है। कहने वाले भी पता नहीं क्या–क्या कह जाते हैं। आज सूरज कठिने उगियो। यांरा भाव ऊँचा है। इस तरह धर्म-साधना करने वालों का मजाक उड़ाया जाता है। सामायिक करने वाले को प्रेरित–प्रोत्साहित करने

के बजाय निरुत्साहित करने वाले ज्यादा हैं। यह भी एक कारण है कि बच्चे और युवक सामायिक करने से कतराते हैं।

आर्यरक्षित मां को प्रणाम करके पूछता है– मातुश्री! सारा नगर मेरे आगमन पर उपस्थित था, आप क्यों नहीं पधारीं? मेरे यहां तक आने में आपके चेहरे पर प्रसन्नता नहीं दिख रही है। मां, बताइये क्या बात है? आपकी खुशी में ही मेरी खुशी है। आप मेरे लिए तीर्थ हैं आपका स्थान मेरे लिए भगवान के बराबर है। मातृभक्त आर्यरक्षित बहुत अनुनय विनय के साथ मां से पृच्छा करता है। माता कहती है– बेटा! जो तुम पढ़कर आये हो, इससे तुम्हें राजकीय सम्मान मिल सकता है, तुम्हारी प्रसिद्धि हो सकती है, तुम विद्वान कहला सकते हो, पर जो तुमने पढ़ा है वह आत्म-कल्याण के मार्ग को प्रशस्त नहीं करता।

आर्यरक्षित मातृभक्त तो था। वह विनयपूर्वक निवेदन करता है– मातुश्री! आप मेरा मार्गदर्शन करें। अभी क्या हो गया, मैं आपकी भावनानुसार जैनागमों का अध्ययन करूंगा, पर माँ मुझे किनके पास क्या पढ़ना है, आप बताइये। माँ ने कहा– बेटा! तूं दृष्टिवाद का अध्ययन कर। इक्षुवाटिका में विराजमान आचार्य तोषलीपुत्र तुम्हें यह अध्ययन करा सकते हैं।

मां का आशीर्वाद लेकर आर्यरक्षित आचार्य श्री तोषलीपुत्र के चरणों में पहुंचता है और निवेदन करता है– भगवन्! मैं दृष्टिवाद का अध्ययन करना चाहता हूँ, आप कृपा करिये और मुझे अध्ययन में रखिये। आचार्य श्री ने कहा– वत्स! इसके लिए पंच महाव्रतधारी योग्य हैं और वे ही इसके पात्र हैं।

आर्यरक्षित ने कहा– भगवन्! मुझे आपका प्रस्ताव मंजूर है। मैं मातुश्री की आज्ञा और आशीर्वाद लेकर आपश्री के चरणों में रहना चाहता हूँ। माँ परिचित थी कि गुरु ऐसा ही कहेंगे। आप देखिये, माँ के अन्तर्मन में कैसी सुन्दर भावना थी ?

आज लड़का बड़ा होता है तो माँ की भावना होती है संबंध को लेकर। माँ सुन्दर बहू लाने का चिंतन करती है, पर विरली माताएँ हैं जो अपने होनहार बालक को जिनशासन सेवा में आगे बढ़ाती हैं।

हमारे प्रमोदमुनि जी हैं। वे सी.ए. की पढ़ाई कर रहे थे। छः माह आचार्य भगवन्त के श्रीचरणों में रहे और वापस घर लौटे तो उनकी माताश्री ने पूछा– वापिस कैसे आए? क्या वहां मन नहीं लगा? पुत्र ने माँ की भावना समझी और फिर से गुरु चरण–सरोजों में पहुंच गये। माताश्री ने संयम से बढ़कर दूसरा और कोई मार्ग नहीं, बस यही एक वाक्य कहा। प्रमोदमुनि जी संकल्प के साथ संयम-साधना में आगे बढ़ रहे हैं।

आर्यरक्षित की माँ जैसी विरली माताएँ होती हैं तो ऐसे पुत्र भी विरले ही होते हैं। जरूरत है– हम जगें। आप हम जागृत होकर भगवान की वाणी

का प्रचार–प्रसार कर सकें वह सर्वश्रेष्ठ कार्य है। हम जितना–जितना शास्त्रों का अध्ययन करेंगे उतनी–उतनी मात्रा में हमारा ज्ञान निर्मल होगा। स्वाध्याय सौ तालों की एक चाबी है। स्वाध्याय से व्यक्तिगत, पारिवारिक और संघ–समाज की समस्याएँ दूर होंगी।

पूज्य गुरुदेव ने सामायिक और स्वाध्याय के दो अमृत कलश हमें दिये हैं। इन्हें हम आचार और विचार भी कह सकते हैं, ज्ञान और क्रिया भी कह सकते हैं। एक को श्रुत और दूसरे को चारित्र भी कह सकते हैं। ज्ञान और क्रिया है तो हम जन से जैन हैं। जिसके आचार और विचार शुद्ध हैं वह जन नहीं रहता जैन बन जाता है। आप मात्र जाति से जैन बनकर नहीं रहें, अपने भीतर में जैनत्व का गौरव जगायें। जैनत्व का गौरव तभी संभव है जबकि सामायिक और स्वाध्याय से जुड़कर जैन धर्म को विशाल बनायें। आपका आचार–विचार शुद्ध होगा तो लोग सन्मार्गगामी बनेंगे। आप शुद्ध शाश्वत धर्म का आराधन करेंगे तो भव सीमित करते–करते भव-बन्धनों से मुक्त हो सकेंगे। इसी भावना के साथ.....

भक्ति का फल

सौ. कमला सिंघवी

भक्ति के द्वारा व्यक्ति वीतराग भाव के समीप पहुंचता है। भक्ति का महत्त्व बताते हुए कविवर विनयचन्द जी ने अपनी पदावली में विवेचन किया हैं–

भक्ति कियां भव भव का दुष्कृत दुःख दुर्भाग्य टल जावे।
काम, क्रोध, मद, मत्सर, तृष्णा, दुर्मति निकट न आवे रे,
सुज्ञानीजीवा! भक्ति करले, देव, गुरु भगवान की।

क्या होता है भक्ति से?और क्यों की जाती है भक्ति?भक्ति का सबसे बड़ा व सबसे पहला फल यह बताया है कि भक्ति करने से अनेक भवों के संचित दुष्कर्म नष्ट हो जाते हैं। भक्ति के माध्यम से संचित पाप का बोझा हल्का हो जाता है। भगवती सूत्र में इस विषय में एक सुन्दर प्रसंग आता है। गणधर गौतम ने भगवान महावीर से पूछा– "भगवन्! तथारूप श्रमण की सेवा करने, भक्ति करने तथा उपासना करने से आत्मा को क्या लाभ होता है?"

प्रभु ने उत्तर दिया–"ज्ञानियों की, निर्ग्रन्थों की, गुणवानों की सेवा-भक्ति एवं पर्युपासना करने से वीतराग के वचन सुनने का लाभ मिलता है। जिनवाणी के श्रवण से ज्ञान होता है, ज्ञान से विज्ञान होता है, विज्ञान से प्रत्याख्यान व प्रत्याख्यान से आस्रव रुकते हैं व तप करने से कर्मों की निर्जरा होती है।

कर्मों की निर्जरा करते–करते अक्रिय अवस्था बनती है। इस प्रकार सिद्ध-मुक्त हो जीव शिवपद के अधिकारी बन जाते हैं। तथारूप अरिहन्त तथा गुरु की भक्ति का अन्तिम फल मोक्ष है।

–अध्यापिका, स्वाध्यायी, ज्ञान मंदिर जैन पाठशाला, भडगांव

महापर्व सम्वत्सरी का माहात्म्य

शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.

उपस्थित धर्मप्रेमी बन्धुओं!

आज पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व का पावन पुनीत आठवां दिवस इन्द्रियों के दमन,विषयों के वमन,कषायों के शमन,वीतराग भगवन्तों को नमन, मुक्तिमार्ग की ओर गमन और आत्मगुणों के चमन के लिए हमारे समक्ष उपस्थित है। पर्वतों में सुमेरु, द्वीपों में जंबूद्वीप, नदियों में गंगा–सिंधु, वृक्षों में जंबू–सुदर्शन, व्रतों में सत्यव्रत, दानों में अभयदान, गायों में कामधेनु, पंचमहाव्रतों में ब्रह्मचर्य महाव्रत और सभी श्रमणों में महावीर सर्वश्रेष्ठ हैं, उनसे भी बढ़कर यह पर्वाधिराज पर्युषण पर्व का पुनीत संवत्सरी महापर्व सबमें श्रेष्ठ है।

इस महापर्व के गुण निष्पन्न मुख्य तीन नाम समझ में आते हैं। एक संवत्सर पर्व, दूसरा अहिंसा पर्व और तीसरा है– क्षमा पर्व। बारह महीनों के पश्चात् आने के कारण यह पर्व संवत्सर पर्व है। बारह माह में लौकिक और लोकोत्तर पर्व आते हैं। पर इस पर्व की महिमा कुछ अलग है। इस पर्व की ऐतिहासिकता क्या? इस विषय में बहुत से लोगों के प्रश्न आते हैं। कल परसों एक सिस्टर आई थी, बोली–महाराज! संवत्सर हमारे समक्ष है। इसके पीछे ऐतिहासिकता क्या है? क्यों भीड़ एकत्रित होती है? बच्चों और तरुणों में धर्म के प्रति प्रायः श्रद्धा का अभाव नजर आता है । मां बाप कहते हैं धर्मस्थान जाने को, परन्तु बच्चे ताश–चौपड़, केरम आदि खेलने बैठ जाते हैं, टी.वी. देखने लग जाते हैं। वे क्लब होटलों में जाना तो पसंद करते हैं, किंतु धर्मस्थान में आकर प्रवचन सुनने की बात से दूर भागते हैं। दूर भागने वाले बच्चे व तरुण संवत्सरीमहापर्व पर क्यों एकत्रित हो जाते हैं? यह बात उस सिस्टर के ही नहीं आप में से कइयों के मन में आती होगी। संवत्सरी पर्व की भी ऐतिहासिकता है।

जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र में वर्णन आता है कि अवसर्पिणी काल का छठा और उत्सर्पिणी काल का पहला आरा दुःखमादुःखम बड़ा भयंकर होता है। नदियों में गंगासिंधु, पर्वतों में मात्र वैताढ्य पर्वत ही बचता है। उसमें भी पानी कम, कीचड़ ज्यादा । भूमि का तापमान गरमागरम लोहपिंड की तरह, न खाने के लिए अन्न न रहने के लिए झोंपडा। पहनने को वस्त्र तक नहीं । मानवों की अवगाहना चूहे जितनी अर्थात् मुंड हाथ की। वे मानव वैताढ्यगिरि पर्वत कन्दरा में चूहे की तरह रहते हैं। भूमि के भयंकर तापमान के कारण दिन को बारह बजे से रात के 12 बजे तक बिलों में रहते हैं। वे बिलवासी

मानव भयंकर गर्मी के कारण बाहर नहीं आते। रात में कुछ ठंडक होने पर वे गंगा सिंधु के किनारे आते हैं। नदियों में पानी कम और कीचड़ ज्यादा होने से वहां कच्छ– मच्छ–मगरमच्छ आदि जीव–जन्तुओं की उत्पत्ति अधिक होती है। उन जीवों को खींच खींचकर वे मानव बाहर निकालते हैं। बालू रेत में दबाकर रखते हैं, पहले दिन दबाया हुआ भूतल की तीव्र गर्मी से पक जाता है। उसे दूसरे दिन खाकर जीवन यापन करते हैं। ऐसा मलिन जीवन एक–दो दिन नहीं, 42 हजार वर्ष तक व्यतीत करना होता है। ऐसी बीभत्स दशा में कोई सुधार करने वाला नहीं।

उत्सर्पिणी काल के दूसरे आरे का प्रारंभ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से चालू होता है। सात दिन तक इस पृथ्वीतल पर पुष्करावर्त मेघ की मूसलाधार वर्षा बरसती है। मूसलाधार वर्षा से पृथ्वी का तापमान कुछ ठंडा होता है, फिर क्षीर नाम का मेघ भी लगातार 7 दिन पानी बरसाता है। इस वर्षा से पृथ्वीतल के वर्ण–रस–गंध–स्पर्श अशुभ पुद्गल हटते हैं। फिर एक सप्ताह वर्षा से खुला रहता है। खुले समय में सूर्य की प्रचंड किरणें पृथ्वी में उपयोगी शक्ति भरती हैं। फिर अमृत मेघ, घृत मेघ इस पृथ्वी को सिंचित करते हैं। पृथ्वी अंकुरित होती है। चारों ओर मानो हरी साड़ी के समान दृश्य दृष्टिगोचर होता है। जो पृथ्वी भयंकर गर्मी से तपी हुई थी, वह अब फल–फूल, घास–चारे और धन–धान्य से सरसब्ज हो जाती है। तदनन्तर रस नाम का मेघ 7 दिन तक लगातार पानी बरसाता है। फलों में मधुररस का संचार होता है। इस तरह 5 मेघ, एक–एक सप्ताह पानी बरसाते हैं और 2 सप्ताह खाली रहते हैं। 49 दिन बाद बिलवासी मानव बाहर निकलते हैं तो पृथ्वी को हरी–भरी फल–फूलों से सुशोभित देखकर उनकी खुशी का पारावार नहीं रहता।

खुशी से झूमते मानव एक जगह एकत्रित होते हैं और आपकी तरह मीटिंग करते हैं। आपकी मीटिंगों में शोर गुल अधिक होता है और आसपास की शांति भंग हो जाती है, निर्णय पर पहुंचने में काफी विलंब होता है। मैं आपकी नहीं, उत्सर्पिणी काल के दूसरे आरे के प्रारंभ की बात कह रही हूँ। वे बिलवासी मानव मीटिंग कर शीघ्र निर्णय करते हैं। अब प्रकृति हमारा साथ दे रही है। आज तक हमने मांसाहार कर जीवन को विकृत और गंदा किया, अब खाने के लिए फल हैं, अनाज है, इसलिए हम मांसाहार नहीं करेंगे। मानव के लिए मांसाहार नहीं, शाकाहार है।

आज संगति–दोष के कारण अच्छे कुल में खानपान की कई विकृतियां आ गई हैं। आप वाकिफ हैं। मैं लोगों के माध्यम से सुनती हूँ कि दोस्तों की संगति से कई युवकों का जीवन विकृत बन रहा है। गगराना एक गांव है, वहां स्कूल में ठहरने का अवसर आया। जयपुर से दो–तीन गाड़ियों से लोग आए हुए थे। ड्राइवर ने अन्य पांच–दस लोगों को बुला लिया और

मुझसे कहा– 'महाराज! ये मुसलमान हैं।' मैंने अहिंसा पर कुछ कहा। एक पठान खड़ा हुआ और बोला–"महाराज! यह उपदेश ओसवाल समाज को देना, आज आपके जैन समाज में इस उपदेश की आवश्यकता है। मेरा जन्म भले ही मुसलमान कुल में हुआ है, पर मेरे संस्कार अच्छे हैं। कई ओसवाल समाज के लड़के मेरे बेटे के दोस्त हैं। मैंने ओसवाल के लड़के समझ कर अपने बेटे की शादी में उनके भोजन की व्यवस्था एक ब्राह्मण को बुला कर दी। जब खाना खाने लगे तो ओसवाल बच्चों ने कहा–"ऐसा भोजन तो हम रोज अपने घर पर करते ही हैं, आज तो हमें तुम्हारा खाना खाना है।" आप जरा विचारें, बच्चों में ऐसी भावना क्यों?

मैं उत्सर्पिणी काल के दूसरे आरे की बात कह रही हूँ। उन मानवों ने निर्णय किया कि मांसाहार मनुष्यों का आहार नहीं है। उन्होंने आज के ही दिन एक प्रतिज्ञा की– अब हम में से कोई भी मानव कच्छ–मच्छ का आहार नहीं करेगा। उन मानवों को कोई मार्गदर्शन देने वाला नहीं था। न संत थे, न साध्वी। तीर्थंकर भगवंत भी नहीं थे और जिनवाणी भी नहीं थी। उन मानवों ने स्वतः अपनी भावना से व्यवस्था बनाई।

यह दिन अजर अमर और अक्षुण्ण कैसे रहे? आपके समक्ष मध्याह्न में कल्पसूत्र का वाचन किया जायेगा। जिससे आप जान सकेंगे कि पहले और अंतिम तीर्थंकरों के अलावा शेष 22 तीर्थंकरों के शासनकाल में श्रमण सरल थे, अपनी बुद्धि के माध्यम से जैसा अवसर देखते, धर्म–साधना करते। प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी और अंतिम भगवान महावीर के शासन काल में कल्पों की मर्यादा, उनका विवरण आपके समक्ष मध्याह्न में रखा जायेगा।

अभी जिस मर्यादा की बात कही जा रही है, वह प्रभु महावीर के शासन की है। महावीर के शासन में साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका रूप चतुर्विध संघ इस मर्यादा का पालन करता आया है। जहां जहां भी जैन समाज का बच्चा होगा, अटक से लेकर कटक तक और काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हर्ष विभोर होकर आज के दिन का स्वागत करता है। यहां ही नहीं विदेशों में भी उल्लसित मन से इस संवत्सरी महापर्व को मनाते हैं। जैसे 12 वर्ष पश्चात् घर आने वाले पतिदेव को पाकर उसकी धर्मपत्नी खुश नजर आती है। पड़ौसिन के पूछने पर वह बताती है:–**"साजन आया है सखि, ज्यांकी जोवति बाट"**

आज का पर्व हम सबके लिए आराध्य है। यह अहिंसा पर्व हमें सोचने के लिए बाध्य करता है कि व्यक्ति हिंसा क्यों करता है? हिंसा के पीछे क्या कारण रहे हैं? जितनी भी हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ होती हैं वे सब कषायों की उत्तेजना में होती हैं। छोटे से छोटा प्राणी जीना चाहता है, परंतु कोई भी प्राणी मरना नहीं चाहता।

पाप कर्म का बंध क्रूरता से होता है। हिंसा तो पहले गुणस्थानवर्ती जीवों में भी होती है। छठे गुणस्थानवर्ती जीवों से लेकर 13वें गुणस्थान वालों में भी हो जाती है। केवली भगवंतों की बात मैं नहीं कहती। हम विहार कर रहे हैं, बीच में नदी आ गई, दूसरा कोई रास्ता नहीं। नदी पार करें, पानी में रहे जीवों की विराधना होगी या नहीं। जहां पैर रखने से जीव मरते हैं, वहां केवली भगवंतो के पैर से भी जीव मर सकते हैं, पर मारते नहीं। जीवों का मरना और बात है, मारना और बात है। पहले से 13वें गुणस्थान तक जीवों की हिंसा हो सकती है, किन्तु जहां कषाय होती है वहां ही बंध होता है किंतु 11–12–13वें गुणस्थान में सिर्फ एक साता वेदनीय का ही बंध होता है।

हिंसा कषाय से होती है। आज कषाय शमन का दिन है। आज के दिन हमें हिंसात्मक प्रवृत्तियां छोड़कर अहिंसा भगवती की मंगलमय आराधना करनी है। आज का दिन क्षमा दिवस भी है तो आज का दिन कषाय शमन का दिन भी है। कषाएं चार हैं–क्रोध, मान, माया और लोभ। एक–एक कषाय एक–एक सद्गुण का नाश करती है। शास्त्रकार ने कहा–

"कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेई, लोहो सव्वविणासणो।।"

क्रोध प्रीति का, मान विनय का, माया मित्रता का और लोभ सभी सद्गुणों का विनाश करता है। क्रोध जब आता है तब कितनी भयंकर हालत हो जाती है। क्रोध हमारी आकृति और प्रकृति दोनों को बिगाड़ता है। क्रोध आने पर आंखें एकदम लाल लाल हो जाती हैं, चेहरा काला पड़ जाता है, द्वेष की चिनगारियां उछलती हैं, भुजाएँ फड़कने लगती हैं, भौंहे तन जाती है, नाक के नथुने फड़कने लगते हैं और शरीर में कंपकंपी छूट जाती है। क्रोध आने पर भीतर में शोले उठते हैं। एक वैज्ञानिक ने तो यहां तक कहा है– क्रोधी मनुष्य स्वप्न में भी दांत पीसता है और कहता है– मैं तुझे कच्चे को ही चबा जाऊँगा। उस समय कांच में चेहरा देखो, कैसा लगता है?

आज तरुण धर्मस्थान में आयेंगे तो उनकी जेब में काच–कंघा जरूर मिलेगा। मुझे ताज्जुब है वे कंघा क्यों रखते हैं? जीवन शुद्ध और सात्त्विक रखने के लिए 52 अनाचार बताए गये हैं। कांच में मुंह को देखना भी दोष है। आपको जब भी गुस्सा आए, आप काच में अपना मुंह देखलें तो मैं समझती हूँ, आदमी गुस्सा करना छोड़ दे। मैं इतना रूपवान हूँ, अब इतना विकृत और काला क्यों? कांच देखते ही उसे अपना भान हो जायेगा कि मैं इस समय गुस्से में हूँ, किन्तु प्रायः उस समय कांच देखना याद ही नहीं आता। उस समय तो गालियां याद आती हैं, प्रतिशोध की भावना जागती है। क्रोध तो अशांति ही देता है।

"कोहाविभूया न सुहं लहन्ति" क्रोध के अभिभूत हुआ प्राणी सुख नहीं पा सकता। क्रोधी घर में जायेगा तो वहां तूफान मचाएगा। दुकान पर होगा

तो मुनीम गुमास्ते आदि से झगड़ा करेगा। वे मुनीम भगवान से प्रार्थना करते हैं इनका जल्दी टिकट कटे तो अच्छा। क्रोधी न स्वयं सुखी रहता है, न दूसरों को चैन से बैठने देता है। वह स्वयं भी जलता है, दूसरों को भी जलाता है। क्रोध विष है, विषधर है, पागलपन है, क्रोध मूर्च्छा है, क्रोध अग्नि की भट्टी है। क्रोध घाव है, क्रोध विक्षिप्तता है, क्रोध रोग है, क्रोध मनोविकार है, क्रोध नरक का घर है, क्रोध अनर्थ की खान है, क्रोध विनय और विवेक का दुश्मन है और है नरक गति का द्वार। क्रोध सृजन नहीं–संहार है। करुणा में तो विकास है, परंतु क्रोध में विनाश है। करुणा में तो प्यार है, पर क्रोध में मार है। क्षमा में तो प्राणी का उद्धार है, परन्तु क्रोध नरक गति का मेहमान है। अतः क्रोध से अवश्य बचें। गुस्सैला मनुष्य विषैला होता है।

न्यूयार्क के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक महोदय ने परीक्षण करके देखा– क्रुद्ध मनुष्य के खून को निकालकर एक खरगोश के बदन पर इंजेक्शन के माध्यम से चढ़ा दिया। अच्छा खाशा शांत बैठा खरगोश 22 मिनट के बाद उछल कूद करने लगा। 35 मिनट के बाद अपने आपको काटने लगा और जोर–जोर से चिल्लाने लगा। एक घंटे में तो पैर पटक कर मर गया।

मुझे कहीं पढ़ने को मिला– एक अस्पताल में सूचना बोर्ड पर प्रथम पंक्ति में लिखा था– एक आदमी को कुत्ते ने काट खाया है। परिणाम में लिखा– चिंता की बात नहीं, 14 इंजेक्शन लगेंगे, ठीक हो जाएगा। दूसरे नंबर पर लिखा था– एक मरीज को अंदर ले गये हैं, उसको सर्प ने काटा है, स्थिति खतरनाक है, फिर भी शल्य चिकित्सा से ठीक होने की संभावना है। तीसरे नंबर पर लिखा था–इस मरीज को एक क्रोधी मनुष्य ने काटा है, हालत खतरनाक है, मृत्यु से नहीं बच सकेगा।

समझ गए! क्रोध रूपी भयंकर बीमारी की कोई दवा है या नहीं? भगवान ने इसके लिए एक बहुत बढ़िया दवा बताई– क्रोध के वेग को क्षमा रोक सकती है। भारतीय संस्कृति में क्षमा के अनेकानेक उदाहरण मौजूद हैं। गौतम बुद्ध का एक शिष्य आनंद अनार्य देश में जाने लगा, तब गौतम बुद्ध ने कहा– वहां के लोग बड़े उद्दंड हैं–शैतान हैं। भगवान महावीर स्वामी के कानों में कीलें ठोक दी। अगर तुझे लाठियों से मारा जायेगा तो तू क्या करेगा? आनंद ने कहा– लाठियों से प्रहार होगा तब मैं चिंतन करूंगा कि मेरे पर पत्थर तो नहीं मारे गए। इस पर गौतम बुद्ध ने अपने शिष्य आनंद से कहा– मान लो, यदि वे पत्थर मारें तो क्या करोगे? तब आनंद ने उत्तर दिया– हे गुरुदेव! मैं चिंतन करूंगा, इन्होंने मेरे जीवन का तो अंत नहीं किया। इस पर गौतम बुद्ध कहने लगे– यदि जीवन समाप्त कर दें तो क्या करेगा? आनन्द कहने लगे– उस समय मैं गुरुदेव! ऐसा सोचूंगा कि यह देह तो विनाशी है, मैं तो अविनाशी हूँ।

मैं क्या हूँ? समझ गए। बुद्ध संस्कृति भी क्रोध के प्रतिकार के रूप में क्षमा स्वीकार करती है। वैदिक संस्कृति देख लीजिए। वहां भी क्षमा के ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं। भृगु ने रुष्ट होकर विष्णु की छाती में लात मारी।

कवि कह रहा है–

"क्षमा बड़न को होत है, ओछन को उत्पात।
कहा विष्णु को घटि गयो, जो भृगु मारी लात।।"

प्रतिशोध की भावना में जो सहिष्णुता रखते हैं, वे ही शूर–वीर धीर होते हैं।

जैन संस्कृति देख लीजिये। सिर पर धधकते अंगारे उंडेल दिए, उस समय भी अपूर्व शांति और क्षमा का आदर्श। गजसुकुमाल जी ने सोचा, मेरे ससुरजी का उपकार ही है, उन्होंने सिरपेच बांध दिया, कोई बात नहीं। आज साफा पगड़ी टोप टोपी हट गये। 15–20 साल पहले मैं मद्रास थी, एक दूल्हा–दुल्हन मेरे पास पहुंचे। सिर पर साफा नहीं, टोपी नहीं, मात्र एक लाल कपड़ा, जिसे वे साफे का प्रतीक समझते हैं, वही लगा हुआ था। गजसुकुमाल का चिंतन चला होगा, साफे का कलर यानी चूंदड़ी के साफे का कलर लाल होता है, ये धधकते अंगारे भी लाल सुर्ख हैं। गजसुकुमाल मुनि को चिंतन–चिंतन में केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

खंदक जैसे महामुनि की खाल उतारी जा रही थी, फिर भी वही क्षमा। आपको हमको सोचना है, विचार करना है, चिंतन करना है, हम क्रोधादि कषायों से कैसे मुक्त हों? क्रोधादि कषायों के कारण और राग–द्वेष के कारण मानव जीवन कितने भागों में विभक्त हो रहा है? यह दस्सा, यह बीसा, यह पांचा और ढाइया। भगवान जाने आपकी यह स्थिति क्यों बनी है? समाज को इस स्थिति पर विचार करना चाहिए। समाज के आज कितने टुकड़े हो गए, क्या इस पर कभी चिंतन चला है? मूल में स्थविर कल्प और जिनकल्प ये दो धाराएं थीं। वस्त्रधारी होते उनको स्थविर कल्प और जिनके बदन पर वस्त्र नहीं होते वे जिनकल्प। रागद्वेष की परिणति ने हमारे भी टुकड़े कर दिए। भगवान महावीर के निर्वाण की छठी शताब्दी में दिगम्बर समाज का जन्म हुआ। श्वेताम्बर में भी स्थानकवासी, मूर्तिपूजक और तेरापंथी। इतना तक हो जाने पर भी एक रहते तो कोई बात नहीं। मूर्तिपूजक परम्परा में 84 गच्छ। खरतरगच्छ, तपागच्छ और न जाने कौन–कौन से गच्छ हैं। तेरापंथी में नव तेरापंथ अलग। स्थानकवासी में कितने भेद हैं, आपसे छिपा हुआ नहीं है। आचार्य श्री धर्मदास जी महाराज के 22 दिग्गज विद्वान् शिष्य थे। उन शिष्यों ने दूर प्रांतों में घूम–घूम कर जिनधर्म की विजय वैजयंती फहराई। लोगों ने पूज्य मान लिया। खंभात, काठियावाड़ी, दरियापुरी और न जानें कितनी कितनी परम्पराएं हैं। ये पंथ करने वाले कौन? इसके पीछे रागद्वेष की परिणतियां हैं। क्रोध की संतान हैं।

यह क्रोध खतरनाक है, भयंकर है। घर हो या बाजार, जहां भी क्रोध धधकता है, वहां स्थितियां बिगड़ जाती हैं। घर और बाजार ही क्या, धर्मस्थान भी अछूते नहीं हैं। मैं समझती हूँ– आप नई–नई डिजाइन के मकान बनाते हैं उसमें लेट्रिन–बाथरूम, वाश-बेसिन लगाते हैं। क्या ही अच्छा हो, आप ड्राइंग रूम, बेडरूम, किचन रूम की तरह एक कोप भवन भी बना दें। जब भी क्रोध आए आप उस भवन में बैठकर विचार करें, शेष घर तो शांति का रहेगा। आप शांति की सरिता में नहा सकें, यह जरूरी है।

"क्षमा–शांति–सद्भाव स्नेह की, गंगा की पवित्र निर्मल धारा।
गहरी डुबकी लगा हृदय से, धो डालो कलिमल सारा।।"

आपको आज के दिन विचार करना है कि इस जीव ने एक जन्म में नहीं, हजारों जन्मों में घोर से घोर पाप कर्म किये, आज पाप कर्म से मुक्त होने का अवसर है। यह आरा फिर भी अच्छा है। भले ही आज हमारे बीच तीर्थंकर नहीं, पूर्वधर नहीं, श्रुतधर नहीं, मनपर्ययः ज्ञानी नहीं, तो भी चतुर्विध संघ मौजूद है। द्वादशांगी पूर्ण न सही तो भी अंशतः है। तीन बार के दुष्कालों में जैनागम काफी विच्छिन्न हो गया। एक समय था जब गुरुओं के मुख होता, चेलों के कान होते। गुरु के मुख से सुना, उसे टिकाये रखा जाता। कालान्तर में आगमों की बातें विस्मृत होने लगीं तब देवर्धिगणि क्षमाश्रमण ने भगवान महावीर के 980 वर्ष बाद आगमों को लिपिबद्ध किया। आज का आरा तो फिर भी ठीक है। हमें आगमों से मार्गदर्शन तो प्राप्त है। आगमों से हम ज्ञान को निर्मल एवं दर्शन को मजबूत रखकर चारित्र के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं।

हमारा जन्म भी ऐसी भूमि में हुआ, जहां लोग कीड़ी को सताना भी पाप मानते हैं। जो अनार्य क्षेत्रों में जन्में हैं, वे चूहों का आचार और मकोड़ों का रायता बनाते हैं और खाते हैं। अनार्य क्षेत्र में जन्मने वाले दुर्भागी हैं, हम सद्भागी हैं। हमें धर्मश्रवण का ही नहीं, धर्माचरण का भी अवसर मिल रहा है।

आज बहुत बड़ा महान् पर्व है। बाप को बेटे के साथ कैसे रहना? भाई–भाई और पति–पत्नी कैसे रहें, यह आपको सीखना है। आज का यह पर्व प्रेम का पर्व है यह सीखना जरूरी है आज घर–घर में कलह की होली जल रही है, भाई–भाई में ही नहीं, बाप–बेटे में झगड़ा हो रहा है, सास–बहू में लड़ाइयां चल रही हैं। कहीं–कहीं तो बहू को घासलेट दिखा दिया जाता है। आप इन बुराइयों को भस्म कर दें।

जब विकारी भाव जल–बल कर समाप्त होंगे तब ही जीवात्मा को विजय मिलेगी, जीवन में ज्ञान का प्रकाश होगा।

"काम क्रोध मद लोभ की जब लौं घट में आग।
तब लौं पंडित मूरखां, तुलसी एक समान।।"

आप जिस दिन काम, क्रोध, विषय–विकार, लड़ाई–झगड़ों को विदा

कर देंगे, आपकी गणना मूर्खों में नहीं, विद्वानों में होगी। याद रखें—लड़ाई का अन्त लड़ाई से नहीं। खून से सना कपड़ा खून से साफ हरगिज नहीं होता। गालियों का अन्त भी कभी गालियों से नहीं होता। यह आप अच्छी तरह से जानते हैं कि खून से सने वस्त्र को पानी और साबुन से धोना होता है। कवि ने कहा—

"घृणा घृणा से वैर वैर से कभी शान्त हो सकते हैं क्या?
कभी खून से सने वस्त्र को, खून ही से धो सकते क्या?"

साबुन से कपड़े की तरह ही ज्ञान और क्रिया से जीवन की चदरिया निर्मल रह सकती है। कवि कहता है—

"अगर मन है मैला, न तन को संवार।
पिया है जो अन्धा तो, कैसा शृंगार।।"

मन मैला है तो शरीर का शृंगार किस काम का। आपको आज के दिन आत्मा को निर्मल, शुद्ध, पावन और स्वच्छ बनाना है। क्षमा से जीवन शृंगारित करना है। आप दूर—दूर रहने वाले इष्ट मित्रों से, स्नेहियों से, पारिवारिक परिजनों से पत्रों के माध्यम से अथवा टेलीफोन के द्वारा क्षमायाचना करेंगे, पर यह क्षमायाचना का सही रूप नहीं है। यह तो मात्र एक दस्तूर है। सच्चे अर्थों में क्षमा घर से प्रारम्भ होती है। जिनके साथ में वैर—विरोध है, उनसे खासतौर से क्षमा मांगनी है, क्षमायाचना करनी है।

सासू सोचे मैंने बहू को परेशान किया, बहू सोचे मैंने सासुजी को बहुत हैरान किया—सासूजी का अनादर किया, इस सोच के साथ एक—दूसरा, एक—दूसरे से क्षमायाचना करे।

नौकरों के साथ व्यवहार ठीक नहीं रहा तो उनसे क्षमायाचना करे। जिन—जिन के साथ वैर—विरोध है उनसे क्षमायाचना करे। आज होता क्या है— जिनसे कोई वैर—विरोध नहीं, उनसे बाहें फैला—फैला कर क्षमायाचना की जाती है और वैर—विरोध है वहां नजर तक नहीं जाती।

मैंने सवाईमाधोपुर में देखा— दो भाई आपस में कभी बात नहीं करते। शादी—विवाह का प्रसंग भी होता तो एक—दूसरा एक—दूसरे की देहली तक नहीं चढ़ता। मौत आदि के अवसर पर भी आने—जाने का कतई काम नहीं। वहां मैंने प्रतिज्ञा करवाई, प्रवचन समाप्त होने के पश्चात् बिना एक—दूसरे के पैर पड़े कोई नहीं उठे। प्रतिज्ञा के अनुसार प्रतिक्रमण के पश्चात् छोटा भाई बड़े भाई के पैर में गिर रहा है, बड़ा भाई छोटे भाई को बाजुओं में भरता है। एक दूसरे का वैर—विरोध समाप्त करने का महापर्व है यह संवत्सरी पर्व।

आप सुन कर ही न रहें, इस महापर्व का माहात्म्य समझें और जीवन में साकार करें। क्रोध की दवा क्षमा है— प्रेम है—शांति है। आप उपशम भाव से क्रोध का दमन करें तो आप अपना जीवन पवित्र—निर्मल—स्वच्छ बना सकेंगे।

क्षमा

श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

भगवान महावीर ने धर्मभवन में प्रवेश करने के लिये चार द्वार बताए हैं– **'चत्तारि धम्म दारा पण्णत्ता'**

धर्म के चार प्रवेश द्वार हैं– 1. क्षमा(धर्म का मूल उत्तम क्षमा है) 2. मुक्ति/निर्लोभता 3. ऋजुता/सरलता 4. मृदुता/कोमलता/शीतलता।

प्रश्न उत्पन्न होता है क्षमा का क्या अर्थ है? पहला अर्थ है सहिष्णुता, सहनशीलता। दूसरा अर्थ है मैत्री। कभी कभी दूसरों के कटु वचनों को सहना होता है। दूसरों के द्वारा कभी आक्षेप भी किये जाते हैं, निन्दात्मक वचन कानों में डाले जाते हैं और उत्तेजना पैदा करने वाले शब्द सुनाये जाते हैं। इनको सहन करना सहिष्णुता अथवा सहनशीलता है। संसार के समस्त जीवों के प्रति मित्र की भावना रखना "मैत्री" है। बहुत से मानव अहित करते हैं, कष्ट देते हैं व बुराई करते हैं फिर भी उनको मित्र समझना चाहिए।

क्षमा को उपशम भाव भी कहा गया है। जो उपशम भाव में लीन रहता है वह धर्म की आराधना करता है। कहा गया है–

'उवसमसारं खु सामण्णं'

श्रमण धर्म का सार है उपशम भाव।

क्षमा पृथ्वी को भी कहा जाता है। पृथ्वी का गुण है कि वह उसके ऊपर आये हुए तिनके, लकड़ी, गोबर को परिणत कर लेती है और हजम कर जाती है। इसी तरह ऊपर आयी हुई विकृत व दोषपूर्ण परिस्थितियों को हजम कर जाना, दूसरों के द्वारा पहुंचाए हुए कष्टों को सहन कर लेना और दण्ड देने की अभिलाषा रखे बिना सह लेना क्षमा है।

क्षमा मनोवीर–आत्मवीर का भूषण है। अनुभव साक्षी है कि चन्द मानव क्रोध का प्रसंग आने पर क्रोध नहीं करते, कोई गाली देता है तो मुस्करा देते हैं "उफान और तूफान में दृढ़ चट्टान की तरह शान्त भाव में रहते है। ऐसे व्यक्ति ही सच्चे वीर हैं।" कहा है– 'खमा पहुस्स' समर्थ मानव की क्षमा ही वास्तविक क्षमा है।

श्रमण सम्राट् भगवान महावीर क्षमा के परम उपासक थे। क्षमा पर्व का महत्त्वपूर्ण संदेश है कि जिसके साथ हमारा मन-मुटाव हो गया है, लड़ाई झगड़ा हो गया है तो सबसे पहले उसी से क्षमा याचना करनी चाहिए। हृदय पूरी तरह निःशल्य और शुचि हो जाना चाहिए। सम्वत्सरी (क्षमा पर्व) के पश्चात् नये सिरे से जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। हम कहते हैं–

"खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ।।"

अर्थात् सब जीवों को क्षमा करता हूँ। सब जीव मुझे क्षमा करें। मेरी सबके प्रति मैत्री है। किसी से वैर नहीं। यह आराधना का महत्त्वपूर्ण सूत्र है। अगर किसी भी व्यक्ति के प्रति मन में असहिष्णुता का भाव आ जाए, कलुषता का भाव जाग जाए, वह जाने या न जाने, किन्तु फिर भी अपनी ओर से क्षमा मांग कर शुद्धि कर लो, मैत्री को मत खोवो और उसे शत्रु मत मानो। यह महान् व्यक्तित्व की प्रक्रिया है।

भगवान महावीर ने श्रमणों के लिये आगम में स्पष्ट आज्ञा प्रदान की है–"**भिक्खू य अहिगरणं कटु तं अहिगरणं अवि ओसवेत्ता, नो से कप्पइ गाहावइ कुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा।**" **बृहत्कल्पसूत्र–चतुर्थ उद्देशक**

"हे साधक! यदि किसी श्रमण से किसी कारणवश तेरा कलह हो गया है तो जब तक तू क्षमायाचना न करले तब तक न आहार पानी के लिये, न शौचादि के लिये जा और न स्वाध्याय कर।"

श्रमण सम्राट् भगवान महावीर ने फरमाया "जिसके साथ तुम्हारा वैर विरोध हो गया है वह व्यक्ति तुम्हारा आदर करता है या नहीं, क्षमा करता है या नहीं उसके इन कृत्यों को मत देखो, किन्तु तुम अपनी ओर से क्षमायाचना कर लो और साथ ही उसे क्षमा भी दे दो।।"

क्षमा करने वाला व्यक्ति सब प्रकार के परीषहों को जीतने की शक्ति या सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

भ. महावीर से पूछा गया–

"खंतिएणं जीवे किं जणयइ?"

क्षमा से जीव क्या प्राप्त कर सकता है?

उत्तर दिया–

"खंतिएणं परीसहे जिणइ"–उत्तरा.सूत्र 29.47

क्षमा से परीषहों, कष्टों, कठिनाइयों को सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है।

क्षमा का महत्त्व सिद्ध करने के लिए आध्यात्मिक प्रकरण में दर्ज है– "एक मानव 66 करोड़ मासोपवास करता है और दूसरा मानव एक कटुक वचन शान्त भाव से सहन करता है तो उसका फल 66 करोड़ मासोपवास से भी अधिक होता है।"

स्टर्न नामक एक अंग्रेज लेखक ने भी लिखा है–

A Coward never forgives.
The brave only knows how to forgive.

कायर मनुष्य कभी क्षमा नहीं दे सकता है, वीर मानव ही क्षमा प्रदान करना जानता है।

कवि पोप ने स्पष्ट कहा है–

"To err is human, to forgive is divine"

"भूल हो जाना मानव का स्वभाव है, किन्तु उसे क्षमा कर देना दिव्यता है, देवी गुण है।" मनुष्यमात्र भूल का पात्र है, परन्तु जो क्षमा देता है वह देव तुल्य है।

महात्मा ईसामसीह को जब सूली पर लटकाया जा रहा था, तब उन्होंने कहा–

"Oh! Father forgive them, they do not know what they do"

परम पिता! इन्हें क्षमा करना। ये बेचारे नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।

बाइबिल के जूने करार में महात्मा ईसा मसीह ने कहा–

"प्रार्थना करने के लिये तुम देव मन्दिर में जाते हो, वहाँ पहुँच कर यदि तुम्हें यह स्मरण हो जाये कि मेरा अमुक पड़ौसी के साथ मनमुटाव है तो तुम आहुति पात्र को देव मन्दिर के द्वार पर छोड़ो और पहले जाकर पड़ौसी से मैत्री के बाद ही देवता के भेंट चढ़ाओ।"

एच.डब्ल्यू शा पाश्चात्त्य विद्वान ने लिखा है–

"There is no revenge so complete as forgiveness"

अपराधी से सम्पूर्ण बदला लेना हो, तो क्षमा ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

क्रूर से क्रूर व्यक्ति भी क्षमा शस्त्र से परास्त हो जाता है।

स्पेन ने कहा है–

"To return evil for good is devilish, to return good for good is humane, but to return good for evil is god like"

उपकार का बदला अपकार से देना आसुरीवृत्ति है, उपकार का बदला उपकार से देना मानुषीवृत्ति है और अपकार का बदला उपकार से देना यह सच्ची दिव्यता है।

एक श्रेष्ठ अंग्रेजी लेखक ने लिखा है–

"Never does the human soul appear so strong as when it forgives revenge and dares to forgive an injury"

जब मानव दूसरे से वैर लेने की वृत्ति को नष्ट करता है और उसके द्वारा किये गये अपराधों को क्षमा देने की हिम्मत करता है उस समय उस मानव की आत्मा इतनी बलवान प्रतीत होती है जितनी पहले कभी भी प्रतीत नहीं होती थी।

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., महात्मा गांधी, संत तुकाराम, मीरां और विनोबा का जीवन क्षमा का पाठ पढ़ाते हैं। हजरत मुहम्मद भी क्षमा के हिमायती थे।

क्षमा अपनी अनन्त शक्ति को पहिचानने का संदेश देती है–"अपकार पर अपकृति करना, अपराधी को अपराध से शक्तिहीन करना,

दुर्जन मानवों का कार्य है। अपकारी पर उपकार करना, अपराधी को अनुग्रह से वश में करना, क्षमा से आततताइयों का हृदय परिवर्तन करना यही उत्तम पुरुषों का कार्य है।''

क्षमाशील की बुद्धि विकासमान रहती है। क्षमा करने से मन में अद्भुत आनन्द, प्रसन्नता एवं प्रफुल्लता का अनुभव होता है।

क्षमा, स्वर्ग और मृत्युलोक के बीच का पुल है।

''क्षमावशीकृतो लोकः, क्षमया किं न साध्यते।''

क्षमा संसार का वशीकरण मन्त्र है। क्षमा से क्या सिद्ध नहीं होता। सबसे बडा तप क्षमा है–

''क्षान्तितुल्यं तपो नास्ति।''

क्रोध जहर है और क्षमा अमृत है। यही कारण है कि क्षमा को शाश्वत धर्म कहा है। क्षमा सर्वपापों का नाश करती है।

क्षमाशील वह मानव होता है जो दूसरों के दुर्वचन, दूसरों द्वारा पहुंचायी हुई हानि और उनके दुर्व्यवहार से उत्पन्न पीड़ा को पी जाने की अद्भुत आत्म-शक्ति रखता है।

महाभारत में कथन है– **''क्षमयेदं धृतं जगत्''**

संसार में क्षमा नहीं होती तो शायद यह जगत् अब तक टिका नहीं रहता। कब का जलकर भस्म हो जाता। क्षमा के बल पर ही सृष्टि में सुन्दरता और सुहावना पन बना हुआ है।

पाठकों से मेरा निवेदन है कि क्षमापन से अपना हृदय स्वच्छ करें और अपनी आत्मा को प्रेम से विभूषित करें।

–पूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय एवं
संरक्षक–अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

वे और हम

श्री दिलीप धींग जैन

उनके संबंध भी कटु,
हमारे मतभेद भी मधुर हैं।
उनका हंसना भी बेसुरा,
हमारे रोने में भी सुर है।
उनके गहने भी बेड़ियाँ,
हमारी बेड़ियां भी नूपुर हैं।
उनका जीना भी मरणवत्,
हमारे मरण में भी गुर है।
वे भय–निराशा से जकड़े हुए,
हम आस–विश्वास से भरपूर हैं।

–बम्बोरा–313706, जिला–उदयपुर (राज.)

प्रतिक्रमण : संकल्पना, परिपाटी एवं व्यवहार

श्री रणजीत सिंह कूमट

जैन साधना–पद्धति में प्रतिक्रमण का बहुत महत्त्व है। जैन परम्परा का यह विशिष्ट शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है पुनः लौटना या पीछे लौटना। ''अपनी मर्यादाओं का अतिक्रमण कर स्वभाव दशा से विभाव दशा में जाने पर स्वभाव दशा में प्रत्यागमन करना प्रतिक्रमण है'' (आचार्य देवेन्द्र मुनि–आवश्यक सूत्र : एक समीक्षात्मक अध्ययन)। आचार्य हेमचन्द्र के अनुसार ''शुभ योगों से अशुभ योगों में गये हुए अपने आपको पुनः शुभ योगों में लौटा लाना प्रतिक्रमण है'' (योग शास्त्र)। साधक के लिये प्रातः एवं सायंकाल प्रतिक्रमण कर जीवन का अन्तःनिरीक्षण करना व गहराई से चिन्तन करना साधना का आवश्यक अंग है। यह माना जाता है कि प्रतिक्रमण साधना का आवश्यक होने से जिस सूत्र में इसका निरूपण किया है उस सूत्र का नाम भी 'आवश्यक सूत्र' रखा है। एक अन्य दृष्टिकोण से आवश्यक की परिभाषा करते हुए अनुयोगद्वारचूर्णि में कहा गया है कि ''जो गुणशूय आत्मा को प्रशस्त भावों से आवासित करता है वह आवासक/आवश्यक है।''(सुण्णमप्पाणं तं पसत्थभावहि आवासेतीति आवासं–अनुयोगद्वार चूर्णि पृ. 14)

आवश्यक

प्रतिक्रमण की विधि में छः आवश्यक या छः कदम बताये हैं। इन आवश्यकों का संक्षिप्त विवेचन प्रतिक्रमण की प्रक्रिया के उद्देश्य व पृष्ठभूमि को उजागर करेगा।

1. **सामायिक**– प्रतिक्रमण प्रारम्भ करने का पहला आवश्यक या कदम है 'सामायिक'। यह शब्द जैन परम्परा का विशिष्ट शब्द है। सामायिक एक प्रक्रिया भी है और मनः स्थिति भी। प्रक्रिया के अनुसार निश्चित समय के लिए निश्चित स्थान पर रहकर मन, वचन एवं काया (मन, वाणी व शरीर) के व्यापार पर नियन्त्रण रखना या अशुभ व्यापार में जाने से रोकना सामायिक है मनःस्थिति के दृष्टिकोण से राग व द्वेष से हट कर मन का समभाव में रमण, पापमय व्यापार से दूर हट कर स्व–स्वरूप में या समता में अवस्थित होना ही सामायिक है। विषमता से समता या समभाव में आए बिना किसी भी प्रकार की साधना करना असंभव है, अतः प्रतिक्रमण का प्रथम आवश्यक है ''सामायिक''।

2. **चतुर्विंशतिस्तव**–सामायिक के बाद दूसरा आवश्यक है चतुर्विंशतिस्तव अर्थात् चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति। तीर्थंकर जिन्होंने समय–समय पर धर्म की प्ररूपणा व नये रूप से प्रतिस्थापना की, समाज को नई दिशा दी, जन

कल्याण के लिये घर से निष्क्रमण कर अज्ञानतम का नाश कर लोगों को नई रोशनी दी उनकी स्तुति साधक में समर्पण का भाव लाती हे। समर्पण साधक के अहं, जो सब रोगों व उपाधियों की जड़ है, को हटाने या कम करने का उपाय है।

3. वन्दना– तीसरा आवश्यक है 'वन्दना'। गुरु को वन्दन किये बिना किसी भी प्रकार की उपलब्धि संभव नहीं है। वन्दना विनय का सूचक और धर्म का मूल है। विनय से अहं का नाश होता है। गुरु यानी सद्गुणी को नमन का अर्थ है सद्गुणो को अपनाना। स्वार्थ भावना, आकांक्षा या भय के बिना शुद्ध भक्ति भाव से वन्दन ही सार्थक वन्दन है। विनय की स्थिति में आने के बाद ही प्रतिक्रमण अर्थात् स्व में आगमन की संभावना बनती है।

4. प्रतिक्रमण– 'प्रतिक्रमण' चौथा आवश्यक है जिसमें विगत समय (दिवस या रात या पक्ष या चातुर्मास या वर्ष) में जो स्खलनाएँ हुई हों, नियम या व्रत टूटे हों, कुशील या दुर्व्यवहार किया हो, पापाचार किया हो यथा– किसी जीव की हिंसा की हो, असत्य भाषण किया हो, चोरी की हो, ब्रह्मचर्य की स्खलना की हो, परिग्रह (स्वयं द्वारा निर्धारित सीमा से अधिक वस्तुओं को रखना) सेवन किया हो आदि। इन भूलों या स्खलनाओं, चाहे जानकर की हों या अनजाने में हुई हों, की आलोचना करे, निन्दा करे, पश्चात्ताप करे और भविष्य में पुनरावृत्ति न करने का संकल्प ले। अपने आचरण के सूक्ष्म निरीक्षण और भूल या अतिचार की आलोचना से दोषों का निवारण व गुणों की अभिवृद्धि होती है। इससे व्यक्ति हर वक्त अपने आचरण के प्रति जाग्रत रहता है और कुशील से बचता है।

स्वर्गीय आचार्य देवेन्द्र मुनि जी के अुनसार "प्रतिक्रमण जीवन को सुधारने का श्रेष्ठ उपक्रम है, आध्यात्मिक जीवन की धुरी है, आत्मदोषों की आलोचना करने से पश्चात्ताप की भावना जाग्रत होती है और उससे सभी रोग जल कर नष्ट हो जाते हैं। पापाचरण शल्य के सदृश है। यदि उसे बाहर नहीं निकाला गया तो उसका विष अन्दर बढ़ता चला जायेगा और वह विष साधक के जीवन को बर्बाद कर देगा।"

निःशल्य होने के लिये सब जीवों से जाने अनजाने में उनके प्रति हुये अपराधों के लिये क्षमायाचना और मैत्री भावना की उद्घोषणा एक आवश्यक कदम है। सब जीवों के प्रति मैत्री निम्नांकित पाठ में उद्घोषित है–

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती में सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणई।।

अर्थात् सब जीवों को मैं क्षमा करता हूँ, सब जीव मुझे क्षमा करें, सब प्राणियों से मेरी मैत्री है और मेरा किसी से वैर नहीं है।

विश्व के समस्त प्राणियों से मैत्री भावना की उद्घोषणा केवल

औपचारिकता नहीं है वरन् पापों से निवृत्त होने पर मन में जो लघुता और हल्कापन आता है उसी के परिणामस्वरूप जाग्रत मैत्री भावना का प्रकटीकरण है।

5. कायोत्सर्ग– 'कायोत्सर्ग' जैन साधना–पद्धति का विशष्टि शब्द है जिसका अर्थ है काया का उत्सर्ग या त्याग। यहां शरीर त्याग का अर्थ मृत्यु नहीं है, वरन् देहासक्ति या शरीर के प्रति ममता का त्याग है।

प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य कायोत्सर्ग है, क्योंकि यही एक माध्यम है जिससे हम अपने अन्तर्मन में या स्वभाव में स्थित हो सकते हैं। प्रतिक्रमण प्रारम्भ करने पर अनुमति लेने का पाठ जो निम्न प्रकार बोला जाता है, उससे भी स्पष्ट है कि प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य कायोत्सर्ग ही है–

"इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे देवसियं (रायसियं) पडिक्कमणं ठाएमि देवसियं (रायसियं) नाणदंसणचरित्ताचरित्ततव–अइयार–चिंतणत्थं करेमि काउस्सग्गं"

अर्थ– भंते! आपकी आज्ञा का सम्मान करते हुए मेरी इच्छा है कि मैं दिन के लिये (रात्रि के लिये) प्रतिक्रमण में स्थापित होकर दिन भर में (रात्रि में) ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप के आराधन में हुए अतिचारों के संबंध में चिन्तन करने के लिये कायोत्सर्ग करूं।

हमारे दुःखों का मूल कारण है शरीर व इन्द्रिय-सुख के प्रति ममता, जिसके लिए हम क्या–क्या उपाय और परिश्रम नहीं करते? सुख के साधनों को एकत्र करने में ही सारा जीवन बिता देते हैं। शरीर के साथ शरीर के सुख के साधनों के प्रति आसक्ति बढ़ जाती है। और कभी–कभी ये सुख के साधन शरीर से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं, साधन ही लक्ष्य बन जाते हैं। साधनों के संग्रह एवं संरक्षण के लिए अत्यधिक परिश्रम कर शरीर का भी होम कर देते हैं। एक कामना की पूर्ति अनेक नई कामनाओं को जन्म देती है और सभी कामनाओं की पूर्ति असंभव है। कामना अपूर्ति से उत्पन्न तनाव से शरीर में अनेक बीमारियाँ घर कर लेती हैं, जिससे साधनों से सुख प्राप्त करने की बजाय दुःख का दौर शुरू हो जाता है।

धर्म के जो भी पैगम्बर, अवतार या तीर्थंकर हुए, वे बहुत बड़े चिकित्सक साबित हुए हैं, क्योंकि उन्होंने यह जान लिया कि मनुष्य के दुःख के मूल कारण है– "बीमार मन" और मन का इलाज ही सही व स्थायी इलाज है। जब तक मन बाहरी साधनों या वस्तुओं से आसक्त है, मन का इलाज संभव नहीं है। साधनों से आसक्ति हटाने के लिये शरीर से ममता या आसक्ति हटाना आवश्यक है, क्योंकि साधनों का संग्रह शरीर के लिये ही किया जाता है। शरीर के प्रति ममता साधना में सबसे बड़ी बाधा है। शरीर से ममता भाव हटाना, देह में रहकर भी देहातीत स्थिति में हो जाना अर्थात्

कायोत्सर्ग करना है। कायोत्सर्ग को व्रणचिकित्सा अर्थात् घावों की चिकित्सा भी कहा है। मन में उत्पन्न विकारों से हुए घावों को ठीक करने के लिये कायोत्सर्ग एक प्रकार का मरहम है। जैन आगम के महत्त्वपूर्ण सूत्र 'आवश्यक सूत्र' में कायोत्सर्ग में स्थापित होने का सूत्र निम्न प्रकार है–

"तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं"–आवश्यकसूत्र

अर्थ– जीवन को अधिकाधिक परिष्कृत करने, प्रायश्चित्त करने, विशुद्धि करने, शल्य से मुक्ति पाने और पाप कर्म का निर्घात अर्थात् नाश करने के लिये कायोत्सर्ग करता हूँ।

दैनिक जीवन में जो भी कार्य किये जाते हैं और जिनके पीछे हमारे कषाय यथा– क्रोध, मान, माया, लोभ की प्रेरणा होती है, वे मन पर संस्कार कायम करते हैं, अपराध भाव को जन्म देते हैं और क्रिया–प्रतिक्रिया की शृंखला को जन्म देते हैं। ये ही कर्म संस्कार हमारे मन के शल्य या कांटें बन कर मन को बीमार करते हैं। इन शल्यों से मुक्ति पाना ही विशुद्धिकरण एवं कर्म का निवारण है। यह कायोत्सर्ग से संभव है।

प्रायश्चित्त का साधारण अर्थ है– गलत किये का पश्चात्ताप और भविष्य में पुनः न करने का संकल्प। परन्तु सही अर्थ है चित्त में स्थित होकर चित्त को देखना। प्रायश्चित्त करने से मन का विशुद्धिकरण होता है और इसी से मन के शल्य यानी कांटे निकल जाते हैं और व्यक्ति शल्य से मुक्त हो जाता है। इससे जीवन परिष्कृत होता है और व्यक्ति उत्तरोत्तर प्रगति करता है।

यह कार्य अन्तर्मुखी हुये बिना संभव नहीं है। अन्तर्मुखी होने का अर्थ है बाहर से अपने आपको मोड़ कर अन्दर झांकना या स्वनिरीक्षण करना। हम दूसरों की त्रुटियाँ तो बहुत आसानी से देखते हैं व चर्चा भी करते हैं, परन्तु अपनी ओर कम ही देखते हैं और कोई हमारे दोष इंगित करे तो आगबबूला हो जाते हैं या तिलमिला उठते हैं। स्वनिरीक्षण वह विधि है जिससे हम स्वयं को देख कर स्वयं ही अपना सुधार करते हैं।

कायोत्सर्ग वह विधि है जिससे अवचेतन मन तक पहुंच कर मन की गहराइयों तक जा सकें और संस्कार मुक्त हो सकें। कायोत्सर्ग अर्थात् काया का उत्सर्ग या शरीर का ममत्व कम होने पर शरीर का शिथिलीकरण होता है और तनावों से मुक्ति पाते हैं। देह की ममता से हट कर देह पर उठने वाली संवेदनाओं को निष्पक्ष भाव से देखने लगते हैं और मन ऐसी स्थिति में आ जाता है जैसे देह किसी अन्य की है और जो भी घटित हो रहा है उसे बाहर से उदासीन भाव से देख रहे हैं। अब तक देह पर होने वाली घटनाओं को मन निष्पक्ष भाव से न देखकर यह चुनाव करता था कि यह संवेदना या घटना अच्छी है या बुरी और इस प्रकार राग–द्वेष में फंस जाता था। जो प्रिय है वह

और चाहिये, जो अप्रिय है वह हटनी चाहिये। इसी प्रतिक्रिया में और दुःख या सुख के भोगने में ही जीवन बीत जाता है, परन्तु अब कायोत्सर्ग में भोगने की बजाय केवल द्रष्टा भाव से देखना है और भोक्ता भाव से मुक्ति पानी है। इसी अभ्यास से देहातीत हो सकते हैं।

बिना अन्तर्मुखी हुए हम यदि स्वनिरोक्षण करते हैं तो स्वभावानुसार अपनी भूलों का सही रूप से निराकरण करने की बजाय उनका औचित्यीकरण (Justification) करने लग जाते हैं और उन परिस्थितियों या व्यक्तियों को दोष देने लगते हैं जिनकी वजह से हमने कोई अकरणीय कार्य किया। यदि क्रोध किया तो उन परिस्थितियों को दोष देंगे या उन व्यक्तियों को जिम्मेदार ठहरायेंगे जिनकी वजह से क्रोध आया। औचित्यीकरण का दौर चलने पर निशल्यीकरण संभव नहीं है। इसके लिये ऐसी तकनीक का उपयोग करना पड़ेगा जिससे सचेत मन का उपयोग कम से कम हो, क्योंकि सचेत मन प्रत्येक कार्य का औचित्य ढूंढ लेता है। यह इसका स्वभाव बन चुका है।

मनोवैज्ञानिकों की मान्यता है कि जाग्रत मस्तिष्क कुल मस्तिष्क का बहुत छोटा हिस्सा है और बहुत बड़ा हिस्सा है सुषुप्त मस्तिष्क, जो कभी सोता नहीं और हमारी विभिन्न गतिविधियों और आवेगों पर नियन्त्रण रखता है। जब तक सुषुप्त मस्तिष्क पर हमारा नियन्त्रण नहीं होगा और इसके प्रति जागृति नहीं होगी हमारे कार्यकलापों व आवेगों पर हमारा नियन्त्रण नहीं होगा। कायोत्सर्ग में सुषुप्त मन तक पहुंचने का प्रयास होता है। जिस सुषुप्त मस्तिष्क या अवचेतन मन में पूर्व से संस्कार भरे हैं और जिससे हमारे आवेग (Emotions) संचालित या नियन्त्रित होते हैं, उसके प्रति जागरूक हुए बिना हम अपने मन व शरीर पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण नहीं कर सकते।

अवचेतन मन में बहुत से विचार व संस्कार जन्म (एवं जन्मान्तर) से भरे पड़े हैं और हमारे कई कृत्य ऐसे होते हैं जिनको हम सचेत रूप से करते ही नहीं और हो जाने के बाद ताज्जुब या पश्चात्ताप करते हैं कि यह कैसे हो गया। अतः सही रूप से निःशल्य होने के लिये अवचेतन मन तक पहुंचना आवश्यक है और यह कायोत्सर्ग के माध्यम से संभव है।

कायोत्सर्ग में जब शरीर शिथिल होता है तब जाग्रत मस्तिष्क भी शिथिल हो जाता है, परन्तु सुषुप्त मन सक्रिय रहता है और उसकी गतिविधियों को साक्षीभाव से देखने से आवेगों व संस्कारों को भी देखने का मौका मिलता है। संस्कार उभर कर शरीर पर संवेदनाओं के रूप में आते हैं जैसे शरीर में कहीं दर्द, कहीं फड़कन, खुजलाहट, सरसराहट या कोई सुखद संवेदना जैसे दर्द का कम होना, स्फूर्ति होना, चिन्मयता आदि। इन संवेदनाओं के प्रति सजग रह कर केवल यह देखना है कि ये संवेदनाएँ

अनित्य हैं और इनके प्रति क्या राग और क्या द्वेष। यों संवेदनाएं देखते–देखते संस्कारों व देह के व्यापार से पार हो जाते हैं, परन्तु असावधानी होने पर या देखने की प्रक्रियाा न जानने पर प्रतिक्रिया कर बैठते है और संस्कार बनाने की नई शृंखला प्रारम्भ कर लेते हैं, प्रतिक्रिया में जीना बंधन का मार्ग है और सजगता से देख कर द्रष्टा भाव में रहना वीतरागता की ओर बढ़ने का मार्ग है।

6. प्रत्याख्यान– प्रतिक्रमण का अन्तिम आवश्यक या चरण है "प्रत्याख्यान" जिसका अर्थ है त्याग करना। भविष्य के प्रति मर्यादा के साथ अशुभ योग से निवृत्ति और शुभ योग में प्रवृत्ति का आख्यान करना प्रत्याख्यान है। इच्छाएँ अनन्त हैं और पदार्थों में आसक्ति बनी रहने से अशान्ति बनी रहती है, अतः शान्ति प्राप्त करने के लिये आसक्ति और तृष्णा नष्ट करना आवश्यक है और इसका उपाय है प्रत्याख्यान। प्रत्याख्यान से व्रत को धारण किया जाता है जिससे संयम या संवर होता है और नये कर्मों के बंधन का निरोध होता है।

परिपाटी या व्यवहार

प्रत्येक साधु एवं व्रतधारी श्रावक के लिये प्रातः एवं सायंकाल नियमित रूप से एवं उपर्युक्त विधि से प्रतिक्रमण करना नितान्त आवश्यक है। प्रतिक्रमण के विभिन्न आवश्यकों के लिये निश्चित पाठ हैं उनका उच्चारण एवं निर्धारित आसन में बेठ कर वंदना, ध्यान और कायोत्सर्ग करना होता है तथा धारणा के अनुसार प्रत्याख्यान लेना होता है। प्रतिक्रमण में एवं इसके अन्त में सभी जीवों से एवं अपने से बड़ों से क्षमायाचना करते हैं। यह प्रक्रिया प्रायः एक घंटे में पूरी हो जाती है। पाक्षिक, चातुर्मासिक एवं सम्वत्सरी के प्रतिक्रमण में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है, क्योंकि कायोत्सर्ग में लोगस्स का पाठ आमतौर पर चार बोला जाता है, परन्तु पाक्षिक प्रतिक्रमण में आठ बार, चातुर्मासिक में 12 बार व सम्वत्सरी प्रतिक्रमण में 20 बार या 40 बार बोलने या मन ही मन उच्चारने की परिपाटी है। मन्दिरमार्गी प्रथा में सम्वत्सरी के प्रतिक्रमण में करीब तीन से चार घंटे लगते है।

प्रतिक्रमण के विभिन्न पाठ प्राकृत भाषा में हैं और जिनको मूल व अर्थ ज्ञात हैं वे तो पाठ की भावना के अनुसार मन में अपने दोषों का चिन्तन कर पश्चात्ताप कर सकते हैं व सही रूप से "मिच्छामि दुक्कडं" दे कर अपने मन को निर्मल कर सकते हैं। परन्तु जो प्राकृत नहीं जानते अथवा पाठ याद न होने से प्रतिक्रमण कराने वाले के साथ केवल "मिच्छामि दुक्कडं" का पाठ बोलते हैं, वे प्रतिक्रमण की ऊपरी क्रिया पूरी करते हैं, निहित भावना के अनुसार स्व में आगमन नहीं कर पाते।

परिपाटी के अनुसार पाठ बोलने के कारण अधिक ध्यान पाठ की शुद्धता, सही क्रम व सही उच्चारण पर रह जाता है और कायोत्सर्ग में भी

काया का उत्सर्ग करने की बजाय लोगस्स का पाठ सही व निर्धारित संख्या में बोलने पर लगा रहता है। स्व में आगमन कर स्व में स्थित होने का तो मौका ही नहीं मिलता। स्व में स्थित हुए बिना व सही रूप से कायोत्सर्ग किये बिना प्रतिक्रमण के मूल उद्देश्य की प्राप्ति नहीं होती। प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य ही कायोत्सर्ग है, क्योंकि यही एक माध्यम है जिससे हम अपने अन्र्तमन में स्थित हो सकते हैं। प्रतिक्रमण प्रारम्भ करने पर अनुमति लेने के पाठ से स्पष्ट है कि प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य कायोत्सर्ग है। आज्ञा लेते हुए कहते हैं "भंते! आपकी आज्ञा का सम्मान करते हुए मेरी इच्छा है कि मैं दिन के लिये (रात्रि के लिये) प्रतिक्रमण में स्थापित होकर दिन भर में(रात्रि में) ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप के संबंध में हुए अतिचारों के संबंध में चिन्तन करने के लिये कायोत्सर्ग करूं"

प्रतिक्रमण का मूल प्राण है कायोत्सर्ग और परिपाटी में उसे मात्र पांचवें आवश्यक में समेट कर रख दिया गया। वह भी मात्र चार से 20 लोगस्स के पाठ मन में गुनगुनाने के लिये। कायोत्सर्ग की मूल भावना को ही भुला दिया गया और इससे प्रतिक्रमण के मूल उद्देश्य की प्राप्ति से हम वंचित हो गये।

प्रतिक्रमण के अंत में सबसे क्षमायाचना व सब जीवों से मैत्री भावना की उद्घोषणा भी एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जिससे मन में किसी के प्रति आई दुर्भावना या किसी के प्रति किये अप्रिय व्यवहार के लिये क्षमायाचना कर संबंधों को मधुर बनाने का एक अच्छा अवसर है, परन्तु इसे भी मात्र परिपाटी एवं औपचारिकता में बदल दिया गया है। जिनसे हमारे मधुर संबंध हैं उनसे हम क्षमायाचना करते हैं, परन्तु जिनसे कटुता है उनसे क्षमायाचना का प्रयास ही नहीं करते। यह बात न केवल श्रावकों में अपितु साधु–साध्वियों में भी देखी जाती है। शास्त्रों में उल्लेख है कि सुबह की भूल की क्षमायाचना शाम तक कर लेनी चाहिये और शाम की भूल की क्षमायाचना सुबह तक। यदि इसमें चूक हो जावे तो पाक्षिक प्रतिक्रमण पर और यदि इसमें भी चूक हो जावे तो चातुर्मासिक प्रतिक्रमण पर क्षमायाचना कर लेनी चाहिये। यह भी न हो तो संवत्सरी के प्रतिक्रमण पर क्षमायाचना अवश्य कर लेनी चाहिये। यदि इस मौके पर भी नहीं किया तो ऐसा कहा गया है कि व्यक्ति का सम्यक्त्व चला जाता है। इतनी स्पष्ट उद्घोषणा की भी अनदेखी कर क्षमायाचना मात्र उनसे की जाती है जिनसे मधुर संबंध है या जिनके प्रति कोई कटु व्यवहार हुआ ही नहीं है।

संकल्पना और परिपाटी में समन्वय

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संकल्पना और वर्तमान परिपाटी एवं व्यवहार में बहुत बड़ी खाई है और इससे वांछित फल की प्राप्ति नहीं

होती। अतः आवश्यक है कि वर्तमान परिपाटी एवं व्यवहार की समीक्षा की जाय व मौलिक संकल्पना के अनुरूप व्यवहार को सुधारा जाय। सभी आचार्यों व विद्वद्जनों से प्रार्थना है कि प्रतिक्रमण की मूल भावना के अनुरूप परिपाटी की समीक्षा एवं सुधार कर साधकों को सही रूप से कायोत्सर्ग में स्थित होने की कला सिखायें और प्रतिक्रमण से अपेक्षित लाभ, "निःशल्यीकरण, विशुद्धिकरण" प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करें।

—सेवानिवृत्त आई.ए.एस.,
ए 201, दशरथ मार्ग, हनुमान नगर, जयपुर (राज.) 302021

जीवन में बदलाव

श्री आनन्दराज घीसुलाल तलेसरा

- आयु कम है। समय थोड़ा है, काम बहुत है। शरीर क्षीण हो रहा है। ऊर्जा कम हो रही है, तेज घट रहा है। तुमको जो कुछ भी करना है जप, तप, व्रत-उपवास, ध्यान—समाधि, दान-पुण्य, जल्दी से जल्दी कर लो। शीघ्र से शीघ्र कर लो, तत्काल कर लो, वरना समय बीतने पर कुछ नहीं होगा। केवल पश्चात्ताप ही हाथ लगेगा।
- मनुष्य का पागलपन देखो। अच्छे कामों को तो टालता जाता है कल पर और बुरे कामों को करता जाता है तत्काल। बुरे कामों का ढेर लग जाता है और अच्छा काम एक भी नहीं हो पाता। फिर दूसरी मूढता देखो। मनुष्य बैठा बैठा सोचता रहता है। कोई चमत्कार हो जाये। कोई जड़ी बूटी मिल जाये। कोई औषधि मिल जाये, कोई दवाई मिल जाये, कोई वैद्य मिल जाये। कोई चिकित्सक मिल जाये, कोई हकीम मिल जाये। जो जीवन को सुख शांति से भर दे, जो जीवन को सुख—समृद्धि से भर दे, जो जीवन को अमर कर दे।
- इतना ही नहीं वह इससे भी दो कदम आगे बढ़कर पागलपन की हद कर देता है। नासमझी की बातें करने लगता है, मंत्र करता है, तंत्र करता है, यंत्र करता है, धागा करता है, ताबीज करता है, टोना करता है, टोटका करता है, मड़ी मसानी पूजता है, भूतप्रेतों को बुलाता है। सोचता है कि शायद कोई चमत्कार कर देगा। मेरा जीवन बदल जायेगा।
- स्मरण रखो। जीवन जब भी बदलेगा, तुम्हारी ऊर्जा से बदलेगा। तुम्हारी शक्ति से बदलेगा, तुम्हारे संकल्प से बदलेगा, तुम्हारे दृढ़निश्चय से बदलेगा। तुम्हारी तपस्या और तत्त्व ज्ञान से बदलेगा, तुम्हारी श्रद्धा से बदलेगा, तुम्हारे समर्पण से बदलेगा। तुम्हारे त्याग से बदलेगा।
- जीवन बातों से नहीं बदलेगा। दंभ—पांखड से नहीं बदलेगा। दिखाने से नहीं बदलेगा। प्रदर्शन से नहीं बदलेगा, रोने धोने से नहीं बदलेगा। जीवन जब भी बदलेगा, सत्य से बदलेगा, साधना से बदलेगा, सरलता से बदलेगा, प्रेम से बदलेगा।

—ई—2/13, जलनिधि हाउसिंग सोसायटी,
बांगुर नगर, गोरेगांव (प.), मुम्बई—400090

पर्युषण

श्री पी.एम. चोरड़िया

(1)

1. प्रश्न– पर्युषण का अर्थ क्या है?

उत्तर– 1. कषाय को उपशम करना, शान्त करना (पर्युपशमन)

2. सब ओर से सिमट कर एक स्थान में निवास करना। आत्मा के निकट रहना (परिवसण)

3. अन्तर ज्योति को जगाने की साधना में संलग्न होना।

2. प्रश्न– 'पर्युषण' शब्द का संधि विच्छेद कर उसका अर्थ कीजिए।

उत्तर– परि+उषण। 'परि' का मतलब होता है चारों ओर से, सब तरफ से तथा 'उषण्' का अर्थ है दाह। जिस पर्व में कर्मों का दाह/ विनाश किया जाए वह पर्युषण है। वस् धातु से बनाने पर आत्मा के निकट में निवास करना भी है।

3. प्रश्न– पर्युषण शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइये।

उत्तर– 1. पज्जुसणा 2. पज्जोसमणा 3. पज्जोसवणा 4. परिजुसणा 5. परिवसणा 6. पज्जुवासणा 7. परियायठवणा 8. पज्जूसण।

(2)

1. प्रश्न– पर्व का प्रचलित अर्थ क्या है ?

उत्तर– हर्ष, उल्लास, आनन्द, आमोद–प्रमोद।

2. प्रश्न– पर्युषण पर्व आत्मा का पर्व है– यह क्यों कहा गया है?

उत्तर– पर्युषण पर्व विशुद्ध आध्यात्मिक पर्व है। इसमें आत्म-निरीक्षण, आत्म-चिन्तन, आत्म-शुद्धि, आत्म-मन्थन एवं आत्म-रमण की विशुद्ध प्रक्रियाएं निहित हैं। पर्युषण पर्व में धन, परिजन या भौतिक साधनों को कोई अवकाश नहीं है और न ही एहलौकिक या पारलौकिक सुखों का स्थान है। यह एक मात्र आत्मा का विशुद्ध आत्म पर्व है।

3. प्रश्न– कल्प किसे कहते हैं और पर्युषण कौनसा कल्प है?

उत्तर– आचार्य उमास्वाति के अनुसार जिस कार्य या आचरण से ज्ञान, शील, तप आदि की वृद्धि हो और उनके विघातक दोषों का नाश हो, वह कल्प है।

बृहत्कल्प भाष्य में दस कल्पों का वर्णन है। पर्युषणकल्प दसवां कल्प है।

(3)

1. प्रश्न–दिगम्बर परम्परा में दशलक्षण महापर्व किन नामों से मनाये जाते

हैं?

उत्तर–1. उत्तम क्षमा 2. उत्तम मार्दव 3. उत्तम आर्जव 4. उत्तम सत्य 5. उत्तम शौच 6. उत्तम संयम 7. उत्तम तप 8. उत्तम त्याग 9. उत्तम आकिंचन्य 10. उत्तम ब्रह्मचर्य।

2. **प्रश्न**– पर्युषण के आठ दिनों में श्रमणों के लिये विशेष करणीय कृत्य क्या है?

उत्तर– 1. सांवत्सरिक प्रतिक्रमण 2. केश लोच 3. यथाशक्ति तपश्चरण 4. आलोचना 5. क्षमापना।

3. **प्रश्न**– उत्तराध्ययन सूत्र (11/4–5) में कौनसी आठ बातें बताई गयी हैं, जिनका यदि पर्युषण पर्व में अभ्यास किया जाए तो जीवन में नया प्रकाश व नई चेतना की स्फुरणा हो सकती है?

उत्तर– 1. शांति (अहस्सिरे) – हंसी मजाक आदि नहीं करना। इससे वाणी का संयम सधता है।

2. इन्द्रिय दमन– इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों में संयमित रखने की प्रवृत्ति।

3. स्वदोष दृष्टि– अपने दोषों और अवगुणों पर ध्यान देना, किसी का मर्म उजागर न करना।

4. सदाचार– आचार में कहीं दोष न लगने देना।

5. ब्रह्मचर्य– ब्रह्मचर्य का पालन करना।

6. अलोलुपता– रस आदि में लोलुप न होना।

7. अक्रोध– क्रोध का वर्जन करना, क्षमा रखना।

8. सत्याग्रह– सत्य में दृढ रहना।

(4)

1. **प्रश्न**–पर्युषण पर्व आष्टाह्निक पर्व के नाम से क्यों मनाया जाता है?

उत्तर– वर्तमान में यह पर्व आठ दिनों तक मनाया जाता है, इसलिये यह आष्टाह्निक अर्थात् आठ दिनों का पर्व कहलाता है।

2. **प्रश्न**–जैन साहित्य में आठ की संख्या क्यों मांगलिक मानी गई है?

उत्तर–प्राचीन काल में आठ दिन के उत्सव होते थे तथा किसी भी शुभ कार्य में आठ का योग होना अच्छा मानते थे। मंगल आठ माने गये हैं। सिद्ध भगवान के भी आठ गुण बताये हैं। साधु की प्रवचन माता आठ है। संयम के भी आठ भेद बताये गये हैं। योग के आठ अंग हैं। आत्मा के रुचक–प्रदेश भी आठ हैं। इस प्रकार आठ की गणना बड़ी महत्त्वपूर्ण रही है।

3. **प्रश्न**– पर्युषण को 'पागइया' (प्राकृतिक) क्यों कहा गया है?

उत्तर– पागइया का संस्कृत रूप प्राकृतिक होता हे। प्राकृतिक शब्द

स्वाभाविकता का सूचक है। विभाव अवस्था का परित्याग कर स्वभाव अवस्था में परिरमण करना ही पर्युषण की साधना का मूल हार्द है। वह विकृति से प्रकृति में आना है, विभाव से स्वभाव में आना है, इसलिए उसे 'पागइया' (प्राकृतिक) कहा गया है।

(5)

1. **प्रश्न**– पर्युषण पर्व किसका प्रतीक है?

उत्तर– पर्युषण पर्व जागरण, प्रतिगति और प्रगति का प्रतीक है। इस अवसर से प्रेरणा पाकर व्यक्ति अपने अन्तश्चक्षुओं का उद्‌घाटन करे, अंतरविवेक का जागरण करे और हर व्यवहार में जागरण की मुद्रा रखे।

प्रतिगति और प्रगति का संबंध गति से है। चलते चलते जहां यह अनुभव हो कि मैं गलत मार्ग पर चल रहा हूँ। वहीं से वापस मुड़ जाना प्रतिगति है। गलत मार्ग से हटकर सही मार्ग पर आगे बढ़ना प्रगति है।

2. **प्रश्न**– पर्युषण पर्व अप्रमाद (जागरूकता) में प्रवेश का पर्व है' यह कथन किस प्रकार सही है?

उत्तर– अप्रमाद ही मूल धर्म है। अप्रमाद का अर्थ ही जागरूकता है। अप्रमत्त चित्त की जो अवस्थाएँ होती हैं, उन्हें हम क्षमा, शांति, मुक्ति, आर्जव, मार्दव, सत्य, शील, तप, ब्रह्मचर्य आदि कहते हैं। अप्रमाद अवस्था के ही परिणाम प्रतिक्रमण, प्रायश्चित्त, ध्यान आदि अवस्थाएं हैं। अप्रमाद का जागरण ही शुद्ध चेतना में प्रवेश का द्वार है। पर्युषण पर्व अप्रमाद में प्रवेश का पर्व है। जागरूकता प्रकट हो जाए, यही पर्युषण पर्व का साध्य है। क्षमा आदि धर्म इसके परिणाम हैं। जागरूकता के बिना किया गया अक्रोध–सरलता आदि अभिनय हो सकते हैं, वास्तविकता नहीं।

3. **प्रश्न**– पर्वाधिराज पर्युषण का पावन आदर्श क्या है?

उत्तर– 'मित्ती मे सव्वभूएसु'।

(6)

1. **प्रश्न**– प्राचीन जैनाचार्यों ने पर्युषण पर्व के ऐसे कौन से पांच सुकृत्य बताये हैं,जो समाज शुद्धि के द्योतक हैं?

उत्तर– 1. आमारि–घोषणा 2. साधर्मिक वात्सल्य 3. पारस्परिक क्षमापना 4. सामूहिक तपस्या 5. चैत्य (ज्ञान) परिपाटी।

2. **प्रश्न**– पर्युषण पर्व की मुख्य साधना क्या है?

उत्तर– पर्युषण पर्व की मुख्य साधना है– प्रतिक्रमण, आलोचना एवं क्षमापना। प्रमाद के कारण व्रतों की मर्यादा का अतिक्रमण हो गया हो, किसी प्रकार के दोष का आसेवन हो गया हो, तो उस प्रमाद–कषाय से हटकर अपने स्वरूप एवं स्वभाव में लौट आना प्रतिक्रमण है और दोषों

का प्रायश्चित्त करके पुनः दोष सेवन नहीं करने का संकल्प करना आलोचना है और अपने व्यवहार से किसी का मन दुःखा हो, तो उससे निःशल्य भाव से क्षमा मांगना क्षमापना है। यही अध्यात्म-साधना और पर्वाधिराज पर्युषण की आराधना है।

3. **प्रश्न**– पर्युषण पर्व का संदेश क्या है?

उत्तर– कषाय भाव का परित्याग करके वीतराग भाव की ओर कदम बढ़ायें।

(7)

1. **प्रश्न**– **समता भावां में रमूं, नहीं राग नीं द्वेष।**
सब जीवा सूं मित्रता, उमड़ै प्रेम हमेश।।
उपर्युक्त दोहे का भावार्थ क्या है?

उत्तर– मेरा किसी के प्रति न राग है न द्वेष। मैं सदा समता भाव में रमण करता रहूँ। सब जीवों से मेरी मित्रता है। सदैव उनके प्रति प्रेम उमड़ता रहे।

2. **प्रश्न**–

पर्युषण

निज का निज के पास वास ही
पर्व पर्युषण है मंगलमय।
शुद्धाराधन से होता है,
निज पर सबका जीवन निर्भय।।
पर्युषण के मुक्ति पर्व में,
जब भी टूटेंगे ये बंधन।
होगा दूर तभी जगती से,
जन–मन के द्वन्दों का क्रन्दन।।

उपर्युक्त पद्य के रचयिता कौन हैं?

उत्तर– उपाध्याय कवि अमर मुनि जी।

3. **प्रश्न**– **सब परवां रो राजवी, पज्जुषण हितकार।**
जन–जन रै घर जाय नै, झुक झुक करां जुहार।।
उपर्युक्त दोहे के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर– डॉ. नरेन्द्र भानावत।

(8)

1. **प्रश्न**– पर्युषण आत्म-जागरण का क्या संदेश देता है?

उत्तर– पर्युषण आत्म-जागरण का संदेशवाहक है। वह साधक को उद्बोधन देता है कि तू आत्मा है, अनन्त शक्ति का पुंज है, तू अनन्त ज्योतिर्मय चैतन्य है। तू भूल से अज्ञान, मोह-माया की गहरी नींद में सो गया है। तू अपनी आत्मशक्ति को जगा, यही सुनहरा अवसर है।

2. **प्रश्न**– पर्युषण का मूल रहस्य क्या है?

उत्तर– पर्युषण बिना किसी बाह्य दबाव तथा आक्रोश के आत्म-निरीक्षण की प्रक्रिया है। भूलों का जांचना–परखना और फिर उनका उचित निराकरण करना ही पर्युषण का मूल रहस्य है।

3. **प्रश्न**– पर्युषण पर्व की सार्थकता क्या है?

उत्तर– यह पर्व क्रोधादिक की पर्युपशमना का, शान्ति की साधना का काल है। खमतखामणा, आलोचना, प्रतिक्रमण एवं तपश्चरण द्वारा कषायों की उपशान्ति का प्रयत्न इस काल में किया जाता है। इसी में इस पर्व की सार्थकता है।

-89, Audiappa Naicken Street, Chennai-79

अधिक बोझ लादना– एक अतिचार

श्री लालचन्द्र जैन

मरुदेश में मधु नामक बनिया रहता था। उसने श्रावक के अणुव्रत स्वीकार किये थे और व्यापार के लिये ऊँटों पर माल लाद कर गांव–गांव जाता रहता था। एक समय उसके देश के राजा और सीमावर्ती एक राजा के बीच युद्ध हो गया। अपने देश की सीमा पर हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सिपाहियों की चतुरंगी सेना लेकर उस राजा ने छावनी डाल दी, जिससे देश में धान आदि खाने–पीने की वस्तुओं की आवक बंद हो गई और वे महंगी हो गईं।

मधु बनिये को जब इसका पता लगा तो उसने कुछ सहायकों के साथ दस ऊँटों पर अनाज आदि खाने–पीने की वस्तुएं लादी और छावनी की ओर चल पड़ा। मार्ग में ऊँटों को चरने के लिये छोड़ा तो तीन ऊँट चरते–चरते जंगल में चले गये और एक सिंह ने उन ऊँटों को मार डाला। दस ऊँटों का बोझ शेष सात ऊँटों पर कैसे ले जाया जाय यह समस्या थी, पर सामान जंगल में छोड़ा भी नहीं जा सकता था, अतः सहायकों के कहने से मरे हुए तीन ऊँटों का बोझ भी थोड़ा थोड़ा शेष बचे सात ऊँटों पर लाद दिया गया और छावनी की तरफ चल पड़ा।

छावनी पहुँच कर बनिये ने सब माल बेच दिया और ऊँटों को लेकर वापस अपने गांव की तरफ चल पड़ा। यद्यपि वापस लौटने तक तो सभी ऊँट जीवित थे, किन्तु अधिक बोझ लादने के कारण उन ऊँटों का हृदय टूट गया था और समय बीतने पर धीरे–धीरे एक–एक कर सभी ऊँट मर गये।

बनिये को अपने पहले अणुव्रत में 'अतिभार' का चौथा अतिचार तो लगा ही, साथ ही ऊँटों की मृत्यु से प्रत्यक्ष अनर्थ हो गया और उसका 'जीव वध विरमण व्रत' भी खंडित हो गया।

–10/595, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

卐 रत्नत्रय 卐

(व्यवहार एवं निश्चय)

श्री प्रकाशचन्द्र जैन 'दास'

तत्त्वार्थ में श्रद्धान को सम्यक्त्व मानव मानिये।
यदि ज्ञात हों अंग पूर्व भी तब ज्ञान सम्यक् जानिये।।
यत्न से तप आचरण चारित्र सम्यक् जानना।
इन को सदा व्यवहार नय से मार्ग मुक्ति मानना।
ज्ञान से जीवादि तत्त्वों को मनुज पहचानता।
दर्शन से श्रद्धा युक्त होकर नित्य उनको मानता।।
रोध वह चारित्र से फिर कर्म आस्रव का करे।
तप क्रिया द्वारा तदा विशुद्ध जीवन को वरे।।
हीन हो चारित्र से तो ज्ञान उसका व्यर्थ है।
तथैव दर्शन के बिना मुनि लिंग भी अनर्थ है।।
संयम यदि तप में नहीं तो व्यर्थ वह व्यवहार है।
वह निरर्थक आचरण जिसमें न कुछ भी सार है।।
दर्शन बिना नहीं प्राप्त हो सकता मनुज को ज्ञान है।
ज्ञान से विहीन में चारित्र गुण अवसान है।।
चारित्र गुण अभाव हो तो मोक्ष न पाये तदा।
जब तक न मुक्ति कर्म से निर्वाण भी न हो कदा।।
क्रिया रहित यदि ज्ञान हो तो जान लो वह व्यर्थ है।
अज्ञान के द्वारा क्रिया का भी न कोई अर्थ है।।
ज्ञान के संयोग से ही जब क्रिया होती कभी।
इष्ट फल की प्राप्ति भी होती है मानव को तभी।।
रथ कभी चलता नहीं है एक चक्र वियोग से।
पंगु अन्ध आते नगर में परस्पर सहयोग से।।
सर्व नय के पक्ष से जो जीव रहता है परे।
वह विकल्पातीत हो स्वभाव में विचरण करे।।
प्राप्त होता उसको दर्शन ज्ञान सम्यक् भी तदा।
केवलीभाषित यही उपदेश जग को सर्वदा।।
नित्य दर्शन ज्ञान को चारित्र को धारण करें।
मुनिजन सभी इन रत्नत्रय का सर्वदा पालन करें।।
निश्चय से इनको आत्मा के रूप में ही जानिये।

सेवन तथापि आत्मा का ही उचित है मानिये।।
जीवात्मा इन रत्नत्रय में ही समाहित हो जभी।
किंचिदपि वह काम कोई अन्य न करता कभी।।
छोड़ता भी कुछ नहीं है जीव वह आचार में।
निश्चय से कहते हैं उसे ही मुक्ति पथ संसार में।।
आत्मा जो आत्मा में लीन रहता सर्वदा।
वह ही सम्यग्दृष्टि होता आत्मा निश्चित सदा।।
स्वरूप जाने आत्मा का वह ही सम्यग् ज्ञान है।
स्थित रहे उस में वही चारित्र शुद्ध महान है।।
आत्मा ही ज्ञान मेरा तथ्य इसको मानिये।
दर्शन भी मेरा आत्मा है सत्य यह भी जानिये।।
चारित्र भी है आत्मा तथैव प्रत्याख्यान भी।
आत्म संयम योग भी है सत्य यह व्याख्यान भी।।

–12 सी. डी. आदर्श नगर, आलम बाग, लखनऊ–226005

स्वाध्याय से स्वानुभूति प्रकाश

श्री लक्ष्मीचन्द जैन

- जैन धर्म का मौलिक इतिहास लिखने वाले इतिहास मार्तण्ड, स्वाध्याय और सामायिक को जन–जन के मन में आस्था के केन्द्र बनाने वाले निजानन्दी महापुरुष स्व. श्री हस्तीमल जी म.सा. साधक को साधना का सरल सूत्र समझाते थे।
- वे व्यक्ति को पहले स्वाध्याय की प्रेरणा देते फिर धीरे–धीरे साधक का अनुभव बढ़ने पर सामायिक साधना का सौंदर्य समझाते। इसके बाद तो वह फिर सामायिक में स्वाध्याय को ही मुख्य कार्य बनाकर अपने जीवन में स्वानुभूति प्रकाश का अनुभव करता।
- आचार्यप्रवर हमेशा कहते कि यदि तुझे 1. चिंता के क्षणों में चिन्तन का 2. क्लेश के समय शांति का 3. निर्णय के समय मार्गदर्शन का 4. अपमान की जगह सम्मान का 5. संकट के समय शक्ति का 6. क्षमायाचना के समय आनंद का 7. भय के समय साहस का 8. थकान के समय विश्राम का 9. दुःख के समय सान्त्वना का 10. निराशा के समय आशा का 11. मरण के समय अमरता का बोध करना है तो स्वाध्याय परम हेतु है।
- स्वाध्याय के आनन्द के प्रति जितना बहुमान मन में होगा, उतनी अधिक मदद वह हमारी करेगा। समाधान स्वयं को स्वयं से मिलेगा।

क्या हमारी धर्म-साधना नियमित है ?

श्री चांदमल बाबेल

मानव जीवन बहुत–बहुत पुण्य से प्राप्त होता है। यह जीव अनादि काल से निगोद में रहा है, जहां पर बेभान अवस्था थी। मोक्ष-प्राप्ति का एक मात्र साधन मानव जीवन ही है। मानव जीवन मिलने के बाद यदि धर्म-साधना नहीं की, अपनी आत्मा के शुद्धीकरण का प्रयास नहीं किया तो यह आत्मा अन्य योनियों में ही भटकती रहेगी। अतः हमें सोचना है कि मानव भव पाकर क्या हम धर्म-साधना कर रहे हैं। मानव की विशेषता धर्म-साधना से ही है। आहार, निद्रा, मैथुन आदि क्रियायें तो पशु भी करता है, किन्तु धर्म-साधना नहीं कर पाता।

हम पशु नहीं, मानव हैं तथा मानवोचित सभी सुविधाएं हमें प्राप्त हैं। हमें उत्कृष्ट जैन धर्म भी मिला है। यदि हम इसको प्राप्त करके भी धर्म साधना में नहीं लगे तो यह हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। आज हम अपने सभी कार्य सम्पन्न करते हैं। आवश्यकतानुसार निद्रा लेते हैं। उठकर पेस्ट करना, शौचादि से निवृत्त होना, पेय पदार्थ लेना, स्नान करना आदि क्रियायें करना हमारा नित्य का क्रम है। उसे भी हम सम्पन्न करते ही हैं। नियमित रूप से अपना व्यवसाय भी हम करते हैं; चाहे, वह राजकीय हो, व्यावसायिक हो या अन्य कोई भी हो।

अनेक विचारक हमारे इन कार्यों को ही धर्म मान लेते हैं। वे कहते हैं कि कर्त्तव्य, फर्ज या ड्यूटी आदि ही धर्म है। वे यह भी कह देते हैं कि कर्त्तव्य पालन करना ही धर्म है। अपना फर्ज़ अदा करना ही धर्म है, हमारी ड्यूटी बजाना ही धर्म है। वकील का वकालत करना, डाक्टर का चिकित्सा करना, न्यायाधीश का न्याय करना ,शिक्षक का अध्यापन कराना, सैनिक का देश की रक्षा करना, मंत्री का राज्य संचालन करना, पुलिस का जानमाल की रक्षा करना आदि कार्य करके हम समझते हैं कि हमने अपना कार्य समय पर निपटा दिया। व्यापारी समझता है कि उचित लाभ लेकर ईमानदारी से अपनी रोजी-रोटी कमाना ही धर्म है। हमने इन कार्यों को करना धर्म मान लिया है।

परन्तु धर्म का यह अर्थ बहुत संकुचित है। कर्त्तव्य से धर्म शब्द काफी विशाल है। कर्त्तव्य से त्याग सूचित नहीं होता है वहां तो जितना लेना उतना ही देना है। डाक्टर ने सलाह और दवा दी, उतनी ही राशि सरकार या मरीज से ले ली। यह तो सौदा है। यह नीति कहलाई, धर्म नहीं। नीति से कार्य करना अच्छा है। यदि नहीं करता तो वह कर्त्तव्य से भी च्युत है।

धर्म तो उसे कहा जा सकता है, जिसमें कम से कम लेकर बदले में निःस्वार्थ भाव से ज्यादा से ज्यादा दिया जाय। धर्म तो त्याग मांगता है, शुद्ध

आचरण मांगता है। जब व्यक्ति व्यवसाय में व्यस्त रहता है तो उसे धर्म या धर्म-साधना का चिन्तन नहीं हो सकता।

धार्मिक-साधना के कार्य को यह कहकर टाल दिया जाता है कि समय नहीं मिलता है। चिन्तन करें तो अवगत होगा कि जो भी समय है वह धर्म चिन्तन के लिए ही है। आज व्यक्ति व्यवसाय करते-करते बीमार हो जाए तो व्यवसाय गौण हो जाएगा। मित्रों के भ्रमण का कार्यक्रम बन जाय तब भी व्यवसाय छोड़कर जाना ही पड़ता है। परिवार वाले भ्रमण हेतु कहें या सिनेमा, सर्कस देखने की बात कहें तो भी समय निकालना पड़ता है। परिवार का व्यक्ति बीमार हो जाय, दुर्घटनाग्रस्त हो जाय, रिश्तेदारी में गमी हो जाय, विवाह आदि कार्य हो जाएं तथा ऐसे अनेक सामाजिक कार्य सम्पन्न करने में चाहे वह अपने हों, पड़ौसी के हो, रिश्तेदारी में हों, उनको सम्पन्न करने में समय का अभाव नजर नहीं आता है। ये सभी आवश्यक कार्य में गिने जाते हैं। अतः इनको तो करना ही पड़ता है। ऐसी हमारी मान्यता बन गई है, किन्तु धर्म-साधना को हमने आवश्यक कार्य स्वीकार नहीं किया है, जबकि प्रमुख कार्य यही है। जिस दिन हमने आत्मा के स्वभाव को समझने का प्रयास किया, उसी दिन धार्मिक-साधना की बात भी स्वीकार कर ली जाएगी।

यह आत्मा अनादिकाल से विभाव दशा में परिभ्रमण करता रहा है। अभी इस वैभाविक स्थिति को हटाकर स्वाभाविक स्थिति में लाना ही धर्म है। 'दीवे एव धम्मं'(सूत्रकृतांग) धर्म तो दीपक की तरह है, जो अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट कर ज्ञान का प्रकाश देता है। यह सत्संग, स्वाध्याय, चिन्तन से होता है। मैं यह नहीं कहता कि आप सारे कार्यों को छोड़कर सन्यास ले लें। यदि ले भी लेते हैं तो यह बहुत पुण्यवानी की बात है, बहुत बड़ी उपलब्धि है। व्यवसाय में संलग्न रहकर भी हमारा ऐसा नियमित कार्य बनना चाहिये जिससे धर्म साधना, धर्म आराधना आसानी से कर सकें।

'एक्को हु धम्मो नर देव! ताणं। न विज्जइ अण्णमिहेह किंचि।।' इस संसार में एकमात्र धर्म ही शरण रूप है। इसके सिवाय कोई रक्षक नहीं है। धर्म तो महान है, शान्ति और शाश्वत सुख प्रदान करने वाला है। इसमें ही आनन्द की अनुभूति है, सद्गुणों का स्रोत है। भगवान महावीर ने भी फरमाया कि वे रात्रियाँ ही सफल मानी जाती हैं जो धर्म साधना में बीती हैं।

'धम्मं च कुणमाणस्स सफला जंति राइओ।

अतः व्यक्ति गृहवास में रहकर पौषध, सामायिक, धर्मानुष्ठान में जितना समय लगाता है वही समय उसका सार्थक माना जाता है। धर्म तो सदा सुख प्रदान करने वाला है।

अतः धर्म साधना हमारी रग-रग में रम जाय, ऐसा प्रयास होना चाहिए।

-सी 46, डॉ. राधाकृष्णनगर, भीलवाड़ा-311001

जीवन को व्रतधारी बनाएं

श्री सोभागमल जैन

"भोग में बन्धन है, वियोग में क्रन्दन है।
आत्मा में झांको तो, आनन्द का नन्दन है।।"

यह जीव अनादि काल से, चार गति, चौबीस दण्डक और चौरासी लाख जीवयोनियों में परिभ्रमण करता आ रहा है। जब तक यह मोह एवं राग–द्वेष के कारण कर्मों को बांधता रहेगा, इसी तरह भ्रमण करता रहेगा। प्रमाद, आस्रव, विषय, कषाय एवं अशुभयोग के परिणामस्वरूप, जन्म, जरा और मरण के चक्कर में, दुःखों का क्रम बनाते हुए इसी तरह फिरता रहेगा। यह जीवन असंस्कृत रूप है। सद्गुरु के सद्ज्ञान एवं कृपा की प्राप्ति से चारित्र मार्ग में विकास करना इसका संस्कृत रूप है। लेकिन चारित्र पालन के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि, उसके विकास के निमित्त जिन व्रतों को धारण करके समुचित रूप से उनका पालन करे।

उत्तराध्ययन में जीवों के लिए चार बातें दुर्लभ बताई हैं–

"चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जंतुणो।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमम्मि य वीरियं।।"

अर्थात् सर्वप्रथम मनुष्य भव मिलना दुर्लभ है, मानवदेह मिलने पर जैन धर्म मिलना दुर्लभ है। धर्म प्राप्त होने पर भी शास्त्र-श्रवण और श्रद्धा होना दुर्लभ है। श्रद्धा होने पर भी धर्माचरण करना दुर्लभ है। अतः चार गतियों में मनुष्य गति ही श्रेष्ठ है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को मनुष्यभव सफल करने का प्रयत्न करना चाहिए।

चारित्र विकास के लिए भ. महावीर स्वामी ने दो मार्ग बताये हैं– एक है 'सम्पूर्ण चारित्र' यानी श्रमण मार्ग और दूसरा है 'देश चारित्र' यानी श्रावक मार्ग। वास्तव में श्रमण मार्ग अर्थात् साधु-व्रत का पालन करना सभी के लिये सरल नहीं है। इसके लिए कुटुम्बीजन एवं कंचन–कामिनी का त्याग आवश्यक है। सभी गृहस्थों के लिए यह शक्य न होने से, गृहस्थावस्था में रहकर अंशतः चारित्र का पालन करें, एतदर्थ श्रमणोपासक मार्ग बताया गया है।

श्रावक के बारह व्रत हैं, जिनमे प्रथम पांच अणुव्रत हैं– अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन्हीं व्रतों की वृद्धि के लिए तीन गुणव्रत हैं– दिशापरिमाण, भोगोपभोग प्रत्याख्यान और अनर्थदण्ड विरमण व्रत। व्रतपालन में दृढ़ता लाने के लिए चार शिक्षाव्रत हैं– सामायिक, देशावकासिक व्रत, प्रतिपूर्ण पौषधोपवास और अतिथि–संविभाग व्रत। ये बारह व्रत जीवन-

विकास के बारह सोपान हैं जिनसे आत्मोन्नति होती है।

यह बात श्रेष्ठ है कि एक साथ बारह व्रत अंगीकार किये जाएं। लेकिन व्रतपालक यथाशक्ति एक व्रत से लेकर बारह व्रतों की मर्यादा कर सकता है। अतः आत्म-विकास करने वाले प्रत्येक मनुष्य को शक्ति के अनुसार व्रत ग्रहण करके पालन करना चाहिए।

व्रत धारण करने से चारित्र का विकास तो होता ही है, किन्तु साथ ही अव्रती होने से जो निरर्थक आस्रव होता है उससे बचा जा सकता है। आत्मा जब विकास की ओर प्रवृत्त होती है उसके बाद जो ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूपी परम तत्त्व की उसे झांकी प्राप्त होती है, वह अवर्णनीय है।

अतः प्रत्येक आत्म-साधक जीवन को व्रतमय बनावे और साधना के मार्ग की ओर अग्रसर होवे।

—श्री सुधर्म विद्यापीठ, कपड़ा बाजार, जोधपुर

ये अनमोल घड़िया

प्रो. चांदमल कर्णावट

ये अनमोल घड़ियां कहीं बीत न जाये।
ये भरी अंजुरियां कहीं रीत न जाये।

रहना है सजग आत्मन् मुक्ति का लक्ष्य रहे मन,
इसी में रत रहे तन मन, विषय कषाय बाजी जीत न जायें।
ये अनमोल......

समभावों की दुनिया मेरी बसी रहे, मेरी आत्मा इन भावों से सजी रहे।
विषम भावों से दूरियां बनी रहें, मेरी शान्ति पर से छीन ली न जाये।।
ये अनमोल......

स्वाध्याय की बीन मधुर बजती रहे,आत्मगुणों की मणियां नित्य सजती रहें,
कषाय विजय की भेरी नित बजती रहे, मेरा स्वरूप कहीं अनीत न जाये।।
ये अनमोल......

अरिहंत सुदेव मन में बसाए रहूँ, गुरु निर्ग्रन्थ से सुमार्गदर्शन लहूँ।
धर्म दयामय सदा जीता रहूँ, ध्यान धर्मशुक्ल से प्रीत न जाय।
ये अनमोल......

मोह दारुण दानव को परास्त कर सकूं, अपने ऊपर ही विजय मैं पा सकूं।
अज्ञान का तिमिर नाश कर सकूँ, ज्ञान केवल मम मीत बन जाय।
ये अनमोल......

—35 अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

भिक्षा विषयक प्रश्नोत्तर

श्री उपेन्द्रमुनि शास्त्री

1. **प्रश्न**– साधु को भिक्षा लेने किस समय जाना चाहिए?
उत्तर– भिक्षा काल प्राप्त होने पर ही साधु को भिक्षा लेने के लिए जाना चाहिए।

2. **प्रश्न**– भिक्षाकाल के समय भी साधु को किस प्रकार से जाना चाहिए?
उत्तर– भिक्षा लाने का समय होने पर भी अनुद्विग्न और अमूर्च्छित होकर मध्यम गति से चलकर एकाग्र चित्त के साथ भोजन, पानी आदि की गवेषणा करनी चाहिए।

3. **प्रश्न**–साधु को गमनागमन की क्रिया किस प्रकार करनी चाहिए?
उत्तर– साधु को गमनागमन करते समय साढ़े तीन हाथ प्रमाण आगे की भूमि को देखते हुए बीज, हरियाली, द्वीन्द्रियादि प्राणी, सचित्त जल तथा सचित्त मिट्टी आदि को टालते हुए विवेक के साथ चलना चाहिए।

4. **प्रश्न**– साधु को भिक्षा के लिए कैसे मार्ग से जाना चाहिए?
उत्तर– भगवान कहते हैं कि साधु को गड्ढे आदि ऊबड़–खाबड़ मार्ग को छोड़कर, कंटीलें मार्गों से बचते हुए, सुन्दर–साफ राजमार्ग पर चलना चाहिए, जिस पर लोगों का आवागमन भी रहता हो।

5. **प्रश्न**–यदि ऊबड़–खाबड़ मार्ग छोटा पड़ता हो तो उस पर जाने में क्या बुराई है?
उत्तर–ऊबड़–खाबड़ मार्ग से जाने पर साधु–साध्वी के गिर पड़ने का, पैर आदि मुड़ जाने का अंदेशा रहता है तथा प्राणियों, भूतों अर्थात् त्रस या स्थावर जीवों की हिंसा होने पर दोष भी लग सकता है।

6. **प्रश्न**– यदि ऊबड़ खाबड़ मार्ग के अतिरिक्त दूसरा रास्ता न हो तो क्या करें?
उत्तर– दूसरा मार्ग न हो तो निरुपायता की स्थिति में विवेकपूर्वक उसी मार्ग से गमन करे।

7. **प्रश्न**– भिक्षार्थ जाने वाले साधु-साध्वी को और किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर– भिक्षार्थ जाने वाले साधु-साध्वी को कोयलों की राशि, राख के ढेर, भूसे के ऊपर से तथा गोबर आदि पर होकर नहीं जाना चाहिए, इसी के साथ वर्षा बरस रही हो, धुंध पड़ रही हो, महावात अर्थात् भंयकर अंधड़ चल रहा हो, मार्ग में तिर्यंच संपातिम जीव उड़ रहे हों तो साधु-साध्वी को भिक्षा के लिए नहीं जाना चाहिए।

8. **प्रश्न**– भिक्षार्थ गमन करते समय साधु की चित्तवृत्ति कैसी होनी चाहिए?
उत्तर– भिक्षार्थगमन करते समय साधु-साध्वी की चित्तवृत्ति शान्त होनी चाहिए। भिक्षार्थ गमन करते समय शब्दादि विषयों में आसक्त न होकर, उच्च–नीच और मध्यम कुल का भेदभाव न करते हुए, आहार में राग–द्वेष न करते हुए सामुदानिक रूप से भिक्षाटन करना चाहिए। प्रस्तुत प्रश्न को दृष्टान्त देकर स्पष्ट किया है। यथा–

एक वणिक के यहां अत्यन्त सलौना गाय का एक छोटा सा बछड़ा था। घर के सभी सदस्य उसे बहुत प्यार करते थे। एक बार वणिक के यहाँ प्रीतिभोज था। सभी लोग उसमें लगे हुए थे। बेचारा बछड़ा दोपहर तक भूखा प्यासा खड़ा रहा। यकायक सेठ की पुत्रवधू ने उसकी रंभाने की आवाज सुनी तो गहनों, कपड़ों से सुसज्जित अवस्था में वह घास–चारा एवं पानी लेकर बछड़े के पास पहुंची। बछड़ा अपना चारा खाने में एकाग्र हो गया। उसने सोलह शृंगारों से सुसज्जित सेठ की पुत्रवधू को देखा तक नहीं। साधु के लिए कहा है कि वह भी बछड़े की तरह केवल आहार–पानी की गवेषणा की ओर ही ध्यान रखे। चित्त को अन्यत्र न जाने दे।

9. **प्रश्न**– भिक्षार्थ जाने वाले साधु को ब्रह्मचर्य की रक्षार्थ क्या–क्या निर्देश दिए हैं?
उत्तर– भिक्षार्थ जाने वाले साधु को उसके ब्रह्मचर्य व्रत की रक्षार्थ निम्नलिखित निर्देश दिए हैं–
1. ब्रह्मचर्य का वशवर्ती श्रमण वेश्याओं के मोहल्ले के निकट न जाए, क्योंकि दमितेन्द्रिय और ब्रह्मचारी साधक के चित्त में असमाधि उत्पन्न हो सकती है।
2. ऐसे कुस्थान में बार–बार जाने वाले मुनि के काम विकारमय वातावरण का संसर्ग होने से व्रतों की क्षति और साधुता में संदेह हो सकता है।
3. कुस्थान दुर्गति का दायक होता है। साधु को एकान्त सुख पाने के लिए वेश्याबाड़े से दूर रहने की प्रेरणा दी है।

10. **प्रश्न**– यदि कोई श्रमण साधु वेष को न छोड़े तो क्या फिर भी ब्रह्मचर्य व्रत की विराधना हो जाती है?
उत्तर– कुसंसर्ग से ब्रह्मचर्य प्रधान सभी व्रतों की विराधना हो जाती है। साधु–वेष न छोड़ने पर भी यदि उसके मन में काम-भोगों के प्रति आसक्ति है तो ब्रह्मचर्य व्रत की विराधना हो ही जाती है। चित्त की चंचलता के कारण वह ईर्या एवं एषणा समिति का पालन नहीं कर सकता, इस तरह अहिंसा व्रत की भी क्षति हो जाती है। वह कामिनियों

की ओर ताक कर देखता है तो उससे लोग पूछते हैं– क्या देख रहे थे? तो उसे अपना दोष छिपाने के लिए सत्यव्रत को भंग करना पड़ता है। स्त्री संग करना भगवद् आज्ञा का भंग है, इस दृष्टि से अचौर्य व्रत भी भंग हो जाता है। स्त्री पर ममत्व भाव होने के कारण अपरिग्रह व्रत की भी विराधना हो जाती है। इसलिए साधु को ब्रह्मचर्य व्रत पालने में बड़ा ही जागरूक रहना चाहिए।

11. प्रश्न–गोचरी जाने वाले साधु को कैसा स्थान दूर से ही छोड़ देना चाहिए?

उत्तर– जिस मार्ग या स्थान पर कुत्ता, नयी ब्याई हुई गाय, उन्मत्त बैल, घोड़ा और हाथी तथा बालकों का क्रीड़ा स्थान हो, कलह और युद्ध की प्रवृत्ति हो, उसें दूर से ही छोड़ देना चाहिए।

12. प्रश्न–भिक्षार्थ गमन करने वाले सन्त को गृहस्थ के घर में प्रवेश करने के उपरान्त अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिए?

उत्तर– साधु जब गृहस्थ के घर गोचरी लेने के लिए जावे तो झरोखे में से, संधिछेद आदि में से तथा बाथरूम आदि की शंका उत्पन्न करने वाले स्थान को नहीं देखना चाहिए। साधु को राजा, मन्त्री आदि के गुप्त स्थान तथा अन्तःपुर का भी दूर से त्याग कर देना चाहिए, क्योंकि ऐसे स्थान पर जाने से उसे संक्लेश पैदा हो सकता है।

13. प्रश्न– साधु को कैसे कुलों के अन्दर नहीं जाना चाहिए?

उत्तर– भगवान महावीर ने साधु-साध्वी के लिए कहा है कि वह निन्दित कुल में भिक्षा के लिए प्रवेश न करे, जिस घर का स्वामी साधु को अपने घर आने से मना करदे तो ऐसे अप्रीतिकर कुल में प्रवेश न करे।

14. प्रश्न– क्या साधु-साध्वी दरवाजा खोलकर या पर्दा हटाकर घर में प्रवेश करते हैं?

उत्तर– साधु-साध्वी के लिए कहा है कि जब वे भिक्षा के लिए किसी गृहस्थ के घर जाएं तो बिना गृहस्थ की आज्ञा लिए ही घर का दरवाजा न खोले, पर्दा न हटाएं। क्योंकि यदि गृहस्थ उस दौरान किसी आपत्तिजनक स्थिति में हो तो वह साधु से मारपीट, गाली–गलौच आदि कर सकता है तथा ऐसा करने पर शासन की विराधना होती है।

अनेकान्त

अनेकान्त की धरा पर सत्य खड़ा है।
कभी व्यवहार कभी निश्चय बड़ा है।
अत्यन्त जरूरी है संतुलन समन्वय,
एकान्तवाद से ही सब काम बिगड़ा है।

क्रमशः (9)

महामन्त्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य

श्री जशकरण डागा

महामन्त्र नमस्कार के जप के आध्यात्मिक एवं लौकिक दोनों प्रकार के फल हैं। साधक को लौकिक फल की ओर आकृष्ट न होकर आध्यात्मिक फल का ही लक्ष्य रखना चाहिए। लौकिक फल गौण है। –सम्पादक

णमोकार मंत्र जाप का लाभ, फल व उपलब्धियां– इसके जाप का महत्त्व दर्शाते हुए कहा गया है–

"जहां जपे णमोकार, वहां अघ कैसे आवे?
जहां जपे णमोकार, वहां व्यन्तर भग जावे।।
जहां जपे णमोकार, वहां सुख सम्पत्ति होई।
जहां जपे णमोकार, वहां दुःख रहे न कोई।।"

इस मंत्र के जाप के फल के विषय में कहा गया है–

"नवकारिक अक्खरो, पावं फेरेइ सत्त सागरोवमं।
पण्णास च पएणं पंचं सयाइं समग्गेणं।।" (कामघट कथानक, 156)

अर्थात् इस महामंत्र को भाव सहित जपने से इसका एक अक्षर सात सागरोपम (नरकायु) पापों को और इसका एक पद पचास सागरोपम पापों को तथा सम्पूर्ण पांच पद पांच सौ सागरोपम स्थिति प्रमाण पापों को नष्ट करता है। और भी कहा गया है–

"जो गुणइ लक्खमेगं, पूएइ विहिणा य नमुक्कारं।
तित्थयरं नाम गोयं, सो बंधइं नत्थि संदेहो।।" (कामघट कथानक, 157)

अर्थात् जो विधि (एवं भाव) पूर्वक नमस्कार मंत्र को एक लाख बार जपता है, वह तीर्थंकर गोत्र का बंध (उपार्जन) करता है, इसमें संदेह नहीं है।

ऐसी भी मान्यता है कि इस मंत्रराज को नौ लाख बार जपे तो छासठ लाख जीवयोनियां(मनुष्य व देव की अठारह लाख छोड़) कट जाती हैं तथा जीवन में चमत्कार व देव दर्शन होता है। जीव नरक व तिर्यंच गति से मुक्त हो जाता है। यदि आठ करोड़, आठ लाख, आठ हजार, आठ सौ आठ बार जपे तो वह निश्चय से तीर्थंकर गोत्र का अर्जन करता है (त्रिलोक विजय आलोयणा–त्रिलोक ऋषि कृत) और निश्चय से आत्मा तीसरे भव से मोक्ष प्राप्त करती है।

विशेष– 1. इस महामंत्र के जाप का फल, मोक्ष मार्ग के आधारभूत पंचाचार की उपलब्धि भी है। यथा– अरिहन्त पद से वीर्याचार, सिद्ध पद से दर्शनाचार, आचार्यपद से चारित्राचार, उपाध्याय पद से ज्ञानाचार व साधु पद

से तपाचार की आराधना व उपलब्धि होती है।

2. णमोकार मंत्रराज को बिना समझ के मात्र श्रद्धापूर्वक बोलने या जपने से भी, वह वैसे ही लाभदायी होता है, जैसे विषय निवारक मंत्र के उच्चारण से (बिना उसका अर्थ समझे), विष उतर जाता है। किन्तु जो इस महामंत्र का अर्थ व स्वरूप समझ कर उसे ध्यान में रखते हुए, विशुद्ध भाव एवं उच्चारण से विधि पूर्वक आराधन करते हैं, उन्हें इसका लाभ व फल अनुत्तर और सर्वश्रेष्ठ मिलता है।

3. अन्य मंत्रों का उच्चारण अशुद्ध हो या अशुद्ध अवस्था में जपें तो अनिष्ट कारक भी हो सकते हैं। किन्तु नवकार मंत्र को किसी भी अवस्था में व किसी भी प्रकार से (अशुद्ध) जपने पर भी कोई हानि या अनिष्ट नहीं होता है, वरन् पापों से मुक्ति मिलती है। कहा है–

"अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायते पंच नमस्कारं सर्वपापेभ्यो मुच्यते।।"

4. सर्वरोग नाशक–मनुष्य की प्रकृति में वात, पित्त एवं कफ सर्व रोगों की उत्पत्ति के हेतु हैं। वात (वायु) चिन्ता पैदा करता है, जो ज्ञानाराधन से दूर करता है। पित्त चंचलता व क्रोध पैदा करता है, जिससे व्यक्ति चारित्र साधना से दूर हो जाता है। कफ दमा, टी.बी. आदि रोग पैदा करता है, जिससे दर्शनाराधना से दूर हो जाता है। चूंकि ज्ञान, दर्शन व चारित्र के आराधक पंच परमेष्ठी हैं, अतः परमेष्ठी मंत्र के जप से सभी रोगों से आत्मा मुक्त हो परम पद को प्राप्त होता है। **–डागा सदन, संघपुरा मोहल्ला, टोंक (राज.)**

अनमोल वचन

त्रिलोकचन्द जैन

- केवलज्ञान की बात करने वाला ज्ञानी नहीं होता है, ज्ञान से बात करने वाला ज्ञानी होता है।
- आज सुख देने वाले पदार्थ कल दुःखदायी सिद्ध होते हैं।
- संसार से भागना नहीं, संसार से जागना चाहिये।
- शैतान बनना आसान है, पर इंसान बनना भी कठिन नहीं है।
- जीवन की पूर्णता, कर्त्तव्य पर ही निर्भर है।
- नियम बन्धन नहीं, जीवन की सरल व उपयुक्त व्यवस्था है।
- मनुष्य की जीवन शैली उसके व्यक्तित्व का मापदण्ड बनती है।
- परमात्मा तो आदर्श की एक चरम सीमा है।
- मृत्यु आकर जगाये, उससे पहले जाग जाओ।
- सत्य की आराधना मरकर जीने का मंत्र है।

–श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, गणपति नगर, जलगांव (महा.)

उत्तराध्ययन सूत्र : छत्तीसवाँ अध्ययन (3)

प्रो. चांदमल कर्णावट

'जिनवाणी' पत्रिका के गतांकों में उत्तराध्ययन सूत्र अ. 36 की गाथा 1 से 125 तक का परिचय दिया गया था। इस अंक में गाथा 126 से आगे का परिचय दिया जा रहा है।

उदार त्रसकाय– (गाथा 126) एकेन्द्रिय जीवों की तुलना में स्थूल, जन सामान्य द्वारा मान्य एवं प्रत्यक्ष होने से द्वीन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों को उदार, स्थूल या प्रधान कहा गया। यद्यपि एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पर्यन्त जीवों में भावेन्द्रियाँ 5 ही होती हैं, परन्तु प्रकट में एक, दो आदि इन्द्रिय होने से उनकी यह संज्ञा मानी गई है।

द्वीन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जीव निरूपण–ये सभी जीव पर्याप्ता–अपर्याप्ता के भेद से दो–दो प्रकार के हैं। ये सभी प्रवाह की अपेक्षा अनादि-अनंत और स्थिति की अपेक्षा सादि-सान्त कहे गए हैं। आयुस्थिति सभी की जघन्य अंतर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट क्रमशः बारह वर्ष, 49 अहोरात्रि एवं 6 मास की है। इन जीवों की कायस्थिति (उसी काय में जन्म-मरण) जघन्य अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट संख्यातकाल की बताई गई है। इन सभी जीवों का अन्तरकाल (अपनी जाति को छोड़ पुनः अपनी जाति में आना) जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट अनंतकाल का है तथा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, संस्थान की अपेक्षा इनके हजारों भेद हो जाते हैं।

पंचेन्द्रिय जीव निरूपण– ये नारक, तिर्यंच, मनुष्य एवं देव की अपेक्षा 4 प्रकार के हैं।

नारक जीव–7 नरकभूमियों में उत्पन्न होने से नारक जीव 7 प्रकार के हैं। रत्नप्रभा आदि नरकभूमियों के नाम उनमें वैसी प्रभा के कारण हैं तथा घम्मा आदि अपर नाम हैं। **स्थिति**– प्रथम नारक जीवों की जघन्य स्थिति 10 हजार वर्ष एवं उत्कृष्ट 1 सागर वर्ष तथा क्रमशः द्वितीय नरक से सातवीं पर्यन्त जघन्य स्थिति 1,3,7,10,17,22 सागर की बताई गई है। उत्कृष्ट स्थिति दूसरी से सातवीं पर्यन्त 3, 7,10,17,22 एवं 33 सागरोपम की कही गई है।

कायस्थिति एवं आयुस्थिति दोनों सभी की समान हैं, क्योंकि नैरयिक मरकर सीधा नैरयिक नहीं हो सकता। वर्ण, गंध आदि से हजारों भेद हैं।

–35 अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

जिनवाणी के 'जैनागम-साहित्य' विशेषांक पर प्राप्त पत्र

जिनवाणी का भव्य 'आगम विशेषांक' प्राप्त कर परम प्रसन्नता की अनुभूति हुई। आपकी सम्पादन–मनीषा से मण्डित यह विशेषांक जैनागम के जिज्ञासुओं के लिए प्रामाणिक और विश्वसनीय विश्वकोश कल्प बन गया है। जैनागम के अध्ययन–अनुशीलन के क्षेत्र में तो यह ऐतिहासिक एवं क्रोशशिलात्मक मूल्य का होगा। आधिकारिक लेखनियों द्वारा प्रस्तुत आलेखों से सज्जित यह विशेषांक जैनागम के शोध–जगत् के लिए महार्घ और समृद्धिकर निक्षेप है। शुद्ध, रमणीय मुद्रण और नयनाभिराम आवरण आकल्पन स्पृहणीय और श्लाघनीय है। मेरी अशेष बधाइयाँ और आन्तरिक साधुवाद लें।

दिनांक 1.7.2002 **डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव 'विद्यावाचस्पति', पटना**

आप द्वारा संपादित जिनवाणी का 'जैनागम–साहित्य विशेषांक' यथासमय प्राप्त हुआ। विशेषांक निःसंदेह बहुत ही सुन्दर एवं समुत्प्रेरक रूप में प्रकाशित हुआ है। इसके लिए मेरी ओर से शत–शत हार्दिक वर्धपनाएं स्वीकार करें। आपके वैदुष्यपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व का जिनशासन के समुन्नयन तथा अहिंसा, अनेकान्त एवं अपरिग्रह मूलक आर्हत दर्शन के व्यापक और विश्वजनीन संप्रसार में अनवरत उपयोग होता रहे, यही मेरी मंगल कामना है।

दिनांक 28.6.2002 **डॉ. छगनलाल शास्त्री, सरदारशहर**

मैं जिनवाणी का आजीवन सदस्य हूँ। कई वर्षो से जिनवाणी पढ़ रहा हूँ। इस बार जिनवाणी का "जैनागम–विशेषांक" पढ़ कर बहुत खुशी हुई। मैं जब भी दुकान में फ्री होता हूँ तो यह पढ़ता हूँ। जब भी मन में टेन्शन होता है, मैं जैनागम विशेषांक पढ़ता हूँ।

दिनांक 19.6.2002 **एम.धर्मचन्द नाहर, चेन्नई**

जिनवाणी का 'जैनागम–साहित्य' विशेषांक मिला। पढ़कर बहुत आनन्द हुआ। आपने सब आगमों का सांराश इसमें दे दिया है। आपका जैनागम विशेषांक पूरा पढ़ने के बाद आपको पत्र लिखा है। आपने इस विशेषांक के लिए काफी मेहनत की है, जिसके लिये आप धन्यवाद के पात्र हैं।

दिनांक 29.6.2002 **विनोदकान्त जैन, मुजफ्फरनगर**

भूल सुधार

माह जुलाई 2002 जिनवाणी के अंक में चातुर्मास सूची में जरखोदा व लासूर स्टेशन के सम्पर्क सूत्र में अन्यान्य कारणों से भूल रह गई थी, जिसे सुधार कर पढ़ा जाए–

जरखोदा चातुर्मास स्थल के सम्पर्क सूत्र– श्री उम्मेदचन्द जी जैन, पो. जरखोदा– 323802, जिला– बून्दी (राज.), फोन नं. 07437–59619

लासूर स्टेशन का सम्पर्क सूत्र– श्री हरकचन्द सोनराज जी मूथा, महावीर वस्त्र भण्डार, पो. लासूर स्टेशन–423702, जिला–औरंगाबाद (महा.), फोन नं. 02433–41375 / 41508

–अरूण मेहता, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैनकाव्यों का दार्शनिक मूल्यांकन– *डॉ. जिनेन्द्र जैन,* ***प्रकाशक***– *राधा पब्लिकेशन्स, 4378/4 बी अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–110002,* ***पृष्ठ*** *220,* ***मूल्य*** *350 रुपये,* ***सन्*** *2001*

प्रस्तुत ग्रन्थ में 10वीं शती के प्राकृत, अपभ्रंश एवं संस्कृत भाषा के प्रमुख जैन काव्यों का दार्शनिक दृष्टि से मूल्यांकन किया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ 6 अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में जैन साहित्य की पृष्ठभूमि में प्राकृत, अपभ्रंश एवं संस्कृत भाषा के दशमी शती के जैन साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। लेखक ने प्रसंगवश राजस्थानी, हिन्दी, तमिल एवं कन्नड़ जैन साहित्य की भी चर्चा की है। द्वितीय अध्याय में वैदिक, बौद्ध, जैन आदि तत्कालीन दार्शनिक विचारधाराओं पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय अध्याय जैन काव्यों में उपलब्ध वैदिक दर्शन की मान्यताओं, देवी–देवता एवं धार्मिक–जीवन पर प्रकाश डालता है। चतुर्थ अध्याय में जैन काव्यों में चर्चित बौद्ध दार्शनिक विचारधारा एवं धार्मिक जीवन का निरूपण है। पंचम अध्याय जैन काव्यों में सम्प्राप्त जैन तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा और नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों का प्रतिपादन करता है। षष्ठ अध्याय में जैन काव्यों के आधार पर जैन संघ के विकास, उसकी आचार मीमांसा एवं अहिंसा के स्वरूप विकास का निरूपण किया गया है। इन अध्यायों के अनन्तर उपसंहार एवं दो परिशिष्ट हैं। प्रथम परिशिष्ट में विशिष्ट धार्मिक एवं दार्शनिक शब्दावली है तथा द्वितीय परिशिष्ट में दसवीं शती के जैन काव्य–ग्रन्थों की सूची दी गई है। इस सूची में जो ग्रन्थ परिगणित हैं उनमें प्राकृत के ग्रन्थ हैं– कर्पूरमंजरी (राजशेखर) कार्तिकेयानुप्रेक्षा (स्वामी कार्तिकेय), जम्बूचरियं (गुणपाल मुनि) पाइयलच्छीनाममाला (धनपाल), ऋषभ पंचाशिका (धनपाल) आदि। अपभ्रंश के ग्रन्थों में करकण्डचरिउ (मुनि कनकामर), जसहरचरिउ (पुष्पदन्त), णायकुमारचरिउ (पुष्पदंत) धम्मपरिक्खा (हरिषेण) पाहुडदोहा (मुनि रामसिंह), महापुराण (पुष्पदंत), सावयधम्मदोहा(देवसेन) जंबूसामिचरिउ (वीरकवि) आदि। संस्कृत काव्यों में उपमिति भव–प्रपंचकथा (सिद्धर्षिगणि), गद्यचिन्तामणि (वादीभसिंहसूरि), चन्द्रप्रभचरितं(वीरनन्दि), तिलकमंजरी(धनपाल) यशस्तिलकचम्पू (सोमदेवसूरि) आदि।

साधक सहचरी : आध्यात्मिक प्रवचन निर्देशिका (प्रथम भाग)– *कन्हैयालाल दक 'न्यायतीर्थ',* ***प्रकाशक***–*श्री महावीर जैन साहित्य प्रकाशन समिति, 253/3 हिरणमगरी, सेक्टर 3, उदयपुर(राज.)* ***अन्य प्राप्ति***

***स्थान**— ब.वा. जिला वाचनालय, दूसरा माला, स्टेशन रोड़, जलगांव(महा.)— 425001, **पृष्ठ** 8+207, **मूल्य** 60 रुपये, **सन्** 2002*

पं. कन्हैयालाल दक ने यह पुस्तक साधारण स्वाध्यायियों एवं प्रशिक्षु साधु—साध्वियों के लिए प्रवचन—सामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से लिखी है। इस पुस्तक में 30 विषयों पर लघु लेख हैं, जिनमें कुछ के विषय हैं— धर्म, सामायिक, अहिंसा, संयम, तप, दान, शील, भावना, ध्यान—साधना, सेवा—परोपकार, क्षमा, विनय, मृत्यु—महोत्सव आदि। पुस्तक प्रारम्भिक जिज्ञासुओं एवं प्रवचनकर्ताओं के लिए उपयोगी है। पुस्तक में कुछ प्रार्थनाओं एवं प्रत्याख्यान पाठों को भी स्थान दिया गया है।

***खनन भारती (अहिंसा विशेषांक)— सम्पादक**— राजेन्द्र पटोरिया, **प्रकाशक**— वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, कोल इस्टेट, सिविल लाइन्स, नागपुर—440001 (महा.), **पृष्ठ** 128, **अंक** 98, **फरवरी** 2002*

कोल इण्डिया लिमिटेड की प्रतिनिधि हिन्दी द्वैमासिक पत्रिका खनन भारती का यह अंक अहिंसा—विशेषांक के रूप में विभिन्न सुन्दर आलेखों, कविताओं, विचारों एवं प्रेरक प्रसंगों से सज्जित है। प्रत्येक लेख में रेखांकन के माध्यम से भी भावाभिव्यक्ति की गई है। कायेले की खदानों से सम्बद्ध भारत सरकार की संस्था इस प्रकार का अहिंसा—अंक प्रकाशित कर सकती है, यह अपने आपमें महत्त्व की बात है, फिर सम्पादक ने जो सामग्री इसमें संजोयी है वह भी हृदयावर्जक है। उल्लेखनीय है कि इस विशेषांक को तैयार करने में सम्पादक ने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित जिनवाणी पत्रिका के 'स्वर्ण जयन्ती अहिंसा विशेषांक' का भरपूर उपयोग किया है, जिसका उल्लेख संदर्भ ग्रन्थ-सूची में सर्वप्रथम किया गया है। विशेषांक में प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी की दो कविताएँ भी प्रकाशित हैं, जो युद्ध की विभीषिका का निरूपण करती हैं।

***भोजन और स्वास्थ्य**— डॉ. चंचलमल चोरड़िया, **प्रकाशक**— कल्याणमल चंचलमल चोरड़िया ट्रस्ट, चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर—342003, फोन नं. 0291—621454, **पृष्ठ** 48, **मूल्य** 10 रुपये, **सन्** 2002*

जीवन के संचालन हेतु भोजन की महती आवश्यकता है। भोजन के साथ हमारे स्वास्थ्य का घनिष्ठ संबंध है, किन्तु भोजन कब, कैसा, क्यों करना चाहिए— इन प्रश्नों का उत्तर नहीं जानते तब वह स्वास्थ्य के लिए पोषक नहीं बन पाता। डॉ.चोरड़िया जी ने इस लघु पुस्तक के 13 अध्यायों में भोजन एवं स्वास्थ्य पर सूक्ष्म एवं उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की है।

समाचार-संकलन

जैनाचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का बालकेश्वर चातुर्मासार्थ भव्य मंगल-प्रवेश

रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., श्री कपिलमुनि जी म.सा., श्री योगेशमुनि जी म.सा., श्री मनीषमुनि जी म.सा., नवदीक्षित श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. ठाणा 8 भूलाभाई देसाई मार्ग स्थित मुणोत विला से गुरुवार दिनांक 18 जुलाई को प्रातः करीब 6.45 बजे विशाल जनमेदिनी के जयघोषों के साथ विहार कर बालकेश्वर स्थित श्रीमती जतनबाई हरकचन्द कोठारी जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ पधारे।

विहार में मुम्बई महानगर के विभिन्न उपनगरों से सैकड़ों श्रद्धालुओं ने आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों के दर्शन-वन्दन कर विहार में सम्मिलित होने का लाभ लिया। चेन्नई, बैंगलोर, रायचूर, मैसूर, जयपुर, जोधपुर, जलगांव, धुलिया सहित अनेक ग्राम-नगरों के श्रीसंघों ने एवं श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने विहार-सेवा में पहुंचकर भक्ति-भावना का परिचय दिया।

विहार-यात्रा का विहंगम दृश्य अपने-आपमें अनुपम था। श्रावक उमंग-उल्लास से अनवरत जय-जयकार करते हुए स्वप्रेरित अनुशासन से श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जय, प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जय, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जय, परम श्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की जय, निर्ग्रन्थ संत-मुनिराजों की जय, गुरु हस्ती के दो फरमान-सामायिक स्वाध्याय महान्, गुरु हीरा का है आह्वान-निर्व्यसनी हो हर इन्सान, जैन जगत के दिव्य सितारे-हस्ती हीरा मान हमारे, वन्दे-वीरम्, जैन धर्म की जय आदि आदि जयघोष समवेत स्वर में उच्चरित करते चल रहे थे। श्राविकाएँ भक्ति-भावना से मंगल गीत गा रही थीं। विशाल जनमेदिनी को देखकर मार्ग वाहन-चालक अपने वाहन रोककर विहंगम विहार-यात्रा का दृश्य अपलक निहारते और आश्चर्य करते हुए कहते -इतनी विशाल जनमेदिनी कैसे स्वप्रेरित अनुशासन से चल रही है, अन्यथा छोटे-मोटे जुलूस को नियंत्रित करने में पुलिस को भारी मशक्कत करनी पड़ती है। आगे-आगे जो महात्मा चल रहे हैं, उनका अतिशय गजब का है।

आचार्यप्रवर ज्यों-ज्यों बालकेश्वर के सन्निकट पधार रहे थे, स्थान स्थान पर भक्तों की भीड़ विहार-यात्रा में जुड़ रही थी और बालकेश्वर स्थानक

पहुंचते–पहुंचते वह द्विगुणित हो गई।

आचार्यप्रवर ने आज्ञा लेकर स्थानक में प्रवेश किया। जब तक आचार्यप्रवर आदि संतरत्न भण्डोपकरण रखकर प्रवचन सभा में पधारे, श्रावक–श्राविकाओं में से अधिकांश लोगों ने सामायिक वेष में अपना स्थान ग्रहण किया। स्थानीय संघ मंत्री श्री नानूभाई संगराजका ने पुनः पुन :आकाश में विकास कर विराजने का आग्रह किया। इस बीच आचार्यप्रवर प्रवचन सभा में पधारे तो पुनः जय–जयकार के जयनाद कर जन–समुदाय ने आचार्यप्रवर आदि संतों का स्वागत किया। कच्छ परम्परा की विदुषी महासती श्री उषाबाई जी महाराज आदि ठाणा ने भी मंगल–प्रवेश के पावन प्रसंग पर पधार कर चतुर्विध संघ का नजारा उपस्थित किया।

जन–समुदाय वंन्दन–नमन कर अपना स्थान ग्रहण कर रहा था कि आचार्यप्रवर ने 'अरिहन्त जय–जय, सिद्ध प्रभु जय–जय, प्रार्थना का शुभारम्भ किया तो श्रद्धालु श्रावकों ने भक्ति–भावना और तन्मयता से आचार्यप्रवर के पीछे समवेत स्वर में प्रार्थना की।

स्थानीय संघमंत्री श्री नानूभाई संगराजका ने परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 8 के चातुर्मासार्थ मंगल–प्रवेश पर बालकेश्वर श्रीसंघ की ओर से हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए स्वागत–अभिनन्दन के भावों में बालकेश्वर श्रीसंघ को सौभाग्यशाली बताते हुए कहा कि हमें इस वर्ष ज्ञान–क्रिया के मंगल प्रवचन-प्रभाकर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 8 के चातुर्मास का सुन्दर सुअवसर मिला है। चातुर्मास प्रगति के संयोग की पृष्ठभूमि पर दो शब्द रखने के साथ उन्होंने भाई श्री मोफतराज जी मुणोत के सार्थक सद्प्रयासों के लिए अपनी ओर से एवं बालकेश्वर श्रीसंघ की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते कहा कि आचार्यप्रवर ने महती कृपाकर बालकेश्वर श्रीसंघ को अपूर्व लाभ दिया, हम आपश्री के सदा अनुगृहीत रहेंगे। मैं शब्दों से स्वागत कर सकूं, उतनी मेरे शब्दों में सामर्थ्य नहीं। आचार्यभगवन्त के चातुर्मास के सुयोग से हम अपने जीवन और आत्मा को उन्नति की ओर अग्रसर करें, यही चातुर्मास की सार्थकता होगी।

मुणोत सा. ने महासती श्री निरंजना जी महाराज का विशेष रूप से आभार व्यक्त करते कहा कि उनकी स्वीकृति के कारण बालकेश्वर श्री संघ के प्रयासों को सफलता मिली है। रत्नवंश के कार्यकर्ताओं के सहयोग के लिए भी उन्होंने आभार प्रदर्शित किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना ने गद्य–पद्यमयी भाषा–शैली में मुम्बई महानगर के भाग्य की सराहना करते कहा कि संत परमात्मा के दिल में विराजमान होता है। आप

इस सुनहरे अवसर का पूरा उपयोग करेंगे, ऐसी मुझे आशा है। संत जीवन के संदर्भ में काव्यपाठ करते बाफना साहब ने कहा–

प्रभु मार्ग पाया है, उन्हें संसार का क्या करना।
मुसाफिर जो सफर में है, उठाकर भार क्या करना।
कमाई और क्या करनी, रत्न तीनों कमाये हैं।
सहारे और सब झूठे, शरण जब चार पाये हैं।।

संत आध्यात्मिक आकाश में इन्सानियत का इन्द्र धनुष है। हिन्दुस्तान में संतों का सम्मान है। इसीलिए हमारी संस्कृति विकृत नहीं हुई है। ऐतिहासिक सत्य प्रस्तुत करते बाफना साहब ने कहा– हजारों वर्षों की गुलामी में दूसरे–दूसरे देशों की संस्कृतियां विकृत हो गई, परन्तु भारत में संतों का सम्मान है, इसलिए हमारी संस्कृति सुरक्षित है। बालकेश्वर श्री संघ का अपनी ओर से एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से आभार व्यक्त करते हुए बाफना साहब ने अपनी बात पूर्ण की।

अ.भा. समग्र जैन चातुर्मास सूची के प्रकाशक श्री बाबूलाल जी 'उज्ज्वल' ने मुम्बई महानगर के धर्मस्थानों एवं चातुमासों की जानकारी रखते कहा कि इस वर्ष यहां सौ से अधिक संत–सतियों के चातुर्मास हैं, पर स्थानकवासी परम्परा के किसी आचार्य का चातुर्मास केवल बालकेश्वर श्रीसंघ को ही प्राप्त है। बालकेश्वर स्थानक की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले दो दशकों से अधिक समय में यहां किसी आचार्य का चातुर्मास नहीं हुआ, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के चातुर्मास से यह संघ गौरवान्वित है।

समय–सीमा का ध्यान रखते स्थानीय संघ मंत्रीजी ने प्रवचन समय की सूचना के साथ उपस्थित जनसमुदाय से निवेदन किया कि आप समय पर पधार कर प्रवचन श्रवण का लाभ लें। आचार्यप्रवर ने मंगलपाठ के पूर्व रात्रि भोजन त्याग के सामूहिक संकल्प की ओर ध्यान दिलाया तो जनसमुदाय ने सहर्ष रात्रि– भोजन का त्याग कर चातुर्मासार्थ मंगल–प्रवेश के पावन प्रसंग पर व्रत–नियम के प्रति श्रद्धा समर्पित की।

बालकेश्वर में अपूर्व धर्मप्रभावना

बालकेश्वर स्थानक में प्रवेश के साथ स्थानीय श्रीसंघ ने संयम–साधक संतरत्नों की साधना में सहायक बनने की भावना से श्रमणोचित व्यवस्था सुनिश्चित करने की पहल की और प्रार्थना–प्रवचन–प्रश्नचर्चा–प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों में भाग लेकर चातुर्मास को दीप्तिमान बनाने की दिशा में सक्रियता का परिचय दिया। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से बालकेश्वर में करीब–करीब सभी श्रावक–श्राविकाएँ सामायिक वेश में प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त कर रहे हैं जो अपने–आपमें मिसाल है। धर्माराधन की महत्ता समझाते आचार्यप्रवर ने राजस्थान ही नहीं, रायचूर–मद्रास जैसे संघों का उदाहरण देतु हुए धर्मचक्र की मांग रखी तो श्रावकों के मन में भावना का ऐसा संचरण हुआ

जिससे धर्मचक्र की मांग पूरी हुई। **मुम्बई में चौमासी के दिन 100 से अधिक संवर–पौषध होना और करीब 250 श्रावकों द्वारा प्रतिक्रमण करना एक आश्चर्य था,** क्योंकि बालकेश्वर स्थानक के निर्माण से अब तक ऐसा नजारा पहले कभी देखने को नहीं मिला। बालकेश्वर संघाध्यक्ष–संघमंत्री इसे आचार्यप्रवर का अतिशय बता रहे हैं, अन्यथा लाख प्रेरणा के पश्चात् पौषध और संवर सपना ही रहता है। प्रवचन सभा में प्रवेश के दिन कई लोगों को स्थान सुलभ नहीं हो सका, उन्हें सड़क पर खड़े खड़े प्रवचन सुनना पड़ा। नित्यप्रति प्रवचन में एवं मध्याह्न में शास्त्र-श्रवण में अच्छी उपस्थिति से यह लगता है कि आचार्यप्रवर के पीयूष प्रवचनामृत एवं शास्त्रवाचन का पान करने के लिए लोग आतुर हैं। तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रवचन शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक विश्लेषण के साथ होते हैं, जिसका आबाल–वृद्ध सब पर अच्छा प्रभाव है। **रविवार को श्राविकाओं एवं बालकों का ज्ञानाभ्यास शिविर क्रमशः दो–दो घंटे चलता है।** प्रवचन में उपवास–बेले–तेले–आठ तक की तपश्चर्याओं के प्रत्याख्यान नित्यप्रति हो रहे हैं। महासती श्री निरंजना बाई जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री उषाबाई जी म.सा. आदि ठाणा 3 आचार्यप्रवर के मंगलप्रवेश के दिन से निरन्तर प्रवचन सभा में पधारते हैं। महासती श्री संगीताबाई जी म.सा. यदा–कदा कुछ समय गुजराती में प्रवचन भी फरमाते हैं जो भक्तों को बहुत प्रिय लगता है। महासती-मण्डल के कारण श्राविकाओं को प्रतिक्रमण आदि कार्यक्रम संचालित करने में सुविधा है। बाहर से दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर बना हुआ है। बालकेश्वर श्रीसंघ का आवास–भोजनादि व्यवस्थाओं में आत्मीयपन है, अपनत्व है। आवास–व्यवस्था कुछ दूर जरूर है, किन्तु स्थानीय सुश्रावकों की सार–संभाल से आगत दर्शनार्थियों को कोई असुविधा नहीं है।

चातुर्मास के प्रारंभ से ज्ञानाराधना–तपाराधना–धर्माराधना के रूप को देखकर नहीं लगता कि मुम्बईवासी साधना–आराधना में किसी से पीछे हैं। रविवारीय अवकाश के दिन प्रवचन-सभा का नजारा अद्वितीय रहता है। लोग दूर–'दूर के उपनगरों से आकर दर्शन–वन्दन, प्रवचन–श्रवण और सत्संग सेवा के लाभ से लाभान्वित हो रहे हैं।

आचार्यप्रवर आदि संत–मुनिराजों के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है।

२५ जून से १७ जुलाई २००२ तक का विचरण-विहार

आचार्यप्रवर जून के अंतिम सप्ताह में साइन ईस्ट पधारे तो अजमेर वाले श्री विजयराज जी सांड ने आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में पुनःपुनः प्रार्थना रखी कि आप माटुंगा पधारें। आचार्यप्रवर ने भक्त की भावना सुनी, पर कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया। श्री सांड साहब ने आग्रह–अनुरोध किया कि आपश्री जो भी व्रत–प्रत्याख्यान का कहें मैं सहर्ष स्वीकार करूंगा पर आप एक बार माटुंगा पधारने

की महती कृपा करें। भक्ति में शक्ति होती है, आचार्यप्रवर बान्द्रा होते दिनांक 28 जून को माटुंगा ईस्ट पधारे तो सांड साहब ने सपत्नीक स्वेच्छा से आजीवन शीलव्रत का खंद कर अपनी श्रद्धा समर्पित की।

दिनांक 1 जुलाई को आचार्यप्रवर दादर (पश्चिम) पधारे। प्रवचन सभा में अच्छी उपस्थिति रही। जनभावना का समादर करते आचार्यप्रवर ने तीन दिन वहां विराजकर धर्मस्थान में सामायिक–स्वाध्याय करने की प्रेरणा की। महासती श्री भारतीबाई जी म.सा. ठाणा 8 एवं महासती श्री अनिलाबाई जी म.सा. ठाणा 8 ने प्रवचन सभा में पधारकर प्रवचन-श्रवण के साथ प्रश्नोत्तर के माध्यम से ज्ञानचर्चा का अच्छा लाभ लिया।

दिनांक 4 जुलाई को आचार्यप्रवर वरली पधारे। भक्तों को वरली विराजने की आशा भी थी। अष्टमी को कई संतरत्नों के उपवास रहता है। अगले दिन पारणक एवं तदनन्तर कृष्ण पक्ष की दशमी के मौन के कारण आचार्यप्रवर ने दशमी तक यहीं विराजने का मानस बनाया। दिनांक 7 जुलाई को करीब 15 श्रावकों ने दयाव्रत की आराधना करते हुए संत–समागम का लाभ लिया। वरली में निरन्तर प्रेरणा के कारण **करीब 50 व्रती श्रावक** बने जो अच्छी उपलब्धि कही जा सकती है। दिनांक 9 जुलाई को चिंचपोकली होते हुए आचार्यप्रवर कांदावाड़ी पधारे, जहां भी धर्म साधना में लोगों ने अच्छी भावना प्रदर्शित की। 11 जुलाई को भुलेश्वर सी.पी.टेंक पधारे और 12 जुलाई को कोलाबा कफ परेड में धर्म प्रभावना हुई। दिनांक 13 से 15 जुलाई को तीन दिन गिरगांव चौपाटी विराज कर आचार्यप्रवर ने चौपाटी क्षेत्र को लाभान्वित किया। दिनांक 16 जुलाई को आचार्यप्रवर भूलाभाई देसाई रोड़ स्थित संघ–संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत के निवास स्थान "मुणोत विला" पधारे। श्री मुणोत साहब ने भक्तिभावना पूर्वक सत्संग-सेवा और संत-समागम का लाभ उठाया। दो दिन मुणोत विला विराज कर 18 जुलाई की मंगल प्रभा में प्रातः करीब 6.30 बजे आचार्यप्रवर ने चातुर्मास-स्थल बालकेश्वर के लिए विहार किया।

होलनांथा में उपाध्याय प्रवर का मंगल-प्रवेश

आत्मार्थी, शांत–दांत–गंभीर प्रबल पुरुषार्थी परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., सेवाभावी श्रद्धेय श्री मंगलमुनि जी म.सा., श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ठाणा 3 का चातुर्मास हेतु 16 जुलाई 2002 को होलनांथा में मंगल प्रवेश हुआ। इससे पूर्व विचरण–विहार धुलिया क्षेत्र में चल रहा था।

उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास के लिए होलनांथा श्रीसंघ गत वर्ष से लालायित था। गत वर्ष सुश्रावक श्री मोतीलाल जी सेठिया के संथारे के पश्चात् से होलनांथा के जैन–जैनेतर जन समुदाय की भावना चातुर्मास के रूप में फलीभूत हो रही है। होलनांथा के ही नहीं समीपवर्ती क्षेत्रों के श्रावक–श्राविकाओं ने चातुर्मासार्थ मंगल–प्रवेश पर विशाल उपस्थिति से यह दर्शा दिया कि गांव भले ही छोटा हो, भावना से हम किसी से कम नहीं।

उपाध्यायप्रवर के मंगलप्रवेश पर 500 से अधिक की उपस्थिति जनआस्था का अच्छा उदाहरण कहें तो उचित ही है। उपाध्यायप्रवर की सन्निधि में सामायिक–प्रतिक्रमण तो नित्यप्रति अच्छी संख्या में चल ही रहे हैं, दया–संवर, उपवास–पौषध, आयंबिल–एकाशन और बड़ी तपश्चर्याओं के ठाट से लगता है होलनांथा चातुर्मास धर्म साधना–आराधना की दृष्टि से बहुत लाभकारी रहेगा। गांव का शान्त सहज वातावरण संयम–साधक संत रत्नों की साधना में सहायक होता है, उपाध्याय प्रवर अपनी साधना के साथ जन–जन को धर्मसाधना में जोड़ रहे हैं।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर आदि संतरत्नों के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है।

पालासनी में गौतममुनि जी का पदार्पण

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा 2 जोधपुर में धर्मप्रभावना के अनन्तर 15 जुलाई 2002 को विहार कर 20 जुलाई 2002 को चातुर्मासार्थ पालासनी पधारे। आपके मंगल–प्रवेश के समय पालासनी ग्राम के जैन–अजैन भाई–बहन उमड़ पड़े। जय–जयकार करते ग्रामवासी एवं बाहर से पधारे श्रद्धालु दर्शनार्थियों के उत्साह भरे वातावरण में मुनिद्वय का मंगल प्रवेश हुआ। पाली, जोधपुर, पीपाड़, गोटन आदि अनेक स्थानों से भक्तजनों ने मुनिद्वय के दर्शन–वन्दन का लाभ लिया। ग्राम में रविवार को प्रातः एवं अन्य दिनों में दिन में डेढ़ बजे प्रवचन होता है। धर्म–क्रिया के सभी कार्यक्रम उत्साह से चल रहे हैं।

साध्वी-मण्डल का अपने चातुर्मास स्थलों में मंगल-प्रवेश

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 7 का चातुर्मास वर्द्धमान भवन, पावटा में है। भोपालगढ़ में महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. के अस्वस्थ हो जाने से महासती श्री रुचिता जी म.सा. एवं महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. चातुर्मास प्रारम्भ होने से पूर्व आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी 23 जुलाई 2002 को प्रातः 11.30 बजे जोधपुर पधार गए हैं। वे भी वर्द्धमान भवन, पावटा में प्रवर्तिनी म.सा. के साथ विराजित हैं। महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. को डोली में जोधपुर मात्र दो दिनों में लाने में भोपालगढ़ के बालिका–मण्डल एवं श्राविकाओं का साहसिक एवं अनुकरणीय योगदान रहा। इससे संघ का गौरव बढ़ा है। महासती जी की चिकित्सा हेतु जोधपुर संघ प्रयासरत है।

सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., महासती श्री शान्तिप्रभा जी म.सा.का चातुर्मास घोड़ों का चौक स्थित सामायिक–स्वाध्याय भवन में चल रहा है। शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मासार्थ मंगल–प्रवेश नेहरू पार्क, जोधपुर स्थित सामायिक–स्वाध्याय भवन में हुआ।

शासन प्रभाविका महासती जी के आंख का ऑपरेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया है। इस दौरान आप कुम्भट भवन विराजे। नेहरू पार्क पधारने पर पाटे से गिर जाने से सीने में जोर आने के कारण महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. व्याख्यान फरमाते हैं।

सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 का जैन स्थानक धनारीकलां में चातुर्मासार्थ मंगल–प्रवेश हुआ। शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 में से महासती श्री रुचिता जी एवं महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. के जोधपुर पधार जाने से ठाणा 3 का चातुर्मास भोपालगढ़ में है। ठाणा 3 हैं– शान्तस्वभावी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा., महासती श्री जागृतिप्रभा जी म. सा. एवं महासती श्री वृद्धिप्रभा जी म.सा.।

व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 का चातुर्मास तोंडापुर के जैन स्थानक में धर्माराधन की लहर के साथ प्रारम्भ हुआ। तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मासार्थ मंगल–प्रवेश अहमदाबाद के मणिनगर, ढ़ोर बाजार स्थित महावीर भवन में हुआ। श्री राजस्थान एस.एस. जैन संघ के कार्यकर्त्ताओं में अच्छा उत्साह है। यहां पर प्रतिदिन 8 से 9 बजे तक चार माह के लिए नमस्कार मंत्र का जाप प्रारम्भ हुआ है तथा चातुर्मास में प्रतिदिन उपवास, आयम्बिल एवं तेले की तपस्या का क्रम चलता है। विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मासार्थ प्रवेश ताहराबाद के जैन स्थानक में हुआ। धर्माराधन अच्छा चल रहा है। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास मेड़ता सिटी के वीरभवन में चल रहा है। व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास मुकटी में उत्साह के वातावरण में प्रारम्भ हुआ। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास सामायिक–स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली में चल रहा है। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.,महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास गंगापुर सिटी के जैन स्थानक में धर्माराधनपूर्वक चल रहा है।

व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास जरखोदा, जिला– बून्दी (राज.) में धर्मसाधनापूर्वक गतिशील है। महासती मण्डल का मंगल–प्रवेश 18 जुलाई को तीस–पैंतीस ग्राम–नगरों के 600–700 श्रद्धालुओं की जय–जयकार के साथ हुआ। प्रवेश के अवसर पर 4 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत का नियम ग्रहण किया। श्री महावीर प्रसाद जी जैन ने पचोले की तपस्या की। तेले की लड़ी एवं प्रतिदिन आयम्बिल का क्रम प्रारम्भ हो गया। महासती जी की प्रेरणा से प्रतिदिन 13 घण्टे तक नमस्कार मन्त्र

का जाप प्रारम्भ हुआ। कई श्रावक–श्राविकाओं ने 4 माह ब्रह्मचर्य पालन, 4 माह रात्रि–भोजन त्याग आदि का नियम लिया। कई ग्रामवासियों ने बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, जर्दा, मांस, मदिरा आदि के सेवन का त्याग किया। यहां पर चातुर्मास का प्रथम अवसर होने से जैन–अजैन भाई–बहिनों में उत्साह एवं प्रमोद है। महासती जी श्री निःशल्यवती जी एवं महासती मतिप्रभा जी ने तेले का तप किया।

व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विमलेश प्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 का 16 जुलाई को अतीव उत्साह एवं हर्ष के वातावरण में लासूर स्टेशन के स्थानक में प्रवेश हुआ। प्रवेश के पूर्व संघ के भाई–बहन 2 से 7 कि.मी. तक सामने गए। छोटे ग्राम में 200 से अधिक भाई–बहनों ने मंगल प्रवेश कराया। महासती जी ने तपस्या प्रारम्भ की। 20 जुलाई को महासती मुक्तिप्रभा जी के 5 उपवास थे।

इस प्रकार रत्नवंश के सन्त–सतियों के कुल 17 चातुर्मास हैं, जिनमें महाराष्ट्र में 6, राजस्थान में 10 एवं गुजरात में 1 स्थान पर चातुर्मास चल रहे हैं।

–अरूण मेहता, महामन्त्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्थानीय शिविरों का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं उसकी विभिन्न शाखाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदुपयोग करने हेतु दिनांक 17 मई 2002 से 30 जून 2002 तक विभिन्न स्थानों पर बालक–बालिकाओं में नैतिक एवं धार्मिक संस्कार प्रदान करने हेतु स्थानीय शिविरों का आयोजन किया गया । जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है:–

क्र.	**गांव का नाम**	**शिविरार्थी**	**अध्यापकों के नाम**
		पोरवाल क्षेत्र	
01.	अलीगढ़	92	1. श्रीमती हरकीबाई जी जैन, चोरू
			2. श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, बजरिया
			3. श्री राहुल जी जैन, सवाईमाधोपुर
			4. श्री मनोज जी जैन, अलीगढ़
02.	करौली	64	1. श्री जगदीशप्रसाद जी जैन, चकेरी
			2. श्री अमोलकचन्दजी जैन,जरखोदा
03.	बजरिया	57	1. श्रीमती कंचन जी मूथा, भोपालगढ़
			2. श्री कमलेश जी मेहता, जोधपुर
			3. श्री मनीष जी बोथरा, जोधपुर
			4. श्री नवीन जी बाफना, जोधपुर
			5. श्री प्रेमबाबू जी जैन, बजरिया
04.	चौथ का बरवाड़ा	57	1. श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन, आ.म.

			2. सुश्री किरण जी जैन, अलीगढ़
			3. सुश्री प्रियंका जी जैन, गंगापुर सिटी
05.	श्योपुर कलां	37	1. श्री लल्लूलाल जी जैन, आ.म.
			2. श्री जगदीशप्रसाद जी जैन, आ.म.
06.	गंगापुर सिटी	35	1. श्री लल्लूलाल जी जैन, आ.म.
			2. श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, स.माधोपुर
07.	सवाईमाधोपुर	30	1. श्रीमती कुमकुम जी जैन, स.माधोपुर
			2. श्री वीरेन्द्र जी जैन, जोधपुर
			3. श्रीमती मुन्नीबाईजी जैन, स.माधोपुर
			4. श्री गगनकुमार जी जैन, स.माधोपुर
08.	समीधी	30	1. श्रीमती मोहनीबाई जैन, आलनपुर
09.	उनियारा	28	1. श्री रामस्वरूप जी जैन, कुण्डेरा
10.	कुस्तला	28	1. श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, स.मा.
			2. सुश्री अन्तिमबाला जैन, चोरू
11.	सूरवाल	25	1. श्री बंशीलाल जी जैन, अलीगढ़
			2. श्री प्रेमचन्द जी जैन, आदर्शनगर
		पल्लीवाल क्षेत्र	
12.	हिण्डौन सिटी	66	1. श्री गणपतलालजी जैन, आदर्शनगर
			2. श्री सौभागमल जी जैन, बजरिया
13.	मण्डावर	40	1. श्री हुकमचन्दजी जैन, हिण्डौनसिटी
			2. श्री मगनचन्दजी जैन, फाजिलाबाद
14.	हरसाना	40	1. श्री छगनचन्द जी जैन, खौह
			2. श्री राजकुमार जी जैन, मण्डावर
15.	खेरली	40	1. श्री रामजीलाल जी जैन , खेरली
			2. श्री अशोक कुमार जी जैन, महवा
16.	ब्रौंण	32	1. श्री रामजीलाल जी जैन, खेरली
			2. श्री धर्मचन्द जी जैन, हिण्डौन सिटी
17.	मौजपुर	32	1. श्री रामजीलाल जी जैन, खेरली
18.	नदबई	32	1. श्री विनयचन्द जी जैन, आलनपुर
			2. श्रीमती मोहनीबाई जैन, आलनपुर
19.	पहरसर	31	1. श्री बाबूलाल जी जैन, गोपालगढ़
			2. श्री प्रेमचन्द जी जैन, भरतपुर
20.	वर्द्धमान नगर	30	1. श्री रामस्वरूप जी जैन, कुण्डेरा
			2. सुश्री प्रियंकाजी जैन, गंगापुर सिटी
21.	खौह	22	1. श्री ज्ञानचन्द जी जैन, नदबई
			2. श्री विमलचन्द जी जैन, नदबई
22.	बडेर	22	1. श्री मुरारीलाल जी जैन, खेरली
		मेवाड़ क्षेत्र	
23.	सिंगोली	70	1. श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर

24. भीलवाड़ा	40	1. श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर 2. डॉ. स्मृति रेखा जी जारोली, नीमच 3. श्री कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा
25. सुरपुर	32	1. श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर 2. श्री कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा 3. श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर
26. पहुंना	30	1. श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर 2. श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर
27. बेगूं	25	1. श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर
28. पारसोली	15	1. श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर

उपर्युक्त शिविरों में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी कार्यकर्ताओं का, क्षेत्रों का एवं अध्यापन के रूप में अपनी सेवाएं देने वाले सभी अध्यापकों का स्वाध्याय संघ, जोधपुर की ओर से हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।**–सुशीला बोहरा-संयोजक, रिखबचन्द मेहता- सचिव**

जयपुर में धार्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

जयपुर– श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में 16 मई से 15 जून 2002 तक सांगानेरी गेट स्थित सुबोध स्कूल में एवं महावीर नगर स्थित महावीर जैन साधना केन्द्र में ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 325 बालक–बालिकाओं ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। अध्यापन कार्य 7 कक्षाओं में प्रातः 7 से 9 बजे तक सुयोग्य अध्यापकों द्वारा किया गया। पाठ्यक्रम आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के अनुसार था। शिविर का समापन एवं पारितोषित वितरण समारोह 7 जुलाई 2002 को सुबोध कॉलेज परिसर में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री डी.आर.मेहता (पूर्व अध्यक्ष, सेबी) विशिष्ट अतिथि डॉ. कौशल्या भण्डारी (प्राचार्य, सुबोध महिला महाविद्यालय, जयपुर) थे तथा अध्यक्षता डॉ. मंजुला जी बम्ब (मानद् मंत्री, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर) ने की। शिविर का संयोजन श्री प्रमोद जी लोढ़ा ने किया। समारोह में श्री महावीर जी जरगड एवं श्री सुभाष जी डागा को विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। परिषद् के प्रमुख श्री प्रमोद जी हीरावत ने गतिविधियों की जानकारी दी। –अनिल बम्ब, सचिव

जोधपुर में करुणा इण्टरनेशनल के केन्द्र का शुभारम्भ

विद्यालयों के बालक–बालिकाओं में करुणा, दया, प्रेम, अहिंसा, मैत्रीभाव, सहिष्णुता, परोपकार, पर्यावरण प्रेम आदि भावों को जागृत एवं पुष्ट करने की आज महती आवश्यकता है। इस दिशा में चेन्नई में कार्यरत करुणा इण्टरनेशनल के जोधपुर केन्द्र का उद्घाटन कार्यक्रम 14 जुलाई 2002 को प्राणिमित्र श्री डी.आर. मेहता सेवानिवृत्त अध्यक्ष, सेबी, मुम्बई की अध्यक्षता एवं माननीय श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया, न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। समारोह के विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्री

मोहनलाल जी कांकरिया, चेन्नई थे। करुणा इण्टरनेशनल, चेन्नई के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री भद्रेश जी जैन ने मुख्य उद्‌बोधक के रूप में संस्था की गतिविधियों एवं करुणा की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उद्घाटन समारोह में विद्यालयों के प्रधानाचार्य भी आमन्त्रित थे, जिनमें से 17 विद्यालयों के प्राचार्यों ने उसी समय अपने विद्यालयों में करुणा क्लब खोलने की लिखित स्वीकृति प्रदान की।

करुणा इण्टरनेशनल संस्था के द्वारा विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से सम्पर्क कर छात्रों का करुणा क्लब प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय के ही एक या दो अध्यापकों को इस क्लब का परामर्शदाता बनाया जाता है। छात्र ही इस क्लब के पदाधिकारी होते हैं तथा वर्षभर विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। इन कार्यक्रमों में भाषण प्रतियोगिता, चित्रकला, रंगकला, निबन्ध प्रतियोगिता आदि सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त श्रव्य–दृश्य फिल्म दिखाना, कविता लिखना, कहानी लिखना, रैली आयोजित करना, नाटक का मंचन करना, प्रश्नोत्तर आदि कार्यक्रम भी किए जाते हैं। ये सभी कार्यक्रम बालकों में लोकप्रिय होते हैं तथा उनमें प्राणिजगत् के प्रति प्रेम, मैत्री एवं दया के भावों को पुष्ट करते हैं। सभी कार्यक्रमों की विषयवस्तु अहिंसा, करुणा, जीव–दया, पर्यावरण–रक्षण आदि होती है।

करुणा, दया, अनुकम्पा, प्रेम एवं परोपकार की उच्च भावनाओं को भावी पीढ़ी में जागृत करने हेतु चेन्नई में करुणा इण्टरनेशन की सन् 1995 में स्थापना की गई। आन्ध्रप्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश, बिहार, गुजरात, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु एवं राजस्थान में इसके द्वारा स्थापित करुणा क्लबों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। उसी शृंखला में जोधपुर में करुणा इण्टरनेशनल का केन्द्र प्रारम्भ किया गया है। पूरे देश में कुल 331 स्कूलों में करुणा क्लब कार्यरत हैं।

जोधपुर केन्द्र का कार्य देखने के लिए एक परामर्शदाता समिति एवं कार्यकारिणी कार्यरत है। जिसमें डॉ. धर्मचन्द जैन को चेयरमेन, श्री मनोज डागा को अध्यक्ष, श्री महेश भण्डारी को सचिव एवं श्री मनोज बोहरा को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। – **मनोज डागा**

पशु क्रूरता निवारण समिति, जयपुर

पशु क्रूरता निवारण समिति बीमार एवं घायल पशुओं के उपचार और लावारिस पशुओं की देखभाल का कार्य करती है। इस संस्था के अन्तर्गत जयपुर अस्पताल में 53 गायें, 7 कुत्ते, 4 बिल्ली, चाकसू में 223 गायें, 52 भेड़–बकरी, 17 कुत्ते, 1 भैंस एवं 2 पाड़े कुल संख्या 359 पशु देखरेख में हैं। दोनों स्थानों का प्रतिमाह व्यय 75000/– रुपये है जबकि दूध, गोबर आदि से आय 26000 रुपये प्रतिमाह है। शेष राशि 49000/– रुपये सहायता द्वारा प्राप्त की जाती है।– **पारसमल कुचेरिया, सहसचिव, घीवालों का रास्ता, दड़ा मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर–302003**

युवक परिषद्, चेन्नई द्वारा धार्मिक शिविर का आयोजन एवं परीक्षा-केन्द्रों का विस्तार

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के अंतर्गत होने वाली धार्मिक परीक्षा की तैयारी के लिये परीक्षार्थी भाई–बहनों के पूर्वाभ्यास हेतु 21.7. 2002 को श्री बादलचन्द सायरचन्द चोरड़िया जैन विद्यालय में धार्मिक प्रशिक्षण शिविर श्री जैन रत्न युवक परिषद् चेन्नई के संचालन में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री श्री बस्तीमल जी चोरड़िया व अन्य श्रावकों के सहयोग के साथ सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। शिविर में 270 भाई–बहनों को श्री हरकचन्द जी ओस्तवाल, श्री मनोहरराज जी कांकरिया, श्री चंपालालजी बोथरा, श्री महावीरचन्द जी तातेड़, श्री राजेन्द्र जी सांखला, श्रीमती शकुन्तला जी, श्रीमती मधुजी सुराणा, श्री कमलेश जी बोहरा, श्री ज्ञान जी बाघमार, श्री नवरतन जी कांकरिया, श्री महावीर जी ओस्तवाल, श्री अशोक जी कवाड़ ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

चेन्नई में हर वर्ष निरन्तर रूप से जनवरी व जुलाई माह के अंतिम रविवार को धार्मिक परीक्षाएं (विभिन्न कक्षाओं) श्री जैन रत्न युवक परिषद् के सुसंचालन में हो रही हैं। अपने स्थानीय स्तर पर अगर श्री संघ धार्मिक परीक्षा आयोजित करना चाहे तो बीस या बीस से अधिक भाई–बहन परीक्षार्थी तैयार हो तो परीक्षा केन्द्र खोलने का प्रावधान है। धार्मिक शिक्षण के लिये अध्यापक की व्यवस्था भी है। सभी श्री संघों से निवेदन है कि सहज रूप से होने वाले ज्ञान यज्ञ हेतु निम्नलिखित युवारत्नों से सम्पर्क करावें–सुरेश जी चोरड़िया, मोबाईल नं. 98410–28841, श्री राजेन्द्र जी सांखला, फोन नं. 5298485

राजस्थान में गुटखे पर रोक की तैयारी

जयपुर, 25 जुलाई 2002। राजस्थान की राज्य सरकार सभी तरह के गुटखे एवं तम्बाकू की बिक्री व खरीद पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए एक महीने के भीतर अध्यादेश लाने की तैयारी कर रही है। राज्य मन्त्रिमण्डल ने प्रदेश में गुटखे की खरीद व बिक्री पर रोक लगाने के लिए सिद्धान्ततः सहमति दे दी है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में 24 जुलाई को आयोजित बैठक इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रही। 25 जुलाई को स्वास्थ्य मंत्री माधोसिंह दीवान ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा गुटखें एवं तम्बाकू पर प्रतिबंध के लिए प्रस्तावित अध्यादेश के बिन्दुओं का अध्ययन करने हेतु महाराष्ट्र, गुजरात एवं उत्तरप्रदेश में दल भेजा जाएगा। महाराष्ट्र में गुटखा एवं तम्बाकु पर प्रतिबंध लागू हो गया है।

उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय का नाम "हेमचन्द्राचार्य विश्वविद्यालय'

गुजरात राज्य की सरकार ने 26 जून 2002 को आयोजित मन्त्रिमण्डलीय बैठक में उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के नये नाम 'हेमचन्द्राचार्य विश्वविद्यालय, पाटन' पर अपनी सहमति व्यक्त कर दी है और उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय के अधिनियम 1986 में संशोधन की स्वीकृति दे दी

है। 12वीं शती में पाटन नगर आचार्य हेमचन्द्र का मुख्य विचरण स्थल रहा है।

चॉकलेट में हानिकारक तत्त्व

अमेरिकन एनविरनमेण्टल सेफ्टी इंस्टीट्यूट केलिफोर्निया ने लॉस एंजिल्स स्थित सुपीरियर कोर्ट में केस दायर किया है कि नेस्ले, क्राफ्ट फूड्स, रोकी मान्टन, सी कैण्डी जैसी कई कम्पनियों की चॉकलेट में सीसा और केडियम जैसे हानिकारक तत्त्वों का प्रयोग अनुमत मात्रा से अधिक किया जा रहा है जो बच्चों के मानसिक विकास एवं सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है।

गुटखा उत्पादन पर रोक हेतु उच्चतम न्यायालय में अपील

उत्तरप्रदेश की संस्था स्कोप (Society for cancer in oral cavity prevention through education) ने उच्चतम न्यायालय में देश में गुटखा उत्पादन पर पूर्ण रोक हेतु अपील दायर की है। गुटखा सेवन मुख के कैंसर का प्रमुख कारण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में 58 लाख लोग मुख के कैंसर से पीड़ित हैं। कुछ राज्यों ने गुटखे की बिक्री पर रोक लगाई है, किन्तु इसका उत्पादन जारी रहा तो यह रोक इतनी प्रभावी नहीं हो सकेगी।

भोपाल में छात्रावास

श्री ओसवाल स्थानकवासी जैन ट्रस्ट द्वारा नव निर्मित छात्रावास में छात्रों के रहने की सुन्दर व्यवस्था है। इस छात्रावास में बाहर से आकर भोपाल में स्नातकोत्तर, मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि की शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा। आवेदन–पत्र हेतु सम्पर्क सूत्र– **डॉ. चैनसिंह संकलेचा, अध्यक्ष, 85,मारवाड़ी रोड़ चौक, भोपाल–462003, फोन 545847।** छात्रावास का पता– **श्री महावीर जैन छात्रावास, 98, मालवीय नगर, भोपाल–462003**

सिंगापुर में धार्मिक-शिक्षण

सिंगापुर का जैन धार्मिक समाज बच्चों में धार्मिक संस्कार एवं शिक्षण के लिए प्रयासरत है। प्रति रविवार व्याख्यान, संगोष्ठी, सत्संग आदि का आयोजन किया जाता है। यहां सभी जैन सम्प्रदाय मिलकर कार्य करते हैं। श्री नगीन भाई दोशी अग्रणी कार्यकर्ता हैं। श्री पी.एल. जैन, जोधपुर एवं श्री ए.के. जैन ने अहिंसा फाउण्डेशन का प्रतिनिधित्व करते हुए सिंगापुर की गतिविधियों को प्रोत्साहित किया।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

1. कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, 61, नगरथ पेठ, बैंगलोर 560002, फोन नं. 2222443 / 3112653
2. श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ, इन्दौर। सम्पर्क सूत्र– 1. अशोक मण्डलिक, अशोक ड्रेसेज, बोडाना मार्केट, सराफा कॉर्नर, इन्दौर–452002, फोन नं. 432133 (ऑ.) 5151623 (घर) 2. मोहनलाल पीपाड़ा, महावीर भवन, 151, इमली बाजार, इन्दौर–452004, फोन नं. 417030

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर– श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा दिनांक 24 से 30 जून तक घोड़ों का चौक स्थानक में बालिकाओं व महिलाओं में धार्मिक–नैतिक ज्ञान में अभिवृद्धि हेतु शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का समय 11.30 से 3. 30 बजे तक रखा गया। इस शिविर में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार कक्षा एक से आठ तक प्रबुद्ध 15 अध्यापकों ने अध्यापन का कार्य कराया तथा 165 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

–श्रीमती सुनिता मेहता, अध्यक्षा

बैंगलोर– श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ द्वारा 23 जून 2002 को 'स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा' का आयोजन किया गया, जिसमें कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश एवं तमिलनाडु के 25 केन्द्रों पर लगभग 1000 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कक्षा 5 एवं 6 की परीक्षाएँ 30 जून 2002 को चिकपेट स्थानक में आयोजित की गई। – **शान्तिलाल बोहरा, संयोजक**

चेन्नई– श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई द्वारा श्री जैन संघ कालाड़ीपेट के तत्त्वावधान में सप्त दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों, महिलाओं, युवकों एवं बुजुर्गों ने भाग लिया।

– आर. नरेन्द्र कांकरिया, सचिव, युवक परिषद्

बधाई / चुनाव

नासिक– यहां पर आकाशवाणी की प्रवक्ता साधना चौहान ने विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. की प्रेरणा से आजीवन मांसाहार का त्याग किया। साधना चौहान ने अपने माता, पिता, भाई, दो बहिनों एवं जीजाजी को भी मांसाहार छोड़ने हेतु प्रेरणा की, जिससे समस्त परिवार शाकाहारी बन गया। साधना अपने कार्यालय के अन्य लोगों को भी मांसाहार त्याग की प्रेरणा करती है। महासती जी के प्रति उनका पूर्ण श्रद्धाभाव है।

चौथ का बरवाड़ा– यहां पर जून माह में 23 श्राविकाओं ने 12व्रत अंगीकार किए हैं– 1. श्रीमती चंचलदेवी जैन 2. श्रीमती सुजाता जैन, 3. श्रीमती पुष्पादेवी जैन, 4. श्रीमती रूकमणीदेवी जैन 5. श्रीमती दाखाबाई जैन 6. श्रीमती छोटादेवी जैन 7. श्रीमती इन्द्रादेवी जैन 8. श्रीमती फूलादेवी जैन 9. श्रीमती उर्मिलादेवी पारसमल जैन, 10.श्रीमती उर्मिला रामप्रसाद जी जैन 11. श्रीमती हरकीबाई जैन 12. श्रीमती नुरकाबाई जैन, 13. श्रीमती प्रेमबाई जैन 14. श्रीमती अनारदेवी जैन, 15. श्रीमती इन्द्रादेवी जैन, 16. श्रीमती सम्पतबाई नेमिचन्द जैन, 17. श्रीमती सम्पतबाई महावीर प्रसाद जैन, 18. श्रीमती रतनबाई जैन 19. श्रीमती विद्यादेवी जैन 20. श्रीमती धूलीदेवी जैन 21. श्रीमती मोनिका जैन 22. श्रीमती मधुबाला जैन 23. श्रीमती हर्ष देवी जैन।

बम्बोरा– 26 जून 2002 को साहित्यकार श्री दिलीप धींग को श्री महावीर युवा मंच संस्थान, उदयपुर द्वारा 'समाज गौरव' से सम्मानित किया गया। श्री धींग को

उनकी विशिष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए लगातार दूसरे वर्ष यह सम्मान मिला। सम्मान पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा के कर–कमलों से हस्तगत हुआ। – **कन्हैयालाल सुरेशचन्द्र**

कोटा– श्री मृणाल कुमार जी जैन, सुपुत्र श्री विजेन्द्र कुमार जी जैन एवं सुपौत्र श्री दुलीचन्द जैन निवासी 8, जनकपुरी, दाऊदपुर, अलवर का भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) मुम्बई में मेकेनिकल ब्रांच हेतु चयन हुआ है।

दुर्ग– 16 जून 2002 को आयोजित 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास, भाग–2' की

परीक्षा में 60 वर्ष के व्यक्तियों ने भी भाग लिया तो 9½ वर्ष की कु. जिज्ञासा जैन सुपुत्री श्री दिलीपकुमार जी श्रीश्रीमाल ने भी निष्ठा के साथ श्रम करके परीक्षा दी। सुश्री जिज्ञासा जैन बधाई की पात्र है। चि. मयंक कुमार लूनिया कवर्धा ने 13 वर्ष की उम्र में यह परीक्षा दी है।

बैंगलोर– श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, बैंगलोर के ट्रस्टियों की 8 जून 2002 को आवश्यक बैठक आयोजित की गई। इसमें श्री उत्सवलाल जी बागरेचा को अध्यक्ष, श्री दशरथमल जी चोरड़िया को उपाध्यक्ष, श्री नवरतनमल जी भंसाली को मंत्री, श्री महावीर चन्द जी गुलेच्छा को सहमन्त्री, श्री मीठालाल जी मकाणा को कोषाध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया। पूर्व पदाधिकारियों एवं अनुभवी महानुभावों की सलाहकार समिति गठित की गई जिसमें श्री पारसमल जी बागरेचा, श्री ज्ञानराज जी मेहता, श्री मोहनलाल जी भुरट, श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल एवं श्री भोपालचन्द जी पगारिया का मनोनयन किया गया। संयोजक श्री शांतिलाल जी बोहरा को सर्वानुमति से ऑनरेरी ट्रस्टी के रूप में मनोनीत किया गया।

श्रद्धांजलि

महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. की माताश्री का निधन

चेन्नई– धर्मपरायण सुश्राविका एवं वीरमाता श्रीमती चंचलकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री इन्दरचन्द जी मेहता, चेन्नई निवासी का 70 वर्ष की आयु में दिनांक 16.7.2002 को रात्रि 11.30 बजे अचानक हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। आपका सम्पूर्ण जीवन धर्म–ध्यान एवं साधना में व्यतीत हुआ। आपकी सांसारिक सुपुत्री महासती शांतिप्रभाजी म.सा. (आज्ञानुवर्ती आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं महासती श्री सायरकंवर जी म.सा. की नेश्राय में) पिछले 20 वर्ष से जिनशासन एवं रत्नवंशसम्प्रदाय की सुशोभा बढ़ा रही हैं। सुश्राविका श्रीमती चंचलकंवर जी के 40 वर्ष की वय से रात्रिभोज, जमीकंद एवं लीलोतरी एवं रात्रि–चौविहार का त्याग था। आप प्रतिदिन कई प्रत्याख्यान करती रहती थी। महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. की दीक्षा पर आपने चौथे व्रत के प्रत्याख्यान किए। पिछले 20 वर्ष से आप नंगे पांवों से विचरण करती थी। आपने

जीवन में अनेक तपस्याएँ (बेले, तेले, पांच, अठाइयां एवं नवपद ओली इत्यादि) की थी। आप संत–सतियों की एवं स्वधर्मी भाई–बहनों की सेवा सुश्रूषा में हमेशा अग्रणी रहती थी। आप अतिथि, दीन–दुखियों की तन, मन, धन से सेवा में तत्पर रहती थी। आप अपने पीछे सुपुत्र महेश , सुपौत्र विपुल एवं पुत्रियों (कांता–धर्मीचन्दजी कांकरिया, सरला गौतमचन्द जी मुथा, शशी पन्नालाल जी छल्लानी) आदि का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

अपनी मृत्यु के पश्चात् किसी भी तरह का आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों एवं शोक को न रखने की अपनी अंतिम इच्छा आपने अपने परिवार के समक्ष पहले ही रख दी थी। इस तरह अपनी अन्तिम भावना पूर्णतः धार्मिक रखते हुए आपने महाप्रयाण किया।

जोधपुर– दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी सुश्रावक श्री सायरमल जी रेड का दिनांक 5 जून

2002 को रात्रि में आकस्मिक देहावसान हो गया। श्रीमान रेड साहब श्रद्धा-भक्ति और सेवा-भावना से ओतप्रोत श्रावक थे। जोधपुर में प्रतिदिन सन्त-सतीवृन्द के दर्शन, वन्दन एवं मांगलिक श्रवण करना, सन्त-सतियों के विचरण- विहार में सेवा प्रदान करना, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा करना आपकी प्रमुख विशेषताएं थी।

आपके पिता श्रीमान् पारसमल जी रेड रत्नसंघ के प्रमुख श्रावक थे। उनके सुसंस्कार आपमें भी रहे हुए थे। आपकी परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं उनके आज्ञानुवर्ती सन्त एवं महासतियाँ जी के प्रति अटूट श्रद्धा एवं अगाध निष्ठा थी।

आप अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी (श्रीमती बसन्त देवी जी), दो सुपुत्रों (संजय जी रेड, राजकुमार जी रेड) तथा दो सुपुत्रियों आदि का परिवार छोड़ कर गये हैं। आपके निधन से संघ एवं समाज में एक सुयोग्य श्रावक की अपूरणीय क्षति हुई हैं। **–धर्मचन्द जैन**

उदयपुर– श्रीमती स्नेहलता जी मेहता धर्मपत्नी श्री हिम्मतसिंह जी मेहता का

60 वर्ष की आयु में संथारे के साथ 30 जून 2002 को निधन हो गया। आप धर्मपरायण, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं त्यागी–तपस्वी श्राविका थी। आपने 8,11 आदि तपस्याओं के साथ चार वर्षीतप किए। आप अपने पति श्री हिम्मतसिंह जी मेहता के साथ सन्त–सतियों की सेवा–सुश्रूषा में तत्पर रहती थी तथा सेवाकार्यों में उनका सहयोग करती थी। **–पार्श्वकुमार मेहता**

जयपुर–सुश्रावक श्री कुशलचन्द जी नवलखा का 29 जून 2002 को असामयिक देहावसान हो गया। आप प्रतिभासम्पन्न, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं श्रद्धानिष्ठ श्रावक थे। आपके पिता स्व. श्री सूरजमल जी नवलखा स्वतन्त्रता सेनानी थे।

आपकी माताश्री श्रीमती प्रेमबाई जी नवलखा वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं तथा प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व पर अपनी सेवाएँ देती हैं। आपका पूरा परिवार आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के प्रति श्रद्धाशील है।

पीपाड़ शहर– सुश्राविका श्रीमती कंवरीदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री सुजानमल जी मुथा का 81 वर्ष की आयु में 22 जून 2002 को स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन 25 सामायिक करती थी। आपने अनेक व्रत–नियम लेकर जीवन को संयमित बनाया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि संतों के प्रति आपकी श्रद्धा–भक्ति सराहनीय थी। सन्त–सतियों की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थी।

लासलगांव– सुश्राविका श्रीमती अनिता जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री संजय जी लोढ़ा का हृदयगति रूक जाने से 30 मई 2002 को 30 वर्ष की युवावय में स्वर्गवास हो गया। मरणोपरान्त आपकी भावनानुसार नेत्रदान किए गए। आपकी तपस्या की भावना रहती थी। आपने एक बार 9 दिवसीय तप किया। नासिक में लोढ़ा परिवार एक धार्मिक सुसंस्कारी परिवार है। यह परिवार अपने ग्राम आडगांव में जाकर भी सन्त–सतियों और दर्शनार्थियों की सेवा का लाभ लेता है। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आडगांव पधारने पर परिवार के सभी सदस्यों ने कोई न कोई नियम ग्रहण किया। कुछ सदस्यों ने सामायिक करना भी प्रारम्भ किया। स्व. अनिता जी के श्वसुर नासिक जैन श्रावक संघ के सह सचिव हैं।

पाली(मारवाड)–सुश्राविका श्रीमती चांदकंवर जी डागा उर्फ छीनीयाबाई

धर्मपत्नी स्व. श्री मिश्रीमल जी डागा का 90 वर्ष की आयु में 18 जून 2002 को स्वर्गवास हो गया। छोटी उम्र में ही आपके पति का वियोग हो गया था। आपने अपना जीवन धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप में लगाया। आप थोकड़ों की जानकार थीं तथा प्रतिदिन 7-8 सामायिक करती थीं। रात्रि में आपके चौविहार का त्याग था। आप श्री लादूरामजी मोहनलालजी डागा की काकीजी थी। श्री मोहनलाल जी एवं घर के अन्य पारिवारिक महानुभावों ने आपकी सेवा की।

–जेठमल श्रीश्रीमाल

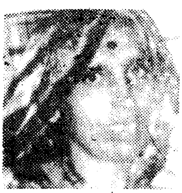

इगतपुरी– सौ. ललिताबाई गादिया का 17 मई 2002 को 53 वर्ष की वय में आकस्मिक निधन हो गया। आपकी धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी एवं स्वभाव से आप सरल थीं। आप प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएं देती थीं। आप अपने पीछे संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

–शैला छाजेड़

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 57 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गांव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहां जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 03 सितम्बर से 10 सितम्बर 2002 तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 31 जुलाई 2002 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम..............जिला.............प्रान्त..............
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम व पता..
4. संघ मंत्री का नाम व पता...
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन...............................
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहां धार्मिक पाठशाला चलती है?........................
8. क्या आपके यहां स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?..........
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव...................................
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 624891

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि आगामी पर्वाधिराज पर्युषण पर्व 3 सितम्बर से 10 सितम्बर 2002 तक मनाये जायेंगे। आप सभी स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गांव पधारने से आपकी धर्म-साधना सुचारू रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे।

अतः आपसे निवेदन है कि आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) फोन नं. 624891 के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

सुशीला बोहरा
संयोजक

रिखबचन्द मेहता
सचिव

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

8843 Shri Kishanlal Ji Nemikumar Ji Chordia, Bangalore(Karnataka)
8844 श्रीमती शकुन्तला जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
8884 श्री गोपाल जी कनकराज जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)

300/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक
(अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की योजना के अन्तर्गत)

8842 श्री शान्ताप्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
8845 श्रीमती ज्योति जी धर्मपत्नी श्री पुरुषोत्तम जी गुप्ता, बांरा (राज.)
8846 श्री कुलपति महोदय, जयनारायण व्यास विश्विद्यालय, जोधपुर (राज.)
8847 श्री पी.एम. जैन, जोधपुर (राज.)
8848 श्री पी..एम. जैन, नागपुर (महा.)
8849 श्रीमती प्रिया जी जैन, चेन्नई (तमि.)
8850 सम्बोधि धाम, जोधपुर (राज.)
8851 B.L. Institute of Indology, Delhi
8852 Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune (M.S.)
8853 केन्द्रीय पुस्तकालय, जोधपुर (राज.)
8854 L.D. Institute of Indology, Ahmedabad (Guj.)
8855 श्री कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली
8856 श्री ललित जी डी.एम. बूरड़ जी, जोधपुर (राज.)
8857 श्री राजेन्द्र जी शान्तिमल जी भंसाली,जोधपुर (राज.)
8858 श्री मनोज जी बाबूलाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
8859 श्री जितेन्द्रराज जी ऋषभराज जी मोहनोत, जोधपुर (राज.)
8860 श्री नीरज जी निर्मल जी सेठिया, जोधपुर (राज.)
8861 श्री राकेश जी प्रकाशमल जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8862 श्री अभयकुमार जी माणिकचन्द जी कोटेचा, बीड़ (महा.)
8863 श्री पारसमल जी कन्हैयालाल जी ओस्तवाल, बीड़ (महा.)
8864 श्री महावीरचन्द जी मदनलाल जी धोका, बीड़ (महा.)
8865 श्री नैनमल जी सोहनलाल जी जैन, जूड, जोधपुर (राज.)
8866 श्री बसन्तमल जी छगनमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
8867 प्रीति जी चौपड़ा, जोधपुर जोधपुर (राज.)
8868 डॉ. बी. आर. सिंघवी,, पोरबंदर (गुजरात)
8869 श्री पंकज जी जैन, नई दिल्ली
8870 श्री आलोक जी डोसी, नई दिल्ली
8871 श्री उत्तम जी कंवरलाल जी लूंकड़, इन्दौर (म.प्र.)
8872 श्री अशोक जी जवरीलाल जी चौपड़ा, जिनजिनयांला, जोधपुर (राज.)
8873 श्री महावीरचन्द जी शेषमल जी छाजेड़, सोइन्तरा, जोधपुर (राज.)
8874 श्री मीठालाल जी जबरचन्द जी संचेती, जूड, जोधपुर (राज.)
8875 श्री गोविन्दमल जी केवलमल जी गांग, जोधपुर (राज.)
8876 श्री मुकेश जी मनोहरमल जी पटवा, जोधपुर (राज.)

8877 श्री बसन्तमल जी छगनमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
8878 श्री सुनिल जी गोरधनमल जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8879 श्री दीपक जी पारसमल जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8880 श्री देवेन्द्र कुमार जी चांदमल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
8881 श्री महावीरप्रसाद जी चिरंजीलाल जी जैन, बनेठा, टोंक (राज.)
8882 श्री द्वारा अमित सिल्क मिल्स, सूरत (गुजरात)
8883 श्री अशोक कुमार जी जैन, पाली–मारवाड़(राज.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

2100/– श्री विरेन्द्र कुमार जी बाघमल जी सुराणा, मुम्बई, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के वर्मा नगर, अन्धेरी पूर्व, मुम्बई पधारने की खुशी में।

501/– श्री आनन्दरूपचन्द जी भण्डारी, चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, भाई श्री अजीतरूपचन्द जी भण्डारी की तृतीय पुण्यतिथि 8 जुलाई 2002 के उपलक्ष्य में।

501/– श्री तपस्वीलाल जी विरेन्द्र कुमार जी बाघमार, जबलपुर, अपने सुपुत्र श्री जितेश के जन्मदिन पर सप्रेम भेंट।

500/– श्री ज्ञानचन्द जी लादूराम जी मोहनलाल जी डागा, पाली, श्रीमती चांदकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री मिश्रीमल जी डागा का स्वर्गवास दिनांक 18.6.2002 को होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

500/– श्रीमती उर्मिला जी गोलेछा, जयपुर, बाबू सा. श्रीचन्दजी गोलेछा की द्वितीय पुण्यस्मृति पर जिनवाणी को भेंट।

251/– श्री सोलेश्वरनाथ जी मोदी, जोधपुर, धर्मपत्नी श्रीमती अकलकंवर जी मोदी के ग्यारह की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

200/– श्री फूलचन्द जी नाहर, चेन्नई, सुपुत्री सौ. कां. श्वेता (सुपौत्री स्व. श्री गुदड़मल जी नाहर) का शुभ विवाह चि. विवेक (सुपौत्र स्व. श्री देवीलाल जी सुपुत्र श्री विनोद जी बम्ब) के साथ दि. 15.6.2002 को सम्पन्न होने की खुशी में।

101/– श्री महेन्द्रपाल जी जैन, भरतपुर, धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर उनकी पुण्यस्मृति में।

101/– श्री हिम्मतसिंह जी, उदयपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता जी का 60 वर्ष की आयु में संथारे के साथ दिनांक 30.6.2002 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री दुलीचन्द जी जैन द्वारा श्री भंवरलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर (समिधी वाले), श्रीमती कलावती देवी जी जैन धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी जैन की पुण्यस्मृति में जिनवाणी को भेंट।

100/– श्री नौरतनमल जी अनीलकुमार जी गांग, जोधपुर, सुश्री हर्षा पुत्री अनीलकुमार जी के नवमें वर्ष में दिनांक 9 जुलाई 2002 को प्रवेश की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

100/– श्री अचलराज जी डागा, जोधपुर, अपनी सुपौत्री सुश्री दीपिका डागा सुपुत्री श्री जितेन्द्रराज जी डागा के तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में।

51/– श्री भागचन्द जी जैन, गंगापुर सिटी, पुत्र श्री रत्नेश कुमार जी जैन के जन्मदिवस पर जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

50/– श्री पदम जी एवं श्रीमती पी. मंजु कोठारी जी, चेन्नई, अपनी सुपुत्री के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, बजरिया को प्राप्त साभार

251/– श्री लक्ष्मीनारायण जी जैन, सुमेरगंजमण्डी, सुपुत्र की शादी में स्वाध्याय संघ को सहायतार्थ।

251/– श्री डिग्गीप्रसाद जी, महावीर प्रसाद जी जैन, करेला वाले, सवाईमाधोपुर, माताजी की पुण्यस्मृति में।

251/– श्री गोकुलचन्द जी, कमलेश कुमार जी समीदी वाले,आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर सुपुत्र की शादी के उपलक्ष्य में।

251/– श्री मोहनलाल जी ताराचन्द जी शाह, सवाईमाधोपुर, चि. प्रकाश के शुभ विवाहोपलक्ष्य में।

251/– श्री मोतीलाल जी हनुमान प्रसाद जी जैन, प्रेम मन्दिर, सवाईमाधोपुर चि. जितेन्द्र के विवाहोपलक्ष्य में।

201/– श्री कपूरचन्द जी, योगेशकुमार जी पचाला, जिला– टोंक, चि. चन्द्रशेखर के विवाह के उपलक्ष्य में।

101/– श्री दिनेशदयाल जी जैन अध्यापक फलौदीक्वारी, सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में।

101/– श्री मोहनलाल जी, ताराचन्द जी शाह, सवाईमाधोपुर, श्री ताराचन्द के सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में।

101/– श्री पारसचन्द जी, मुकेशकुमार जी जैन, अलीगढ़, विवाहोपलक्ष्य में।

101/– श्री चौथमल शान्तिलाल जी पाटोली वाले निवासी अलीगढ़, स्व. श्री शोभागमल जी जैन की पुण्यस्मृति में स्वाध्याय संघ को भेंट।

मैं नहीं, मेरा नहीं

श्री जवाहरलाल बाघमार

मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह धन किसी का है दिया।।1।।
देने वाले ने दिया, वह भी दिया किस शान से।
"मेरा है" यह लेने वाला, कह उठा अभिमान से।।
"मैं मेरा" यह कहने वाला, मन किसी का है दिया।
मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।।2।।
जो मिला है वह हमेशा, पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जायें यह कोई राज कह सकता नहीं।।
जिंदगानी का खिला मधुवन किसी का है दिया
मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।।3।।
जग की सेवा खोज अपनी प्रीति उनसे कीजिये।
जिन्दगी का राज है, यह जानकर जी लीजिये।।
साधना की राह पर, साधन किसी का है दिया।
मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।।4।।

–क्षेत्रीय प्रधान, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु सम्भाग,चेन्नई–79

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्ता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

JAI MAHAVEER JAI GURU HASTI

With Best Compliments From :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE
CHENNAI-600 056
PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET,
POONAMALLEE
CHENNAI-600 056

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company With Fraternity Feel, Holding Hands With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

☆ Bangalore ☆ Coimbatore ☆ Ernakulam ☆
☆ Kollidam ☆ New Delhi ☆

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

"आचार्य श्री हस्ती"

With Best Compliments From :

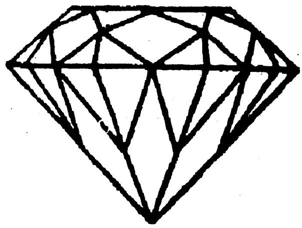

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

कलात्मक गहनोंकी सुवर्ण सृष्टी...
आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !
सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...
A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854
राजमल लखीचंद TM
ज्वेलर्स
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३
All major credit cards accepted...
GRACE

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

Home next to everything you need.
And far from everything you don't.

KALPATARU HABITAT
DR. S.S. RAO ROAD, PAREL

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

KALPATARU RESIDENCY
OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

KARMA KSHETRA
NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 4102.

TRITON/2002/KCL/096

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021.
Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।